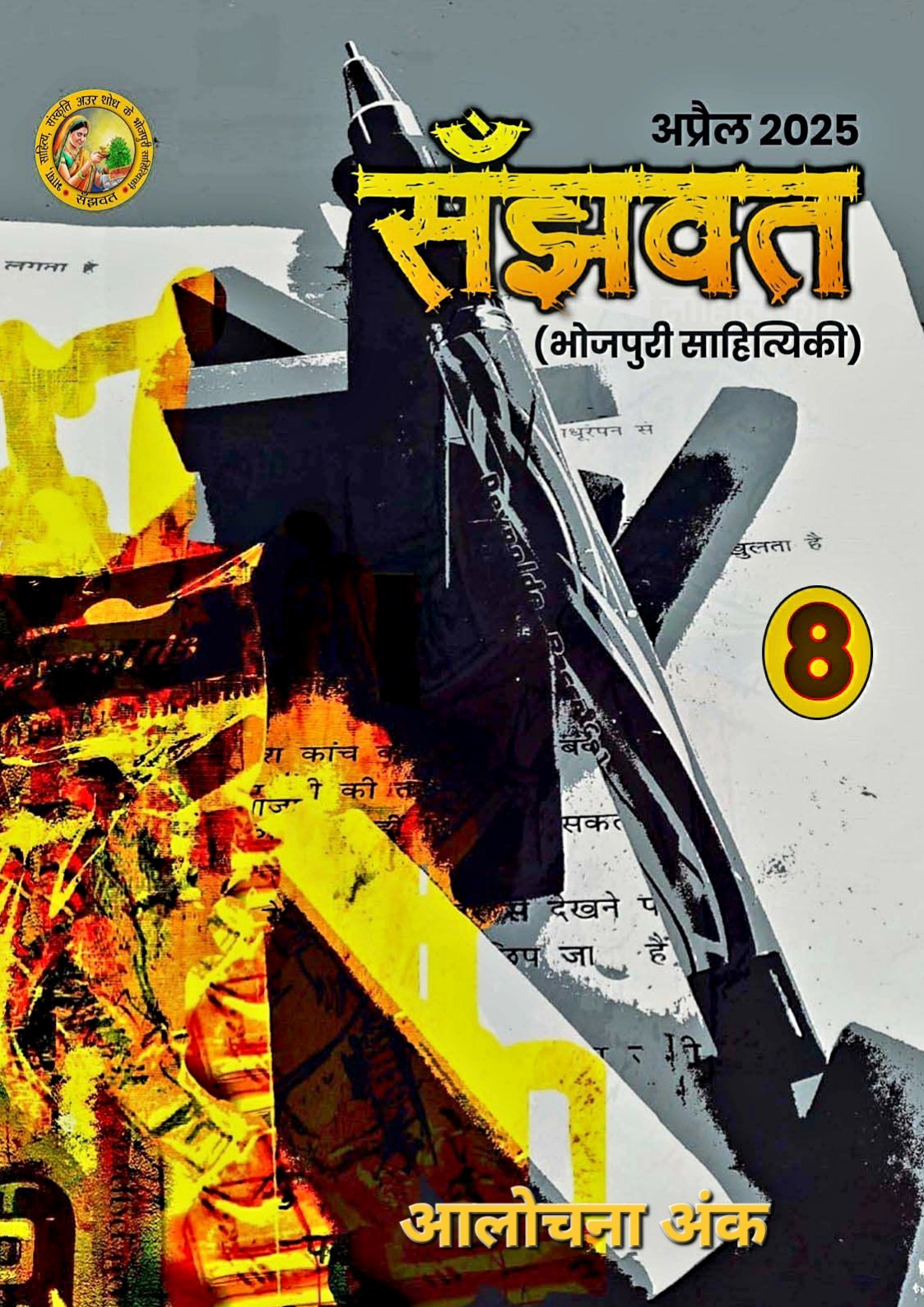

अप्रैल 2025

सँझवत

(भोजपुरी साहित्यिकी)

8

आलोचना अंक

आरोग्य चिकित्सालय आयुर्वेद सेवा आश्रम

बड़कागांव मानसिंह पट्टी, बक्सर (बिहार)

• कमर दर्द	• घुटनों में दर्द	• सिर दर्द	• डिप्रेशन
• साइटिका	• घुटनों का गैप	• एलर्जी	• माईग्रेन(सिर दर्द)
• स्लिपडिस्क	• गठिया	• साइनस	• अनिद्रा
• कम्प्रेशन	• पैर दर्द	• स्किन ग्लो	• मानसिक शांति
• पैरों मे झुनझुनाहट	• घुटनों मे सूजन	• सर्वाइकल(गर्दन दर्द)	• मेघाशक्ति
		• अस्थमा–दमा	• बालों का झड़ना

संपर्क :–980/968017, 963/856979

कहीं आपको भी तो ऐसी समस्या नहीं है ? अगर है तो संपर्क करें।
आरोग्य चिकित्सालय, आयुर्वेद आश्रम (1977 से सेवारत)

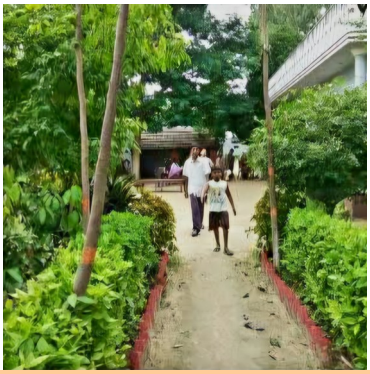

सँझवत- 8 में

संपादकीय
जवन सचमुच अनुभव करीं, ऊहे लिखीं, बनावटी ना/2

हमार पसंदीदा किताब
बेटा के नइहर में घर के गूर - भगवती प्रसाद द्विवेदी/11

साक्षात्कार
डॉ. ब्रजभूषण मिश्र से डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के बातचीत/15

आकलन
भोजपुरी साहित्य में व्यावहारिक समीक्षा : स्थिति आउर संभावना- डॉ. नंदकिशोर तिवारी/17
समीक्षा का आङन में भोजपुरी के पइसार आ स्थिति- कन्हैया सिंह 'सदय'/21
वंदनीय विद्यार्थी जी के भोजपुरी साहित्य साधना- प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह 'जय'/25
गुमनाम कवि शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी'- डॉ. दिवाकर पांडेय/28

पुस्तक समीक्षा
हास्य-व्यंग्य में भोजपुरी - धनंजय कटकैया/14
भोजपुरी उपन्यास के त्रिबेनी- डॉ. अर्जुन तिवारी/32
मौजूदा समाज के अल्ट्रासाउंड - भगवती प्रसाद द्विवेदी/35
खरकत जमीन आ बजरत आसमान के पीड़ा में पइठल कविता- डॉ. सुनील कुमार पाठक/38
अइसन निबंध भोजपुरी में का, हिंदियो में दूलम बा- वंदना कुमारी/42
संवेदना के भित्ति पर मूल्यबोध के चित्र : भिहिलात बताशा जइसन – डॉ. शारदा पाण्डेय/44
भोजपुरी में आइल सेसर महाकाव्य- डॉ. अरुण मोहन 'भारवि'/49
भोजपुरी कविता के विकास-यात्रा के पड़ताल करे वाला ग्रंथ 'भोजपुरी कविता के इतिहास'- विष्णुदेव तिवारी/51
लोक आ समकाल का बीचे सेतुबद्धता- भगवती प्रसाद द्विवेदी/55
गोपी गीत में समकालीन युगबोध- दिनेश पांडेय/61
देहाती जी के 'रावन के पाती'- शंकर मुनि राय 'गड़बड़'/66
साहित्य आ संगीत खातिर एगो अनुपम उपहार- रामेंद्र मिश्र/68
यथार्थ के धरातल पर बुनल कहानियन के संग्रह- डॉ० उमेश कुमार पाठक 'रवि'/70
'यादगार' यादगार किताब बनि के रही- पंकज तिवारी/73
दीप शलभ : एकतरफा प्यार के प्रबंध काव्य- दीप कुमार 'दीप'/76
भोजपुरी के विश्वकोश पंडित गणेश चौबे : एगो बहुमूल्य कृति- सीमा मिश्र/78
समाज का विसंगतियन प पारखी नजर- पं० मिथिलेश चतुर्वेदी उर्फ देहाती पंडित /80

समीक्षात्मक टिप्पणी
पुस्तक : नीक-जबून/समीक्षक – 1. रामदेव शुक्ल 2. सूर्यदेव पाठक 'पराग'/58

किताबि : एक नजर में
बतकूचन- सौरभ पाण्डेय/37 जरूर कोई बात बा- महेश ठाकुर 'चकोर'/72
भोजपुरी साहित्य : परम्परा आ परख- डॉ. ब्रजभूषण मिश्र/57 सुनगुन- दिनेश पांडेय/69
हमार गाँव- चंद्रेश्वर/10 भोजपुरी कविता : रुचि आ रचाव- सुनील कुमार पाठक/79

स्तंभ
1. थाती : ई प्रकाशित होइके भोजपुरी जगत में सर्वप्रिय और उजागिर होई- फिराक गोरखपुरी/9
2. सोस्ती सिरी पत्री लिखी.../6

संपादकीय

जवन सचमुच अनुभव करीं, ऊहे लिखीं, बनावटी ना!

"भोजपुरी में पूर्णकालिक आलोचक के नितान्त अभाव बा। आलोचना के नाँव पर पत्र-पत्रिकन आ किताबन के मार्फत जवन किछु देखे-पढ़ेके मिलि रहल बा, ओमें ज्यादातर तिल के ताड़ आ राई के पहाड़ बतावल गइल बा। आलोचना के नाँव पर नेह-नाता निभावत कतहीं अधकचरा रचनाकार के पीठि ठोकल गइल बा, त कतहीं इतिहास के नजरअन्दाज करत कवनो अदना कृति के 'भूतो न भविष्यति' के तगमा दिआइल बा। अइसना तथाकथित आलोचक के व्यक्तिपरक कुकृत्य खातिर समय कबो माफ ना करी।

जरूरत एह बात के बा कि आलोचना व्यक्तिपरक ना होके रचनापरक होखे। जब समीक्षा कइल जा रहल बा, त ओह समीक्षा के तथ्यपरक आ संतुलित होखे के चाहीं । तारीफ का सँगें खामियन के उजागरो कइल समीक्षक के दायित्व होला। आलोचना अइसन होखे कि संभावना के दुआरो खुले आ रचना के मूल्यांकनपरक आकलनो होखे।" (रचना आ आलोचना, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, अक्टूबर-मार्च, 2021)

आलोचना पर भगवती प्रसाद द्विवेदी के ई निष्कर्ष वाक्य अब तक के भोजपुरी आलोचना के स्थिति आ आलोचना के नाम पर हो रहल खेल के परत दर परत खोलता।

भोजपुरी आलोचना में 'अब तक का कुछ भइल बा' से अब ज्यादा महत्त्वपूर्ण बा कि 'अब आगे का कुछ कइल जाए के चाहीं'। हमरा खयाल से जवना लेखक के ई विधा प्रिय बा, उनका सोशल साइट पर आ व्यक्तिगत रूप से भी आपन रुचि जाहिर करे के चाहीं ताकि उनका पास नया आ पुरान किताबि के हार्ड आ सॉफ्ट कॉपी पहुँचो। लेखक के जवन किताबि ढेर प्रभावित करे ओकर चुनाव कइके ओहके फेरु पढ़ल जाउ आ अपना आलोचना के आकार दिहल जाउ।

कवनो वस्तु भा कृति के सम्यक् व्याख्या आ ओकर मूल्यांकन आदि कइल आलोचना कहाला- आ समन्तात् लोचनम् अवलोकनम् इति आलोचनम्, स्त्रियां आलोचना। समीक्षा भी लगभग ओही अर्थ में बा– सम्यक् ईक्षा या ईक्षणम्। कवनो वस्तु, रचना भा विषय का संबंध में सम्यक् ज्ञान प्राप्त कइल, प्रत्येक तत्त्व के विवेचन कइल समीक्षा ह। साहित्य का विविध रूपन के अपने दर्शन कइला का बाद दोसरा खातिर देखे लाएक बनावल समीक्षक के कर्म हटे। कुछ विद्वान आलोचना (चारों ओर से देखल) आ समीक्षा (सम्यक् दृष्टि से ज्ञान प्राप्त कइल) में भी अंतर बतवले बाड़े आ समीक्षा के अधिक व्यापक रूप प्रदान कइले बाड़े, बाकिर साँच पूछीं त व्यावहारिक रूप में आलोचना आ समीक्षा- दूनों के प्रयोग एके अर्थ में होला। भारत में राजशेखर

अपना काव्य-मीमांसा में साहित्य-समीक्षा के सूत्रपात कइले रहलन, जवना के औचित्यवादी लोग व्यावहारिक रूप प्रदान कइले रहलन।

हिंदी आलोचना के वास्तविक शुरुआत आनंदकादंबिनी पत्रिका (1882) में बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' कइले रहन। ऊ जहाँ लाला श्रीनिवासदास रचित 'संयोगिता स्वयंबर' में नाट्य दोष देखवले ओहिजे गदाधर सिंह अनूदित 'वंग विजेता' में भाषा संबंधी दोष देखाके आलोचना कइले। फेरु त एही तरह के आलोचना ओह घरी का पत्र-पत्रिकन में आवे लागल आ दोसे देखला आ गलती निकलला के मोटामोटी आलोचना मानि लिहल गइल। गुण-दोष- दूनों का विवेचन के पहिल रूप महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'हिंदी कालिदास की समालोचना' में भलहीं मिलत बाटे बाकिर ओकरा बादो दोष-दर्शन का प्रवृत्ति में कमी ना आइल। 1896 में गंगाप्रसाद अग्निहोत्री के 'समालोचना' पुस्तक का प्रकाशन अउर 1897 में नागरीप्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन से आलोचना सही अर्थ में कइल जाए लागल बाकिर ओकरा खातिर धीरे-धीरे एगो नया शब्द 'समालोचना' भी प्रतिष्ठित हो गइल। बहरहाल, कहे के मतलब एकहीं बा कि आलोचना, समालोचना आ समीक्षा- तीनों के प्रयोग एके अर्थ में होला। आलोचना के प्रयोग गुण-दोष का विवेचन से लेके सौंदर्य विज्ञान तक का अर्थ में होला।

ईमानदारी जरूरी बा

रउआँ कतनो लिखीं, जो केहूँ का मोह में, चमचई में भा केहू पर विद्वेष से लेखन कर रहल बानी त ईहो मानि के चलीं कि राउर आलोचना दीर्घजीवी ना होई, एगो समय आई जब ओकरा के नकार दिहल जाई। एहसे ईमानदारी जरूरी बा। रउआँ अपना के जहाँ ईमानदार मानतानी, ओहिजे लेखन करीं। आलोचना के जाति, धरम आ वर्ग में मति बाँटीं। आलोचना के आँखि नू सिकोरेवाली आँखि ह नू गिड़ोरेवाली आँखि। ई आँखि भरि आँखि देखेवाली आँखि ह। एहमें जो चश्मा लगबो करेला त देखे के क्षमता बढ़ावे खातिर, एहिजा घाम वाला भा रंग-बिरंगी चश्मा काम ना आवे।

व्यक्ति विशेष के आलोचना के विषय बनवला के मतलब खाली टेबुले वर्क ना, फील्डो वर्क होखे के चाहीं। ओह लेखक का पारिवारिक से सामाजिक, राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि अउर चेतना से भी सहज रूप में परिचित होखे के परी, उपरे-ऊपर वाला परिचय आलोचना के पंछूछुर बना दी। अइसना में ओकर आपन मंतव्य किताब का कवर के फ्लैप लेखा हो जाई, जवन कुछ समय के बितला का बाद किताबि से फाटि-फूटि के अपने निकल जाला।

अपना ऊपर अपना कुछ लोगन से भा पइसा देके लिखवावल हर भाषा में कमोबेस मिली, बाकिर भोजपुरी में आ ऊहो सुरुआते में एह तरह के अउलई खतरनाक बा। ई जो ना रुकल त भोजपुरी खातिर बिल्कुल ठीक ना होई। विश्वविद्यालयन के भी भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण साबित होई। जो शोध के औपचारिकता से तनी और आगे विद्यार्थियन के रुचि के विषय बनावे के कोशिश कइल जाई त भोजपुरी आलोचना धीरे-धीरे अपने आपे सहज रूप में राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अगिला पाँति में गिनाए लागी।

आलोचना खातिर रामचंद्र शुक्ल आ हजारी प्रसाद द्विवेदी त बनहीं के परी, तबे जायसी आ कबीर के उपरियावल जा सकता। बाकिर रचनाकार जो संपर्क में होखे

भा रहल होखे त आलोचना खातिर रामविलास शर्मा भी बने के परी तबे निराला के वास्तविक रूप पाठक का सोझा आई।

सोशल साइट के एगो फायदा त जरूर मिलल कि भोजपुरियो लेखक के कमी नइखे लउकत। जरूरत बा सभके सँकोरे के, सँवारे के, फेरु त लिखाते रही, पढ़ाते रही भोजपुरी। ऊर्जा के कमी नइखे, अतना त बुझाता, अब अग्रणी लोग के जिम्मेदारी बढ़ल बा। खाली अपना खातिर लिखला से आगे निकलि के ऊर्जावान नवांकुर लोगन के प्रेरित, प्रशिक्षित आ प्रमोट कइल जाउ, तबे रचना के थाक लागी आ थाहो लागी।

अंत में अतने आग्रह बा कि जवन सचमुच अनुभव करीं, ऊहे लिखीं। गुट आ वाद से निरपेक्ष होके ईमानदारी से सोचीं आ ईमानदारी से लिखीं, तबहिंए आलोचना मूल्यवान बनी।

ई अंक

एगो लंबा समय का बाद ई अंक आ रहल बा। असल में पटना अइला का बाद नौकरी, विशेष गृह-कार्य आ स्थायी रूप से शिफ्ट होखे के काम में एतना अझुराए के परल कि कुछ छिटपुट काम के छोड़ि दीं त लेखन-संपादन से दूरी बनत चलि गइल। अब जाके तनी सवकास मिलल हा त फेरु से पत्रिका निकाले वाला काम शुरू कइलीं हा।

एह अंक के अधिकांश सामग्री कंप्यूटर में पहिले से सुरक्षित रहे, कंप्यूटर में खराबी आ गइला का कारन बहुत कठिनाई आइल। दुबारा काम बढ़ि गइल। जतना हो पावल, सामग्री रिकभर भइल। एह स्थिति में जो केहूँ के भेजल समीक्षा छूटि गइल होई त हम माफी चाहबि आ ईहो चाहबि कि एक बार अउर ओह सामग्री के भेंजल जाई ताकि अगिला अंक में ओकर उपयोग कइल जा सके।

एह अंक में भोजपुरी आलोचना पर आकलन खंड में डॉ. नंदकिशोर तिवारी आ श्री कन्हैया सिंह 'सदय' के दू गो विशेष आ महत्त्वपूर्ण लेख दिहल जा रहल बा। एकरा अलावे व्यक्तिनिष्ठ आलोचना पर डॉ. जयकांत सिंह 'जय' आ डॉ. दिवाकर पांडेय के लेख भी आकलन खंड में शामिल कइल गइल बा। एकरा अलावे पत्रिका के कलेवर का सीमा में अधिक से अधिक जतना हो पावल, पुस्तक समीक्षा राखल गइल बा। आपन प्रतिक्रिया जरूर दिहल जाई, कम से कम अंक का कमी से संबंधित त जरूर ताकि अगिला अंक के अउर नीमन बनावल जा सको।

भाषा प्रकरण

एह अंक में प्रस्ताव का रूप में कुछ नइखीं दे रहल, अगिला अंक से ऊ कंटिनिऊ हो जाई। तब तक निहोरा बा कि जो बलाघात के स्थिति ना बने त कईल, गईल, भईल, नईखे लिखल छोड़ल जाउ आ ओकरा जगहा कइल, गइल, भइल, नइखे के उपयोग कइल जाउ। एही तरे अनुस्वार देके चंद्रबिंदु से दुसमनी जनि निभावलजाउ। सँझवत में अगिला अंक से एह दिसाईं अउर सावधानी बरतल जाई। हिंदी में भलहीं थोड़ा-बहुत चलि जाता बाकिर भोजपुरी में नुक्ता के प्रयोग अस्वाभाविक बाटे, ओकरा से भरसक बाँचल जाउ। सँझवत में नुक्ता के प्रयोग वर्जित रही। एगो अउर आग्रह बाटे। भोजपुरी में ङ के सस्वर प्रयोग स्वाभाविक रूप से होला, जइसे- आङन, मङनी, अङना

आदि। ई पहिलहूँ हम लिखि चुकल बानी। ई भोजपुरी खातिर वरदान बाटे, हिंदी का भागि में नइखे। एहसे अपना थाती के सम्मान कइल जाउ आ ओहके बँचावल जाउ।

अगिला अंक

*अगिला अंक **डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी का व्यक्तित्व आ कर्तृत्व** पर केंद्रित रही। लेखक सभे से निहोरा बा कि 15 जून तक आपन टाइप कइल रचना पत्रिका का ईमेल आइडी sampadaksanjhavat@gmail.com पर जरूर भेंजि दिहल जाउ ताकि समय पर पत्रिका प्रस्तुत कइल जा सके। हाथ से लिखल, रचना के फोटो भा पीडीएफ पर कवनो विचार ना कइल जाई। एगो अउर बात स्पष्ट कइ दिहल चाहबि कि लेखक के लेखकीय प्रति त जरूर दिहल जाई बाकिर ओहके डाक से भेंजल संभव नइखे, एहसे लेखक के अपनहीं आके भा अपना प्रतिनिधि का माध्यम से कार्यालय से पत्रिका प्राप्त करे के परी। असुविधा खातिर माफी चाहबि।*

जय भोजपुरी!
रामरक्षा मिश्र विमल

सँझवत

(भाषा,साहित्य,संस्कृति अउर शोध के भोजपुरी साहित्यिकी)

संपादक व प्रकाशक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

सह संपादक

सीमा मिश्र

आवरण सज्जा : पंकज तिवारी (दिल्ली)

अंक 8, अप्रैल 2025 मूल्य : 60 रुपया

संपर्क

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल, निकट- पिपरा प्राइमरी गवर्नमेंट स्कूल, देवनगर, पोल नं. 28

पो.- मनोहरपुर कछुआरा, पटना - 800030 मो. 98316498717

ई मेल : sampadaksanjhavat@gmail.com

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...

काव्य-कला के आग्रही, आचार्य रूप में आ कवि रूप में भोजपुरी में शुरुआती पुरहर योगदानकर्ता पंडित धरीक्षण मिश्र जी प बहुत सार तत्व वाला लेख पढ़ेके मिलल। जदि असहीं भोजपुरी के धरोहर व्यक्तित्वन पऽ गम्भीर लेख, भोजपुरी साहित्य आ व्याकरण प शोधपरक सामग्री, लोकगीतन पऽ शास्त्र आ लोक दुन्नो लेहाज से विचार करत लेख, समाज आ देश-काल से जुड़ल लेख, कविता, कहानी, उपन्यास छपत रही, तऽ 'सँझवत' हिंदी आ चाहें अउर कवनो भाषा के नामी पत्रिकन के पाँति में आ जाई! भोजपुरी में अइसन अउर पत्रिकन के निकलल बहुत जरूरी बा।

भोजपुरी के मान-सम्मान बढ़ावे वाले साहित्यकार अक्षयवर दीक्षित जी पर बहुत नीमन संस्मरण। 1947 में सीवान में हिंदी साहित्य सम्मेलन आ संगे-संगे भोजपुरी साहित्य सम्मेलन भइला के बारे में बहुते कम लोगन के जानकारी रहल होखी। ई जानकारी एही लेख से हमके मिलल हा। हम त संपादक जी से ईहे अरज करबि कि डॉ० ब्रज भूषण मिश्र जी से अउर संस्मरण लिखवाईं आ 'सँझवत' में छापत चलीं।

भोजपुरी के धरोहर गीति 'बटोहिया' के सिरजनहार रघुवीर नारायण जी के जिनिगी आ रचनन प आलेख बढ़िया लागल।

आदरणीय श्री रामरक्षा मिश्र विमल जी के लिखल संपादकीय पढ़नी। भोजपुरी के बढ़न्ती खातिर का-का कइले के जरूरत बा, एकरा बारे में खूब समझा-बुझाके एह संपादकीय में बतावल गइल बा। रउआँ ठीके लिखले बानी कि 'भोजपुरिया लोगन के जीवट के दाद देबे के परी'। भोजपुरी के प्रति लोगन के नजरिया बदलत बा।

पत्रिका बड़ा पसेवा से निकलेले, मुफुत में पढ़ले के कोशिश आ चाहत ठीक ना कहाई। ई कुल्हि तऽ माने लायक बा, बाकी रउआँ ई जनि कहीं कि भोजपुरिया जवान जागि जइहें त 'सँझवत' जइसन पत्रिकन के खास जरूरत ना रहि जाई। सँझवत जइसन पत्रिकन के हरमेशह जरूरत रही, नयका लोगन के राह देखावे खातिर भी जरूरत रही।

साँच कहीं त भोजपुरिया संस्कृति आ भोजपुरी साहित्य में बहुत कुछ नीमन बा आ बहुत कुछ बदलावो करत चले के बा, ओइसहीं जइसे माटी वाला घरवा के नरिया-थपुआ फेरात रहे मोका-मोका से; आ एहमें बहुत कुछ नयो जोड़े के बा, सिरजे के बा। तब नू अउर दमगर होई भोजपुरी आ भोजपुरिया संस्कृति! आठवीं अनुसूची से लगायत अगहूँ बड़हन जात्रा करेके बा!

शिव कुमार पराग, वाराणसी

बहुते मनभावन अंक निकलल बा। ज्ञान वर्धक आलेख। आलेख, अक्षयवर दीक्षित जी के बहुआयामी व्यक्तित्व आ कृतित्व प व्यापक प्रकाश डालत बा।

कन्हैया सिंह सदय , जमशेदपुर।

ई जानि के खुशी भइल कि भोजपुरी में बटोहिया के रचना एतना परसिद्ध भइल कि जुबान-जुबान से बटोहिया के गीत सुनाये लागल। मजा आ गइल पढ़के आ बिस्वास भी भइल कि रचना अगर असरदार बा त ओकर असर हमेशा सबके जेहन में रही।

पंकज तिवारी, दिल्ली।

संपादकीय मे व्यक्त चिंता स्वाभाविक बा। जातीयता के जतने मेटावे के कोशिश होत बा, ऊ ओतने बढ़ रहल बा। खाली टाइटिल मिला के जात परिवार बनावल जाए लागल बा। खाली परिवार आ जाति के लोग पर सोचल गइल रहित त दोसरा जाति के साहित्य सेवा से दुनिया परिचित ना होइत। ओछ मानसिकता काम कर रहल बा। भाषा के.मानकीकरण खातिर राउर चिंता वाजिब बा।

ब्रजभूषण मिश्र. मुजफ्फरपुर।

पत्रिका के बरिस 2 अंक 7 मिलल। मन बाग-बाग हो गइल। अंक छपाई, सफाई, सुघराई आ रचना चयन में अद्भुत आ बेजोड़ बनल बा। साँच कहल जाव त अंक के कलेवर देखके ई लागता कि ई पत्रिका ना बलुक कौनो संकलन भा किताब सामने बा। जहाँ तक रचना चयन के सवाल बा, लगभग सब रचना सुघर आ स्तरीय बाड़ी स। संपादकीय से लेके आलेख में राजीव उपाध्याय, डॉ ब्रज भूषण मिश्र, सौरभ पाण्डेय, श्याम बिहारी श्यामल, तारकेश्वर राय तारक, केशव मोहन पांडेय, आ रामनिहाल गुंजन के लेखन बड़ा ज्ञानवर्धक आ उपयोगी बा। आनंद संधिदूत, डॉ जयकांत सिंह 'जय' के कहानी, डॉ. भारवि के लघुकथा कहानी, डॉ. भारवि के लघुकथा रोचक बनल बा। निर्भय नीर के एकांकी के संगही विद्याशंकर विद्यार्थी, डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल आ अनीता शाह के गजल बेजोड़ बा। कवितन में सतीश प्रसाद सिन्हा, विजयानंद विजय, कन्हैया प्रसाद रसिक, संगीत सुभाष, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा पीयूष के संगहीं पत्रिका के सभ स्तंभ कमाल के बा। अंक बढ़िया बनल बा आ एकरा खातिर सम्पादक आ प्रधान सम्पादक के प्रयास के जतना सराहल जाए, कमे होई।

डॉ. अरुण मोहन 'भारवि', प्रधान संपादक, गधपूरना, बक्सर (बिहार)

'सँझवत',अक्टूबर-दिसंबर,20 मिलल। अंक हर बार जइसन बढ़िया निकलल बा। ई देख के अच्छा लागत बा कि तमाम तरह के प्रतिकूलता के बादो पत्रिका निकल रहल बिया आ बढ़िया निकल रहल बिया। एकरा खातिर समूचा टीम के हृदय से बधाई।

एह अंक के रचना-खंड बहुते समृद्ध बा । दुनों कहानी आ भारवि जी के लघुकथा में पठनीयता बा। जयकांत जी के कहानी के मास्टर साहब के माध्यम से समाज के वरीय नागरिक लोगिन के मनोविज्ञान के बढ़िया चित्रण भइल बा ; साथहिं एगो बहुत प्रासंगिक संदेश भी देल गइल बा। संधिदूत जी के कहानी में हीरालाल के विडम्बनापूर्ण त्रासद जीवन के कहानी बा जवना में शुरू से अंत तक उनकर संघर्ष आ पराजय के वर्णन बा। भारवि जी के लघुकथा शिल्प के लिहाज से त बहुत सुन्दर बिया बाकिर ओकरा संदेश से हम सहमत नइखीं। आखिर एगो लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के विरोध-प्रदर्शन पर कइसे रोक लगावल जा सकता बा ? नीरज नीर के एकांकी 'मोकदमा' के कथा के माध्यम से गाँवन के एगो कटु यथार्थ चित्रित भइल बा- भाई-भाई के लड़ा के अपना स्वार्थ के रोटी सेंके में माहिर लोगन के कारस्तानी के चित्रण। बाबाजी आ बाबू साहब के देख-सुन के गोदान के पंडित दातादीन आ झिंगुरी सिंह इयाद पड़े लागत बाड़न आ ओह लोग के बतकही के अंदाज से भिखारी ठाकुर के गबर घिचोर के पंच बढ़िया रचना बा।

कविता सब बढ़िया बाड़ी स।

स्व. सतीश जी, संगीत सुभाष जी आ विमल जी के रचनन के कवनो भाषा के साहित्य के समक्ष सिर उठा के राखल जा सकेला। गीता चौबे जी के रचना भी बढ़िया बा।

संपादकीय, रघुवीर नारायण जी पर लिखल राजीव उपाध्याय के लेख, कृष्णानंद कृष्ण जी पर गुंजन जी के स्मृत्यालेख, धरीक्षण मिश्र जी पर केशव मोहन पांडेय जी के लेख आ श्याम बिहारी श्यामल जी के भोजपुरी से संबंधित लेख, तारक जी के 'हमार गाँव' - सब स्तरीय रचना बाड़ी स।

अंत में संपादकीय पढ़ला के बाद मन में उठल एगो सवाल- जब शुद्धता आ एकरूपता के बात बा त फेर उनकरा-उनुकरा में आ उनका-उनुका में कवनो एगो के ही प्रयोग काहे ना सुनिश्चित कइल जाव ? जैसे हम 'रउआ' लिखी ले त अपने के ओकरा के 'रउआँ' कर दिहीं ले, हम 'संगे' लिखी ले त अपने के ओकरा के 'सङे' कर दिहीं ले ओइसहीं उनुकरा-उनकरा आ उनका-उनुका में से कवनो एगो के ही प्रयोग पत्रिका में कइल जाइत त ठीक रहीत। एही तरे श्यामल जी के लेख में कई जगह 'ए' के जगह पर 'ये' (ये घरी, एतने, येकर / येकरा, येकरे, येहिजो) के प्रयोग भइल बा। संपादक के ओकरा के शुद्ध त कइये देबे के चाहत रहे। असहीं ओहि लेख के पहिला पैराग्राफ बीच में भी आ गइल बा। लेख पढ़ला से भाई कृष्णानंद कृष्ण जी के दिवंगत भइला के सूचना नइखे मिलत जबकि दोसरा तरफ गुंजन जी के स्मृत्यालेख उहें (कृष्णानंद जी) पर केंद्रित बा। हमरा समझ से एह सब चीजन से बँचल जा सकत रहे।

डॉ. नीरज सिंह, कतिरा, आरा- 802301

एह अंक खातिर माफी चाहबि, समय आदि का अभाव से भी बेबस हो जाए के परेला। कोशिश रही कि आगामी अंकन से यथासंभव कमियन से पत्रिका के मुक्त रखल जाउ।

आग्रह बा कि बिना कवनो लाग-लपेट के अपना बहुमूल्य टिप्पणी से पत्रिका के जरूर समृद्ध कइल जाउ।

एगो अउर विशेष आग्रह बा कि भाषा संबंधी प्रस्तावन पर आपन विचार खुलि के दिहल जाउ, ताकि भविष्य में मानकीकरण का राहि में कम से समस्या के सामना करे के परे आ वर्तमान के राहि भी निर्द्वंद्व हो सके।

रामरक्षा मिश्र विमल

संपादक

फिराक गोरखपुरी

ई प्रकाशित होइके भोजपुरी जगत में सर्वप्रिय और उजागिर होई

समीक्ष्य कृति : अँजुरी भर मोती
लेखक : भोलानाथ गहमरी

भोजपुरी के बहुत मसहूर कवि श्री भोलानाथ गहमरी आपन कविता के नयी किताब 'अँजुरी भर मोती' पर हमसे कुछ लिखावे के लिए आइके मिललें। ई समझ के कि हमार घर अउर जन्मस्थान गोरखपुर हवे, गहमरी जी ठीके सोचलें कि भोजपुरी भाषा से हमके बहुत लगाव होई और सचमुच बाय। गहमरी जी के कई एक भोजपुरी गीत हम सुन चुकल बाटीं जेसे हम बहुत प्रभावित भइल हईं। हिन्दी में पहिले ब्रजभाषा,साहित्यिक और सुशिक्षित भाषा कई सौ बरिस तक मानल जात रहल। लेकिन जवन मिठास भोजपुरी भाषा में बाटे ऊ दुनिया के कवनो भाषा में नाहीं बाटे, एके नोट कर लीं। बड़ा अफसोस बाय कि भोजपुरी,साहित्यिक भाषा वाली हैसियत त अब तक नाहीं पाय सकल लेकिन बोली के रूप में भोजपुरी में एक सरलता, सरसता, संगीत, लोच अउर भोलापन देखाई देला जवन खड़ी बोली या अउरो बोली में नाहीं मिलत।

गहमरी जी के कवितन में एक नयी उपज,गजब के उर्वरता और नदी के कल-कल नाद के साथ बहाव औ रवानी बाय। उन कर कल्पना रंगा-रंग, बहुत नाजुक अउर मन के मोहे वाली हव। भोजपुरी में गहमरी जी के निरगुन त संत साहित्य से टक्कर लेवे वाली हई। 'कवने लुकइलू आहि रे बालम चिरई' के त खोंतवा में कवनो मिसाल नाहीं बाय। सिंगार औ बिरह के जरिये संतन के निरगुन त बहुत पढ़ले-सुनले बाटी लेकिन इन कर निरगुन सब से हट के हवे। 'गोरिया कवना घाटे दुइ-दुइ भरेलू गगरी' में दुइ-दुइ गगरी लिखले के अर्थ बड़े गहराई से समझे के पड़ी। कवन घाट,कवन गोरी,कवन गगरी भरेली,बड़े सादगी से पूछल गयल हव। एही तरे गहमरी जी कुछ चिन्तन और दर्शन के कविता लिखले बाटन। एक कविता एह किताब में छपल होई 'एक साँस झाँके खिड़की खोलि हवेली, गंध छितराबे जइसे चम्पा-चमेली'। भाई एह तरह के साहित्य निखालिस भोजपुरी में लिखये लगल हम के जानकारी नाहीं रहल। हम समझत हईं कि अउरो भोजपुरी के कवि लोगन अब अइसन ऊँची कविता लिखत होइ मगर जवन सामने बाय हम ओही के बारे में आपन खयाल जाहिर करत हईं।

गहमरी जी प्रकृति के भी गीत बहुत लिखले बाटन जवने में सिंगार के पुट दिहले से बड़ी खूबसूरती आ गइल बाटे। 'बदरा बोवे निरदइया रे दइया दरद हजार' में बड़ा चुभन बाय। गरमी के गीत में रामायण से प्रतीक दे करके गहमरी जी बड़ा नायाब बात लिखले बाटन जवन क्षेत्रीय भाषा में हम सुनले न रहलीं। इनके सिंगार के गीत में बड़ी सफाई बाय। गंदगी से दूर,मन के गुदरा देवे वाला भाव में बहुत पवित्रता हव। 'लाली

-लाली बिंदिया चुरावे मोरी निंदिया', 'भींजले अँचरा त भींजे हो', 'आधी-आधी रतिया के बोले कोइलरिया' जइसे गीतन के देखे से लागत बाय कि गहमरी जी के साहित्य साधना अपने में बेजोड़ बाय।

लोकभाषा में भोजपुरी अब बहुत आगे कदम बढ़ाये बाटे। 'अँजुरी भर मोती' किताब के रंग नक्सा औ छपाई देख के हम समझत हईं कि अबहिन एह तरह के कवनों किताब नाहीं होई या होई त कम होई। गहमरी जी से ईहो जानकारी मिलल कि भोजपुरी साहित्य अब बहुत धनी हो गइल हव। नाटक से लेकर उपन्यास अउर महाकाव्य भी लिखा चुकल बाय। खूब लिखीं सब, ई बड़ा सुभ लक्षण बाय। दुर्भाग्य जरूर हव कि हमें कुछ लिखे के तरफ़ ध्यान नाहीं गयल,औ अब का कहीं। हमके बड़ी खुसी होत बाय कि गहमरी जी हमें अपनी बोली में कुछ लिखे के मौका दिहलें।

गहमरी जी के भोजपुरी रचना बहुत नाम पा चुकल बाड़िस। आल इण्डिया रेडियो के केन्द्र द्वारा लाखों सुने वाले,उनका कवितन से बहुत प्रभावित हो चुकल बाड़ें। हम अब 84 बरिस के हो गइल बानीं। अब हमार साँस उखर चुकल बा, एही से हम रचि के कुछ लिख नइखीं सकत। एही मारे हम बस अतने कहि के खतम कइ देत बानीं एह बिस्वास के साथ कि ई प्रकाशित होइके भोजपुरी जगत में सर्वप्रिय और उजागिर होई। भोजपुरी के हर क्षण प्रणाम। (साभार)

भोलानाथ गहमरी

किताबि : एक नजर में

पुस्तक : हमार गाँव
लेखक : चंद्रेश्वर
प्रकाशक : रश्मि प्रकाशन, लखनऊ,
प्रकाशन वर्ष : 2020, मूल्य : 200 रुपया

'हमार गाँव' में लेखक चंद्रेश्वर अपना गाँव के बीतल दिन का इयादि करत लउकतारे। खेत-खरिहान, बाग-बगइचा, नदी-तलाब, परब-तेवहार, गीत -गवनई, खेल, घर-परिवार से गोतिया-रिश्तेदार तक सब कुछ के स्मृति एह किताब में मिली। सहज शैली में ई संस्मरण पढ़े लाएक बाड़े सन।

हमार पसंदीदा किताब

भगवती प्रसाद द्विवेदी

बेटा के नइहर में घर के गूर

आजु रोज कवनो-ना-कवनो भाषा मू रहल बिया, बाकिर भोजपुरी अपना लालित्य आ लोकसंवेदना के बदउलत लगातार जियतार बनल फइलल-पसरल जा रहल बिया। ओइसे त वाचिक परंपरा में एकर लोकसाहित्य हजारन बरिस से चरचा में रहल बा, बाकिर देश के आजादी का संगहीं एकरा निबंध-लेखन के समहुत भइल आ आचार्य महेन्द्र शास्त्री के 'पानी' शीर्षक से 'भोजपुरी' में छपल ललित निबंध एकरा उठान के सूचक बनल।ओह में पानी के बहाना से सेहत,सफाई, चिकित्सा, प्रदूषण पर बड़ा बेबाकी से सवाल उठावल गइल रहे। बाकिर आजुओ पानी के मोल कहां बूझल जाला। एकरा महातमे से निबंध के शुरुआत भइल रहे-'पानी के मोल ना समुझल जाला। ई ना रहित तब बुझाइत। पानी छुअला बिना कामो चली त पियला बिना खराई होखे लागी। कंठ सूखे लागी,जान जाए लागी। 'निबंध का आखिर में लालित्य से भरल पांती खास तौर से अखियान करे जोग बाड़ी स- 'भादो के दही कादो' मशहूर ह। कवि कालिदास के सबसे बढ़िया कविता 'मेघदूत' मेघ के ही दूत बनाके तैयार भइल। विश्व कवि रवि बाबू ओहीं ते राह ताकसु जैसे कामी अपना कामिनी के। पानी से तीर्थ,पानी से प्रतिष्ठा। पानी पर पोथा लिखा सकेला। पानी ना रहे त जिन्दगानी कवना काम के! जेकरा आँख में पानी ना, उहो कवनो आदमी ह?'

एह पानीदार निबंध का बाद भोजपुरी के पहिल निबंध-संग्रह आइल डॉ विवेकी राय के 'के कहल चुनरी रंगा ल' शीर्षक से, जवना में गँवई जिनिगी के जीवंत छटा देखते बनत रहे। रबी के फसिल कटइला पर बोझा ढोवत बनिहारिन के एगो दृश्य देखीं शीर्षक निबंध में-'राहे-राहे रासलीला, खेते-खेते वृन्दावन--ई फागुन के महीना,ई खेत,ई खरिहान,ई कटिया,ई धूप,ई बसंती चोली,ई गुलाबी चुनरी,मस्त चाल-अजी, धनिया से के कहल कि अब चुनरी रंगा ल!' गजब के लालित्य बा एह निबंध में। अइसन जनात बा जइसे सउँसे गाँव,खेत-खरिहान आउर उहवाँ के हलचल जियतार हो उठल होखे- 'अइसन जनात बा कि इहवें जमुना क किनारा बा,इहवें कन्हैया क बंशी बाजति बा। इहवें कुंज-गली क छेड़छाड़ होति बा। खेत में कृष्ण बाड़न, खेत में राधा। कहाँ से ई शोभा आइल? खेते में जिनिगी आ खेते में जवानी। बनिहारिन लोगन से के कहल कि बोझा माथ प उठाके जमुनापारी पाड़ी नियर माकत चल जा। के कहल कि चमक-चमक के,झमक-झमक के,उचकि-उचकि के,लपकि-लपकि के, देहि भाँजत, गेना नियर उछलत चउए पर चल जा!'

जवना उठान से भोजपुरी निबंध के नींव रखाइल, ओह के गौरव-स्तंभ बनावे में जवना विभूतियन के यादगार अवदान रहल, ओह कड़ी में एगो समर्पित नाँव बा पुन्नश्लोक अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी के। हालाँकि उहाँके मूलत: आ सुभावत: कवि रहनीं आ स्फुट काव्य,

खंडकाव्य, प्रबंधकाव्य, गीत, ग़ज़ल, बरवै वगैरह में उहाँके इतिहास रचले रहनीं। बाकिर इहो बात सोरहो आना साँच बुझात बा कि कवियो खातिर कसौटी के पैमाना गद्ये रहल बा- 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।' गद्य में त विद्यार्थी जी के सिरिजना बेजोड़ रहे। उहाँ के बतकहिओ अतना सरस,धाराप्रवाह,नानार्थक आउर अखियान करे जोग होत रहे कि सुननिहार लोग अभिभूत हो जात रहे। लोकचेतना जगावेवाला कालजयी रचनाकार भिखारी ठाकुर उहाँ के नस-नस आ साँस-साँस में रमल रहनीं। उहाँ के बतकहिए नियर जियतार आ वैचारिक पोढ़ता से लैस होत रहे उहाँके गद्य। 'डागा बाजि गइल' के कथाकार विद्यार्थी जी के अविस्मरणीय निबंध रहे 'बेटा के नइहर', जवन भोजपुरी निबंध संकलन 'भोजपुरी निबंध निकुंज' (संपादक : डॉ विवेकी राय, सिपाही सिंह श्रीमंत) में ससम्मान संकलित होके शोहरत पवले रहे। फेरु त पुस्तिको का रूप में ओकर प्रकाशन भइल रहे। आगा चलिके 1987 में निबंध-संग्रह 'घर के गूर' में कुल्हि नौ गो निबंध संग्रहीत कइल गइल, जवना में 'बेटा के नइहर' आ 'घर के गूर' शीर्षक ललित निबंधन का संगहीं 'भोजपुरी काहें खातिर', 'भोजपुरी भाव के रछपाल', 'भोजपुरी के हबेख : तुलसीदास का हाथे' नियर भाषा-साहित्य से जुड़ल विचारपरक निबंधो शामिल बाड़न स। 'अपनइती', 'खँड़हर बचाईं', 'जूझ जहालत से', 'नीनि नइखे परत' शीर्षक से छपल निबंधो चिंतन-लालित्य से लबरेज बाड़न स।

अपना निबंधन का बिसे में अविनाश जी के कहनाम रहे-'हम कउड़ी में कसीदा काटे के ना, अपना हाथ से मोटिया बीने के कोसिस कइले बानीं। मोटिया रूखर-आखर होला सही के, बाकी जाड़ा-पाला में कुछ काम के होखेला ओकरा जे गाँव-गिरान में जाँगर चलाके अनकर-आपन मुँह के आहार उपराजेला।'

'घर के गूर' शीर्षक विद्यार्थी जी मातृभाषा खातिर इस्तेमाल कइले बानीं। एह से जुड़ल एगो प्रसंगो के चरचा बा, जब भिखारी ठाकुर बंगाल के एगो जलसा में उहाँ के जन-जन में अपना मातृभाषा खातिर अजगुत नेह-छोह देखिके कहले रहनीं-

देखन के जलसा ललसा कर
मातृभाषा घर के गूर है।

तबे नू निबंधकार घर के गूर के बखान करत कहले बा- 'हं,त घर के गूर के माने -मतलब तनी पसन से बूझि लेबे के चाहीं। पर-पाहुन एक-प-एक दुआर प आ गइलन। बेरा-कुबेरा केहू राही-बटोही हकासल-पिआसल पहुँचल। ओह घरी पत-पानी रचनिहार घर के गूर से बढ़िके दोसर कुछ ना होखे। आटा,घीव, दूध,दही सभ का साथे मिलिके गूर से जवन परकार चाहीं, तेयार कइ सकींला। सोचीं सभे,बिना गूर के छूँछे पिसान कि घीव ईजति बचाई? दूधो-दही बेगर मीठा डलले सरबत बनी? सोगहग गूर के भेली आ भर लोटा टटके घींचल कुँइआँ का जलो से जवन कंठ जुड़ाँव होला तवन बरफ का सरबतो से ना। ओह में गूर जो अपना घर के उपराजल होखे त का पूछे के! घर के गूर खरचे में इचिको आहस ना लागे।' चिंतनशील रचनाकार विद्यार्थी जी घर के गूर के मातृभाषा से जोड़त साफ-साफ कहत बानीं-

'भले तनी खटतुरुस लागे, बाकी गूर चीनी से पवीतर आ सेहतमंद ह। ऊहे हाल मातृभाषा के बूझीं। अटपट चाहे सोझ बात में लइका-सेयान-बूढ़, निपढ़-पढ़निहार सभे जेकरा के हरदम हबेखल करे। ऊहे नू असली धन ह, जवना के

भँड़ार कबो ना खलिहाय,ना जेकरा के खरचला में कवनो आहसे होला।' भोजपुरी के अमरलत्ती-अस फइले-पसरे के आस-बिसवास का सँगें निबंध के समापन होत बा-'तथाकथित 'शिक्षित समुदाय' चाहे सहरी सभ्यता में सनाइल अपना संस्कृति के भोर डलनिहार लोगन के बस चलित त भोजपुरी साहित्य के सिरिजन ना होखे पाइत। भरोसा एके बा जे गाँव-गँवई का भाग का साथे भोजपुरियो के भाग एक-ना-एक दिन जागि के रही। कोटि-कोटि जगे का कंठ आ काम के सह पाके ई अमरलत्ती दिनो-दिन पसरते जाई।'

विद्यार्थी जी के निबंधन में भाव के अनूठापन मौजूद बा आ रस के परिपाक एह किसिम से होता कि पढ़निहार ओमें डूबि के सोचे बदे अलचार हो जात बा। एह माने में उहाँके निबंधन पर भारतेंदु हरिश्चंद्र के ई कथन सइ फीसद सही जनात बा-

जा में रस कछु होत है,
ताहि पढ़त सब कोय,
भाव अनूठो चाहिए,
भाषा काहू होय।

अइसने बेशकीमती भाव आ करुन रस में सनाइल निबंध बा- 'बेटा के नइहर',जवना में आजु के शहरी जिनिगी के कशमकश आ रोजी-रोटी खातिर शहर-दर-शहर छिछिआत परदेसी पूत के आँतर के पीर कचोटत रहि जात बा। अइसन कमासुत बेटा खातिर आपन गाँव नइहर बनि जात बा, बाकिर अइसन नइहर कि गाँव-गँवई के अपने लोग ओकरा खातिर बेगाना हो जात बा। निबंधकार के मन में बेरोजगारी के मुद्दो जरि जमवले बा। एगो बानगी देखीं-'कवनो ना कवनो तरे लइकी के वर त खोजि लिआता,बाकी लइका के नोकरी ढूँढ़त-ढूँढ़त छरपट छूटि जाता। क्षीरसागर के अनंत भगवान भलहीं थरिए में भेंटा जासु,बाकी चाकरी के चनरमा खातिर बेकार नवहिन के सउँसे अकास-पताल छाने के परता।' बहरवाँसू बेटा के कइसे गँवई लोग अपना बिरादरी से बहारि देत बा,एकर एगो झाँकी देखीं- 'फेमिली लेके जवन पूत बहरा गइले,ऊ सचहूँ बहरा गइले, कम-से-कम अपना गाँव से। अब उनुकर अड़ान परदेसे के ठहर-ठेकान में बा। गाँव के लोग उनुका के अपना में नइखे गनत। तबे त कबो काल छुट्टी-छपाटी में गाँवें अइला पर संछेपे में साहब -सलामत का बाद नोकरिहा से निठुरी मुँहें केहू ना केहू पूछिए देता- कब ले जाए के होखी?'

'बेटा के नइहर' में बेटी का सँगें बेटा के अइसन तुलनात्मक आ काव्यात्मक विवेचन कइल गइल बा कि पाठक भावविभोर भइला बेगर ना रहि सके। बहरवाँसू बेटा के दयनीयता के चित्र उकेरत निबंधकार के निष्कर्ष बा- 'ससुरइतिनि बेटी खातिर गाँव अबहीं ले किछु रसम-रेवाज रखले बा,बाकी बहरवाँसू बेटा के सामाजिक पूछ नइखे। 'नगर-महानगर में चाकरी के चक्की में पिसात नवही के बेचारगी के ऐनक बा 'बेटा के नइहर',जवना में नोकरिहा अपना गाँव से परंपरा से स्मृतियन के मार्फत जुड़ल चाहेला आ ओकर आँतर भितरे-भीतर घवाहिल होके रहि जाला। एह से उजड़त गाँवन के फेरु से हरियरावे आ शहर-गाँव में 63 के नेह-नाता बनावे के उतजोग निबंधकार के दृष्टिसम्पन्न सोच के सूचक बा- 'एह से एहिजा के उझंख होत बगइचा के सोहावन बनावे के परी। जरूरत बा त बस अतने जे सहरइतिनि जिनिगी का जवरे गाँउझ नाता लगावल जाउ, दूनों में छत्तिस के ना,तिरिसठ के मेल बइठावल जाउ, ठीक ओइसहीं जइसे

ससुरइतिनि बेटी का दूनों बाँहि का भीतर नइहर-सासुर के नेह समेटल रहेला।'

जवना पोढ़ता से भोजपुरी निबंध के शुरुआत भइल रहे, ओह परिपाटी के पुन्नश्लोक अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी ना खाली आगा बढ़वले बानीं,बलुक कथ-शिल्प-संवेदना के दिसाईं नवकी पीढ़ी आ दीगर भाषा के रचनिहारन के ऐनको देखवले बानीं। उहाँ के भाषा टकसाली बा आ भोजपुरी के खाँटी शब्द,लोकोक्ति,मुहावरा आउर बिंबधर्मी काव्यात्मक उक्तियन के जियतार इस्तेमाल उहाँ के निबंधन के खास बनावत बा। गाँव, लोकसंस्कृति आउर लोकभाषा खातिर उहाँ के समरपन जगहा-जगहा झलकत बा। एगो यशस्वी कवि के ई कालजयी निबंध पढ़निहारन के दिल के उदबेगत,आंदोलित आउर झंकृत करत आ रहल बाड़न स। इन्हनीं के जतना बेरि पढ़ल-गुनल जाई,हरेक हाली नया-नया अरथ खुलत जाई। इहे नव्यता एह निबंधन के बेशकीमती बनावत बा।

इन्हनीं के पुनर्पाठ जरूरी बा। विद्यार्थिए जी के शब्द में- 'आन ठहर अपना पुरखा-पुरनियाँ का नाँव के सुमिरनी बनावल जाला,बाकी हमनी किहाँ पुजनउग पुरखन का कीरति-कथा के कवनो खोजे-खबर नइखे लिआत।'

आखिर कब होई एह दिसाईं सकारात्मक आ रचनात्मक उतजोग?

पटना / चलभाष : 9304693031

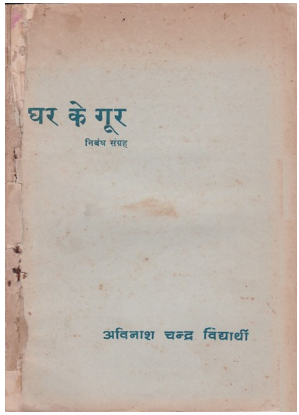

हास्य-व्यंग्य में भोजपुरी

- धनंजय कटकैया

जीतेन्द्र वर्मा द्वारा लिखल 'अब ना मानी भोजपुरी' हास्य-व्यंग्य से भरपूर एगो मजेदार किताब बड़ुवे। एह किताब में कई गो कथित भोजपुरी के भाग्यविधाता लोग का सङहीं स्वघोषित योद्धो लोगन पर खूब कटाक्ष कइल गइल बा। एह किताब में बाकी कई गो लेख हँसी-मजाक में ही तार्किक अउर मजबूत सवाल खड़ा करता। 'अवसरवादी लोग कइसे सत्ता के विरोध खलसा अपना स्वारथ में करेलन'- जहाँ एह विषय पर बात कइल गइल बा, ओहिजे 'कइसे एगो झोरा में विश्वस्तरीय, अखिल भारतीय,अखिल ब्राह्मांडीय संस्था बनवले बा लोग'- एहू प बात भइल बड़ुए। कई जगह आवश्यक अउर उचित बिन्दुअन पर भी गंभीर बात भी भइल बड़ुए।

एह पुस्तक के लेखक जीतेन्द्र वर्मा लमहर समय से भोजपुरी आंदोलन से जुड़ल बाड़े। ई पुस्तक दू खंड में बँटल बड़ुए। पहिला खंड का रचनन में बात कहे के अंदाज कथात्मक बावे जबकि दूसरा खंड में वर्णनात्मक ढंग से बात कहल बावे। दूसरा खंड के रचनन में हास्य-व्यंग्य के भाव लगातार कम होत गइल बावे।

पुस्तक- अब ना मानी भोजपुरी (हास्य-व्यंग्य संग्रह) लेखक- जीतेन्द्र वर्मा, प्रकाशक- यशराज पब्लिकेशन, पटना 800004, प्रथम संस्करण-2019 , मूल्य- 300, पृष्ठ- 96

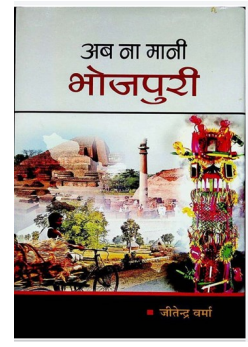

__डॉ. ब्रजभूषण मिश्र__ के भोजपुरी इनसाइक्लोपीडियो का नाँव से जानल जाला। साहित्य का हर विधा पर त इहाँ के कलम चलले बिया, काव्य शास्त्र, इतिहास आ भाषा के क्षेत्र भी इहाँ से अछूता नइखे। इहाँ के सद्यःप्रकाशित 'भोजपुरी कविता का इतिहास' बहुत चर्चित भइल बा। वर्तमान में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. ब्रजभूषण मिश्र से भोजपुरी आलोचना पर डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के संक्षिप्त बातचीत भइल जवन एहिजा प्रस्तुत कइल जा रहल बा।

भोजपुरी आलोचना के शुरुआत कब से आ केकरा किताब से मानल जा सकत बा ? रउरा नजर में भोजपुरी के पहिल आलोचक केकरा के कहल जा सकता ?

भोजपुरी साहित्य के दू गो धारा बा- लोक साहित्य के धारा आ परिमार्जित साहित्य के धारा। दुनों धारा महत्त्वपूर्ण बा। हमनी किहाँ लोक साहित्य के संग्रह संचयन आ अंग्रेजी में व्याख्या-विश्लेषण-मूल्यांकन पहिले शुरू भइल। बाद में हिंदी के जरिए आ ओकरा बहुत बाद भोजपुरी भाषा में। भोजपुरी आलोचना के सूत्र ओतहीं भेंटाई। बाकिर भोजपुरी में एकर शुरुआत महेंद्र शास्त्री संपादित पत्रिका 'भोजपुरी' में होखत बा, जब राहुल सांकृत्यायन के हिंदी उपन्यास 'जय यौधेय' के ऊपर इन्द्रासन सिंह के समीक्षा आ अवधेन्द्रदेव नारायण के लिखल आलोचनात्मक निबंध - 'भोजपुरी के आदि कवि कबीरदास' छपल। राउर सवाल किताब से जुड़ल बा, त हमार मान्यता बा कि भोजपुरी के सुच्चा आलोचनात्मक पुस्तक सन् 1976 ई० में छपल डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के 'राम काव्य परम्परा में मानस' बा।

भोजपुरी आलोचना के वर्तमान स्थिति का बा ? रउरा नजर में भोजपुरी आलोचना समृद्ध बा कि संतोषजनक स्थिति में आ कि बिल्कुल अपर्याप्त ?

भारतीय सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना पद्धति आ मार्क्सवादी आलोचना के झुलुआ में झूलत दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ, डॉ० उदय नारायण तिवारी,पं० गणेश चौबे,डॉ० विवेकी राय, आचार्य विश्वनाथ सिंह, महेश्वराचार्य, डॉ० शम्भुशरण, नागेन्द्र प्र. सिंह, डॉ० रिपुसूदन श्रीवास्तव, प्रो० ब्रजकिशोर, प्रो० हरि किशोर पाण्डेय, कृष्णानंद कृष्ण वगैरह के आलोचनात्मक लेखन से आपन एगो पातर-छीतर धारा तैयार कइलस।

आज काल भोजपुरी आलोचना के ले के हलचल बा, जवना में प्रो० तैयब हुसैन पीड़ित, डॉ० अशोक द्विवेदी, श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ० ब्रज भूषण मिश्र, डॉ० बलभद्र, डॉ० सुनील कुमार पाठक, आचार्य हरे राम त्रिपाठी 'चेतन', डॉ प्रमोद तिवारी आदि के आलोचना पुस्तक चर्चा में बा; जबकि डॉ० कुमार विरल, बरमेश्वर सिंह, श्री जितेन्द्र कुमार, डॉ० आसिफ रोहतासवी, डॉ० विष्णुदेव तिवारी, प्रकाश उदय, डॉ० जयकांत सिंह, डॉ० रामदेव शुक्ल, प्रेम शीला शुक्ल आदि आलोचनात्मक लेखन में सक्रिय बा लोग। डॉ० विष्णुदेव तिवारी के आलोचना कार्य बहुत चर्चा में रहेला, काहे कि ऊ मोह-माया से बन्हाइल ना रहस। बेलाग लिखे में ऊ माहिर बाड़ें। एह से वर्तमान स्थिति कवनो बुरा ना कहल जाई, संतोषजनक मानल जा सकत बा। बाकिर और लिखवइया लोग आलोचना में रुचि लेवे त ठीक रही।

भोजपुरी आलोचना का समृद्धि में कवना चुनौतियन के सामना करे के पड़ रहल बा ?

आलोचना त रचना के पाछे चले वाली विधा ह आ रचना के राह धरावहूँ के काम करेला आलोचना। रचना बढ़िया आई त आलोचनो साहित्य बढ़िया आई। भोजपुरी के पहिले के रचना आ आलोचना दूनों बढ़िया रूप में सोझा आइल बा। एने रचना में सोशल मीडिया के कारणे कुछुओ लिख के रचनाकार बनेवाला लोग के चलते जीवन में अराजकता आइल बा, ओह से आलोचना प्रभावित भइल बा। रचनाकार चाहत बा कि रचना के प्रशंसा होखे, ऊ अपना रचना के कमतर नइखे बूझत। आलोचक का मनराखन बने के पड़ता बा।
कुछ आलोचक आलोचना के मतलब छिद्रान्वेषण समझेला त रचना के साथे अनर्थ करेला। एह सब चुनौतियन से निबट के भोजपुरी आलोचना समृद्ध हो सकत बा।

भोजपुरी आलोचना का समृद्धि खातिर कवना क्षेत्रन पर ढेर ध्यान दिहला के जरूरत बा ? भोजपुरी आलोचना के बढ़ावा देबे खातिर अउर ओकरा के राष्ट्रीय आ विश्वस्तरीय बनावे खातिर संभावित रणनीति कइसन होखे के चाहीं ?

रचनाकार लोग दोसरा के रचना के नइखे पढ़त, भोजपुरी साहित्य परम्परा के नइखे जानत। भोजपुरी में पूर्ववर्ती लोग के रचना के जाने समझे के प्रवृत्ति ना बा। भोजपुरी लोकभाषा ह, लोक संस्कृति के समझ आ ज्ञान रचनाकार का होखे के चाहीं। तब ऊ बढ़िया रचना कर सकत बा। आलोचको लोग भोजपुरी संस्कृति के समझ ना राखी त बढ़िया आलोचना ना कर पाई।

आलोचना का क्षेत्र में वर्तमान लेखकीय भूमिका का मद्देनजर भोजपुरी आलोचना के भविष्य कइसन लागत बा ?

भोजपुरी आलोचना के भविष्य उज्ज्वल बा। आर्थिक अभाव का बावजूद भोजपुरी के कई गो आलोचना के पुस्तक आइल बा। आलोचक लोग लिखियो रहल बा, छपवाइयो रहल बा। हमरा संपादन में भोजपुरी साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश सांस्कृतिक परिषद, भोपाल द्वारा 130 दिवंगत भोजपुरी भाषा-साहित्य, कला-संस्कृति, समाज-राजनीति सेवियन पर केंद्रित चालीस लेखकन के लिखल आलेखन के संग्रह प्रकाशित हो रहल बा। एह में आलोचना के बढ़िया स्वरूप सोझा आई।

संपर्क : श्रीनिलयम्, आदर्शग्राम, रोड नं. 1,
कोल्हुआ पैगंबरपुर,मुजफ्फरपुर-843108 (बिहार)

आकलन

डॉ. नंदकिशोर तिवारी

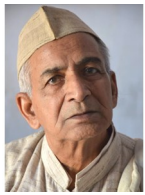

भोजपुरी साहित्य में व्यावहारिक समीक्षा : स्थिति आउर संभावना

कवनो भासा में आलोचना के दूगो पक्ष होला- एगो सैधांतिक आउर दोसर व्यावहारिक। ई दूनो एक दोसर के पूरक होला। एगुड़ो बिना दोसरका के अस्तित्वे ना रह सके। कबो एगो कमजोर रहेला आ दोसर का तनिका भारी परेला आउर कबो दूनो समान रहेला। पुरनका संसकिरित समीक्षा में सिधांते पक्ष पर जादा जोर दिआत रहे, व्यवहार पक्ष खातिर लच्छनन के उदाहरण दिआत रहे। कवनो कवि के कूल्हि साहित्य के सम्बन्ध में गुन दोस बतावे के चाहे ओकर विसेसता, मूल प्रवृति आ प्रेरणा के खोज करे के चाहे, ओकरा के परगट करे के कवनो पद्धत चाहे चलन ना रहे।

हिंदी में व्यावहारिक समीक्षा के खूबे परचार पछिम के समीक्षा के परभाव से भइल। एही से हिंदी के आलोचना साहित्य आरम्भ से अतना मजबूत नेव पर आपन गोड़ ना रखिके व्यावहारिक आलोचना से आपन शुरुआत कइलस। एह से हिंदी में आधुनिक आलोचना के शुरुआत व्यावहारिक आलोचना के रूप में भइल। भारतेंदु जुग में प्रकाशित होखे वाला ग्रंथन के गुन दोस पर खूबे विचार होत रहे। शुक्ल जुग में सैधांतिक समीक्षा के साथ व्यावहारिक आलोचना अधिका लिखाइल। व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में नाया बात ई दिखल कि एगुड़े आलोचक बहुत सा साहितिक प्रवृतिअन पर अलग-अलग आलोचनात्मक लेख लिखके प्रकासित क़इलन। इहाँ तक कि इतिहास ग्रंथ भी खाली वृत ना होके आलोचनापरक ग्रंथ भइल। एह जुग के व्यावहारिक आलोचना खाली कृति चाहे लेखकन के जीवनवृत्त चाहे गुन दोस विवेचन तक सीमित ना रहे। ओकरा में ओह जुग परिस्थिति के परभाव, लेखक के अन्तरवृत्ति, दार्शनिक-सामाजिक चिंताधारा के भी बरनन विवेचना कइल जात रहे। एह से निर्नयात्मक, तुलनात्मक, पद्धत के परचार कम हो गइल आ ऐतिहासिक, व्याख्यात्मक, समाजशास्त्रीय मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा पद्धत के भरमार हो गइल।

व्यावहारिक समीक्षा में कृति के रूप शिल्प के सम्यक विश्लेषण के विसेसे महत्व होला। जइसन सुकुल जी पदमावत, सूरसागर आ तुलसी के समीक्षा में कइले बानीं। बात ई भइल कि भारतेन्दु जी के बाद हिंदी में पच्छिमी आलोचना का सिद्धांत के विवेचना शुरू हो गइल। रत्नाकर जी पोप के 'एसे आन किंटसिज्म' के अनुवाद 'समालोचनादर्शक' सिरसक से लिखलीं। एकरा बाद बखसी जी 'विश्व साहित्य' किताब लिखलीं। श्यामसुंदर दास जी 'साहित्यालोचन' लिखलीं, जेकरा पर 'हडसन' के 'इन्ट्रोडक्सन टू द स्टडी आव लिटरेचर' के पुरहर परभाव रहे। एकरा पहिले भी टीका, तिलक, भाष्य लिखके लोग व्याख्या करत रहन। भाष्य जादा तौर पर व्याकरन भा दर्शन ग्रंथ के होत रहे आउर टीका साहितिक कृतियन के। व्यावहारिक समीक्षा में भी संसकिरित के परम्परा के निरवाह होत रहे।

अंगरेजी में भी ई समीक्षा पद्धत फ्रांसीसी साहित्य से आइल। होला ईहे कि जवन साहित्य के भंडार भरल बा ओकरा से आदमी कुछ न कुछ लेबे के जरूरे कोसिस करेला। बदरी पानी ले आई त समुन्द्रे से, ताल-पोखर त तनिके गरमी में सूख जाई। साँच पूछीं त व्यावहारिक समीक्षा के संकुचित अरथ में समझे वाला लोग दोस दरसन समझेला। खाली परसंसा चाहे विसेसता देखावल एकर लक्ष्य ना हऽ। एकर मिटकल अरथ में प्रयोग पुस्तक परिचय, गुन दोस विवेचन निरनय, सम्मति चाहे रचना से संबंधित वाद विवाद में देखल जाला। संसकिरित के राजेशेखर जी 'काव्य मीमांसा' में एक व्यावहारिक समीक्षा के रूप प्रतिष्ठित कइलीं ई कहिके कि 'अन्तर्भाष्यं समीक्षा अवान्तरार्थ विच्छेदश्च सा।' मतलब ई कि कवनो विसेस रचना में कवन मुख बात के धेआन रखल गइल बा ओकर विवेचन कइल जाव, साथ-साथ ओकरा गौण अरथ के भी व्याख्या होखे। माने ओकरा में परधान आ गौण, भीतरी-बाहरी सब अरथन के विवेचना होखे। पछिमी साहित्य में भी व्यावहारिक समीक्षा के अरथ रचना के विषय, सौन्दर्य सिधांत, जीवन दर्शन, जुग परिस्थिति, रचनाकार के जीवनी, मस्तिष्क के नजरिया से ओकर गुन-दोस, मूल्य, सनेस, परभाव, परसार, मौलिकता, उपयोगिता कूल्ही के विवेचन होला।

कृष्ण बिहारी मिसिर जी व्यावहारिक समीक्षा के सरूप के विषय में साफ शब्दन में लिखले बानीं। कवनो ग्रंथ के समालोचना करत खानी ओह विषय के हर ओर से निरीक्षण होवे के चाहीं। ग्रंथ के गौण विषय का ह आ प्रयोजन का हऽ। वास्तविक बरनन का ह, आउर भराव का ह, एह बातन के वैज्ञानिक आ विस्तृत उत्तर देवे के चाहीं। सुकुल जी के व्यावहारिक समीक्षा से बुझाला कि उहाँके कवि के जीवन दर्शन आ रचना तंत्र पर विचार करत, रचना के रमनीयता आउर मूल्य के हृदयंगम करावे में समीक्षा के सारथकता मानत रहलीं हा। एह से परगट होता कि व्यावहारिक समीक्षा एक तरह से मौलिक चिंतन प्रक्रिया ह। एह से ओकरा भीतर स्वतंत्र चिंतन के कुल्ही सुभाविक बा। चिंतन विचार निरूपण के एगो मानसिक प्रक्रिया ह, जवन कबो वस्तु घटना मूर्तिरूप व्यक्ति के सहायता से घटित होला। साहित्य शास्त्र में एही से कवि आ समीक्षक के सकती के एगुड़े जात मानल बा। कवि के कारयित्री आ आलोचक के भावयित्री, एके सकती-प्रतिमा के दू गो रूप हो जाला। कबनो भासा के साहित्य कतना भरल-पूरल बा, एकर पाता आलोचना के भंडार से लागेला।

भोजपुरी भासा साहित्य में व्यावहारिक आलोचना साहित्य के सरूप पर विचार करेके पहिले हिंदी, अंगरेजी में एकर स्थिति बतावल जरूरी हो गइल। काहें कि जब हिंदी के शुरूआत होत रहे त ओकर प्रेरणा स्रोत संसकिरित-अंगरेजी रहे। अंगरेजी के शुरुआत समया फ्रेंच के साहित्य रहे। चूँकि भोजपुरी के लिखित साहित्य के सिरीगनेस एनही से भइल बा, एहसे एकर समीक्षा आ ओह में भी व्यावहारिक समीक्षा पर विचार करे के बा। तब अगर हिंदी के सुरुआत के घरी से तुलना कइल जाव त कवनो संतोस करे खातिर ठीक-ठाक से लिखल समीक्षा के अभाव लागत बा। अगर कुछ लिखाइलो बा त ओकर सजावट हिंदी चाहे अंगरेजी के समीक्षा क्षेत्र से विचित्र सब्दन आ वाक्यन के लेके खाड़ा कर दिहल गइल बा। कतहूँ-कतहूँ त ओहिजा

से उठाके खंड के खंड भोजपुरी रचनाकारन पर थोप दीहल गइल बा। कवि चाहे रचनाकार के रचना से ओकर कवनो मिलान नइखे। ईहे प्रकृति हिंदियो के एह घरी हो गइल बा। कुछऊ होता त पूरा विश्व धरातल पर। कविता चाहे पद के आसय कुछ बा आउर आलोचक जी कुछ औरी देखा रहल बाड़न, देख रहल बाड़न। एकर गंभीर कारण बा कि रचना के केहू मन से पढ़त नइखे। पढ़तो बा त ओकरा भीरू प्रतिभा के अभाव बा। हिंदी में जइसे सुकुल जी, दीन जी, बाजपेयी जी मिललन, ओइसे पढ़ाकू भोजपुरी भासी त बाड़न, बाकिर एह भासा में लिखत नइखन। खाली खानापुरी हो रहल बा। जइसे भोजपुरी में साठ गो से ऊपर उपन्यास लिखाइल बा लेकिन आलोचना ग्रंथ अबहिन चार गो कविअन पर भी नइखे लिखाइल।

भोजपुरी में प्रकासन के भी अभाव बा। सभे आपन रचना अपने छपवावत बा। ओकरा के प्रचारित भी आदमी नइखे कर पावत। अगर लोग लिखतो बा त हिंदी में। 'बउधायन' काव्य भोजपुरी में 'पृथ्वीराज रासो' अइसन बड़ बा। विमलानंद जी ओकर बोधदीपक भोजपुरी में निकललीं। ई आलोचना का खेत्र में जायसी ग्रंथावली के सुकुल जी के भूमिका नीअन बा। लेकिन ओकर भूमिका दिग्गज विदवान आ समीक्षक डा० उदयनाराण तिवारी, विवेकी राय आ कृष्णदेव उपाध्याय हिंदी में लिखलीं जा। उहाँ सभे के लेख भोजपुरी निबन्ध निकुंज में बा। भूमिका हजारी प्रसाद जी के भी हिंदी में, व्याख्यान भोजपुरी में बा। बाकिर कवनो समीक्षा ग्रंथ ओह लेखकन के कवनो कृति के ऊपर भी कम देखे में आवता। जइसे विद्यापति जी अवहट्ठ, मैथिली आ संसकिरित में साथे लिखलीं, ओइसहीं हिंदी के लेखक लोग भी भोजपुरी के साथे न्याय करित त समीक्षा क्षेत्र में बहुत कुछ लिखा गइल रहित। अबहिनो संसकिरित के नीमन-नीमन सब्दन के भोजपुरी में ठहराव बनल बा। ओकर परयोग करेवाला कोई नइखे।

भोजपुरी भासा में आलोचना में खाली खानापुरी भइल बा, ओहिजा देखावा जादा भइल बा, हो रहल बा। जवन शोध भइल बा, ओकरा आलोचनात्मक स्वरूप के भी हिंदिए में आकलन बा। श्री कुबेर मिसिर के शोध प्रबंध 'मोरिसस के भोजपुरी लोकगीतों का विवेचनात्मक अध्ययन' हिंदी में लिखल बा। एकरा में लोकगीतन के समीक्षा करे के पूरा अवकाश रहे लेकिन ई ग्रंथ हिंदी में लिखाइल। एही तरह से लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के कुल्ही रचनन के महेश्वराचार्य जी विश्लेषण कइलीं, बाकिर हिंदी में भोजपुरी के दस गो से जादा पत्रिका निकलत बाड़ी सन। ओह में समया-समया पर लोग समीक्षा लिखत बा लेकिन उद्देश्य सहित ई काम नइखे होत। एगो मतलब अउरी कि जतना कविता-कहानी लिखात बा, उपन्यास-निबन्ध लिखाता, ओह अनुपात में व्यावहारिक समीक्षा नइखे लिखात। समीक्षा विधा पंडिताई के साथ सहृदयता खोजेला। ओह रचना से रउवा परेम करीं आ तब ओह में डूबीं। बिना डुबकी लगवले रतन ना भेंटाई। बिना धेआन में गइले आतमा से भेंट ना होई। आतमाराम त भीतरे रहेलें। बाहर के रूप अनेक बा, भीतर वाला एक बा। सभका भीतर बा। व्यावहारिक समीक्षा ओह रचना के भीतरी रूप या बहरी वाला के एकही कहके बुझवा देला कि ऊ का ह, कइसन ह, आ का होखे के चाहत रहे। आजु हिंदी के सुकुल अइसन समीक्षक ना मिलिते त

तुलसी, सूर, जायसी, कबीर, विद्यापति जइसन रतन रहलो पर ना भेंटइतन। रहन त ऊ लोग पाँच सौ बरिस से। पृथवी में का नइखे भीतर, जे खोजल ओकरे के न श्रेय दिहल जाई ?

भोजपुरी में समीक्षा के पूरा संभावना बा। ओकरा में साहित्य भी लिखा रहल बा। विद्यापति भा कम्ब अइसन भले ओकरा के कवि ना मिललन बाकिर ओकरा के भासा बड़ा पुरान आ शक्तिपूर्ण मिलल। ओकरा में मोहावरा आ शब्द वैदिक जुग के सुरच्छित मिलल, एह से एकरा सामने शब्दावली के समस्या नइखे, लिखनिहार के कमी बा। एकरा के लोग परचार आ हाला-गुला करके चाहत बा कि सहवर्ती साहित्य के सामने ला दिहीं, लेकिन ई संभव नइखे, लेकिन एकरा से एकर संभावना पर कवनो खतरा नइखे। कवनो लेखक होई आउर एकर उदधार कइ दिही। कवनो भाषा के निर्माण एक दिन में ना होखे, ना त ओकर साहित्य के सभ अंग एक दिन में भरल जा सके। जब ले खूबे-गरमी ना पड़े त बरसातो कसमसिआ के होला। एह घरी सभ भासा के साहित्य के ईहे हाल बा। बिना कृति के पढ़ले रिभ्यू' लिखा जाता, समीक्षा लिखा जाता। अपना पार्टी के लेखक बा त ओकरा के चरचा करके लोग असमान चढ़ा देता। जे दल-बल में नइले, ओकर चरचा कइल पाप समुझल जात बा। जइसे देस खातिर केहू नइखे, अपना विचार खातिर, दल-बल खातिर जीअत बा। एकर परभाव साहित्यो पर पड़ल बा। एहसे उदास होखे के कवनो बात नइखे। जरूरत बा कि भोजपुरी के एगो लेखक चाहे कवि के लेके ओकर रचना के मंथन कइके ओकर सहज सुभाविक गुन-दोस के उपरावल जाइत। के का लिखत बा ओकर कवनो ठवर ठेकाना नइखे। लेखक किरिपा करके भेजत बा त ठीक, ना त ओकरा के कतहूँ से पावल ना जा सके। न कवनो परकासक बाड़न, न कवनो बेचे वाला। हाला करके हमहूँ पाँचवा सवार हईं। कवनो साहित्य के पेटा समुद्र के होला।ओह में जबले हजारो नदी ना गिरी -बसी, ओकर कोना-कोना ना भरी-पूरी।

भोजपुरी में व्यावहारिक समीक्षा के सुरुआते होखल बा। ई सुरुआत शुभ बा आ सगुनावत बा लेकिन जतना एह में संभावना बा ओइसन पाया नइखे भेंटात। अइसे स्व० जितराम पाठक जी उमाकांत वर्मा के काव्य संग्रह के बड़ा नीमन समीक्षा कइले रहीं, फिर अवधेन्द्रदेव जी के अप्रकाशित काव्य संगरह के भी समीक्षा लिखले रहीं। महेश्वराचार्य जी 'त्रिपुटी' में जितराम जी के कवितन का साथे अउरी कविअन का कविता के बड़ा ऊँचाई पर ले जाके व्यावहारिक आलोचना के विषय बनवलीं। एही तरह से ग्रंथन के भूमिका, रिव्यू में भी समीक्षा के आछा पुट मिल रहल बा। अबहिनों डा० अवधेश प्रधान, राधा रमण प्रसाद, डा० विश्वरंजन, कृष्णानंद कृष्ण, विवेकी राय, हरकिशोर पांडेय, रिपुसूदन श्रीवास्तव, नागेन्द्र कुमार सिंह, अशोक द्विवेदी, शंभुशरण जी आदि भोजपुरी में व्यावहारिक आलोचना के बनावे-बिगाड़े में लागल बाड़न। साँच पूछीं त कवनो साहित्यिक विधा का विकास के ईहे नियम आ प्रक्रिया ह। अब स्नातकोत्तर में भोजपुरी के पढ़ाई होखे लागल। एहिजा से लइका लोग निकल के भोजपुरी साहित्य के एह विधा का असंतोषजनक स्थिति में सुधार ले आई, काहें से कि एकरा संभावना के कवनो देस काल में नकारल न जा सके।

निराला साहित्य मंदिर, बिजली शहीद, सहसराम, जि. रोहतास (बिहार)

कन्हैया सिंह 'सदय'

समीक्षा का आङन में भोजपुरी के पइसार आ स्थिति

कवनो पुस्तक भा रचना विशेष के पढ़ के ओकरा गुण-दोष के विवेचना विवेचन कइल आ ओकरा बारे में अपन मत प्रकट कइल समीक्षा कहाले। समालोचना भा आलोचना एकरे पर्याय होला। मन, सकारात्मक नकारात्मक भा एह दूनों में से कवनो एक हो सकेला। मत निर्धारण खातिर समीक्षा ग्रंथन के अनुशीलन जरूरी होला। सरसरी निगाह से पढ़के सही समीक्षा नइखे लिखल जा सकत। कवनो रचना में रचनाकार के व्यक्तित्व झाँकेला।एहसे समीक्षा लिखे से पहिले रचनाकारो का बारे में जानल जरूरी होला।

साहित्य, जिनिगी के व्याख्या होले आ समीक्षा ओह व्याख्या के व्याख्या। हर समीक्षक के समीक्षा एक समान नइखे हो सकत। "भिन्नरुचिर्हिलोकः", एहसे आलोचना के प्रत्यालोचनो अति आवश्यक होले। इहाँ हम एतने कह सकत बानी कि जवन समीक्षक जेतने गुणग्राही, निष्पक्ष, पूर्वाग्रहरहित आ नीर-क्षीर विवेक सम्पन्न होई, ओकर समीक्षो ओतने सशक्त आ प्रभावकारी होई। अधिकाधिक विद्वानन के अनुसार समीक्षा, पाँच प्रकार के होले- सैद्धान्तिक, व्याख्यात्मक, निर्णयात्मक, स्वतंत्र आ परिचयात्मक।

सैद्धान्तिक समीक्षा विद्वानन द्वारा निर्धारित सिद्धांतन के आधार प कइल जाले। समीक्षा का एही पद्धति के सर्वोत्तम मानल गइल बा। अइसन समीक्षा लिखे खातिर भामह जी के काव्यालंकार, दण्डी जी के काव्यादर्श, मम्मट जी के काव्य'प्रकाश, आनंदवर्द्धन जी के ध्वन्यालोक, विश्वनाथ जी के 'साहित्य दर्पण', राज शेखर जी के काव्य मीमांसा, श्याम सुंदर जी के 'साहित्यालोचन' जइसन ग्रंथन के पढ़ल जरूरी बा। ई समीक्षा बिलकुल अनुशासित आ तर्कसंगत होले।

व्याख्यात्मक समीक्षा में समीक्षक, एगो अन्वेषक के भूमिका निभावेला। ऊ समीक्ष्य कृति का हरेक रचना के गहराई से अध्ययन आ विश्लेषण कइला का बादे आपन राय जाहिर करेला। अइसन समीक्षा लिखल तनी जोखिमाह होले। काहें कि एमें समीक्षकों के योग्यता लखार हो जाले। मनोविज्ञान के जनक फ्रायड के कहनाम बा- 'टेल मी वाट यू थिंक ऑफ आदर्स, आइ विल टेल यू ह्वाट यू आर। मतलब, बताईं, अपने व्यक्ति विशेष का बारे में का सोचींला। हम बतायेब रउआँ का हईं।"

निर्णयात्मक समीक्षा में समीक्षक एगो न्यायाधीश का भूमिका में होला। सबसे पहले ऊ समीक्ष्य पुस्तक का समस्त रचनन के वस्तु, शिल्प, शैली आ भाषा के अध्ययन, समस्त शास्त्रन में निर्धारित सिद्धान्तन के आधार पर करेला। फेरु समान विद्या के उत्कृष्ट पुस्तकन का साथ ओकर तुलनात्मक विश्लेषण करेला

आ अंत में काफी सोच-समुझ के आपन निर्णय संप्रेषित करेला।

स्वतंत्र समीक्षा माने बिना मेंह के दँवरी। ई पद्धति आत्मप्रधान होले। एकरा के समीक्षा-ग्रंथन का कसौटियन प नइखे कसल जा सकत। कबो-कबो त अइसनो होला कि समीक्षक के उद्गार समीक्ष्य कृतियो पर भारी पड़ जाला आ ऊ रचनात्मक साहित्य में आपन अलग पहचान बना लेला। एकरा विपरीत जब ई पद्धति स्वच्छंद हो जाले त समीक्ष्य कृति के धोवल-धावल भइसि लेवाढ़ ले लेले।) एह समीक्षा पद्धति पर समीक्षक के विद्वता हावी रहेले। विडम्बना ई बा कि अइसने समीक्षा आज काल्हु बेसी लिखा रहलि बा।

परिचयात्मक समीक्षा में पुस्तक के नाँव, विधा, लेखक, मुद्रक आ प्रकाशक के नाँव, पता, संस्करण, आइ. एस. बी. एन.(यदि उपलब्ध होखे) पुस्तक के मूल्य आ संक्षेप में समीक्षकीय प्रतिक्रिया दिहल जाले। उपर्युक्त हरेक समीक्षा पद्धतियन के साथ एकर गठबन्धन अनिवार्य होला। एकर उपयोगिता ओसहीं बा, जइसे कुदारी आ बेंट के बीच पचरी। आज-काल्ह पत्र-पत्रिकन में एही पद्धति के इस्तेमाल ज्यादा हो रहल बा।

समीक्षा में संक्षेपण के अहम भूमिका होले। ई नाविक के तीर जइसन छोट आ प्रभावकारी होखे के चाहीं। एने कुछ अइसन समीक्षक लोग उत्पन्न भइल बा जे आपन विद्वत्ता झाड़े का चक्कर में समीक्षा के अतना ना बोझिल आ गंभीर बना देता कि पाठक पढ़े से परहेज करे लागत बा। हर कुछ एगो सीमा के अन्दर ही सुशोभित होला।

समीक्षा के आँगन में भोजपुरी के पइसार कब भइल हमरा मालूम नइखे। बाकिर, ई त मालूम बा कि जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् से प्रकाशित भोजपुरी पत्रिका 'लुकार', जवन पहिले चक्रमुद्रित होके निकलत रहे, ओकरे नाथ स्मृति अंक 1970 में हमार एगो समीक्षा, शीर्षक 'नाथ साहित्य के लोकप्रियता' प्रकाशित भइल रहे, जवना में श्री दुर्गा शंकर सिंह 'नाथ' विरचित 'साहित्य रामायन', 'भोजपुरी के कवि आ काव्य', 'भोज, भोजपुर आ भोजपुरी प्रदेश' के साथ 'भोजपुरी लोक गीतन में करुण रस' के संक्षिप्त समालोचना छपल रहे। एकर कतरन हमरा पास सुरक्षित बा।

जहाँ तक हमरा जानकारी बा, अभी ले भोजपुरी के आपन कवनो मानक समीक्षा ग्रंथ प्रकाशित नइखे भइल। भोजपुरी समीक्षक, हिन्दी के समीक्षा ग्रंथन का सिद्धांतन के आधार पर ही समीक्षा लिखत आइल बाड़ें आ आजो लिख रहल बाड़ें, विशेष रूप से मिश्रित आ स्वतंत्र पद्धति के सहारे। संतोष आ प्रसन्नता के बात ई बा कि विधागत पुस्तकन आ पत्र पत्रिकन में प्रकाशित आलेखन के प्रकाशन निरंतर जारी बा। ई भोजपुरी समीक्षा के सोनहुला भविष्य के संकेत बा।

डॉ. विश्वरंजन जी के आलेख 'भोजपुरी के साहित्यिक आलोचनाः सिद्धांत आ प्रक्रिया' जवन अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एगरहवाँ अधिवेशन, रेणुकुट में (26/27 मई -1990) में पढ़ल गइल रहे आ बाद में सम्मेलन पत्रिका में छपलो रहे, के मोताबिक महेश्वराचार्य जी के भोजपुरी समीक्षा से सम्बन्धित दू गो किताब-बतकूचन आ त्रिपुटी (सन् 1978) छपल बा, जवना के समहुत माने में कवनो हरज नइखे। भोजपुरी कहानी के समीक्षात्मक पुस्तक. कृष्णानंद 'कृष्ण' जी

के 'भोजपुरी कहानी : विकास आ परंपरा' सन् 1976 में प्रकाशित भइल, जवना से समीक्षा के बंद वातायन खुलल। एकरा बाद डॉ. विवेकी राय जी के 'भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास' भोजपुरी अकादमी, पटना से मई 1982 में छपल। एह पुस्तक में तब तक के प्रकाशित भोजपुरी कहानी आ उपन्यासन के सारगर्भित समीक्षात्मक प्रस्तुतीकरण, पठनीय बा। डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के पुस्तक' 'कसउटी पर भोजपुरी कविता' के प्रकाशन सन् 2008 में आ भोजपुरी आलोचना के इतिहास के सन् 2007 में भइल। पहिलकी के समीक्षा अनिल ओझा 'नीरद' जी लिखलीं, जवन 'भोजपुरी माटी' (मासिक) के जनवरी, 2010 में छपलि। 'समकालीन भोजपुरी साहित्य कऽ समीक्षात्मक अध्ययन', लेखक - डॉ. अर्जुन तिवारी के ई पुस्तक वर्ष 2018 में प्रकाशित भइल। एकर समीक्षा विजय शंकर पाण्डेय जी लिखले बानी, जवन पाती' (भोजपुरी त्रैमासिकी) के अंक - 93, अप्रैल-जून, 2019 में छपलि बा। एकरा अलावा डॉ. अशोक द्विवेदी जी के पुस्तक 'भोजपुरी रचना आ आलोचना' (तीन खंडन में) सन 2019 में प्रकाशित भइल। एकर संक्षिप्त परिचर्चा डॉ. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी जी लिखले बानी। ई 'पाती' के दिसम्बर-मार्च, 2020 में छपलि बा।

भोजपुरी समीक्षा का विकास में समय-समय पर पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित आलेखो के उल्लेखनीय योगदान बा। अइसन आलेखन में 'भोजपुरी उपन्यास : शिल्प आउर भाषा' (ले. - कन्हैया सिंह 'सदय' प्रकाशित-'साखी, अंक 6, अक्टूबर 1982, जमशेदपुर), 'भोजपुरी कहानी के बदलत तेवर' (ले.- कन्हैया सिंह 'सदय', प्रकाशित- भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, नवम्बर- दिसम्बर 1990, पटना), 'भोजपुरी कथा-साहित्य : विकास के चरण' (ले.- कन्हैया सिंह 'सदय', प्रकाशित- भोजपुरी माटी, जनवरी-फरवरी, 1986 कोलकाता), 'इतिहास के आंगन में भोजपुरी कहानी' (ले.- कन्हैया सिंह 'सदय' (प्रकाशित- भोजपुरी माटी, मई 2009, कोलकाता), 'भोजपुरी कथा साहित्य के उद्भव आ विकास' (ले.- कन्हैया सिंह 'सदय', प्रकाशित- अ.भा.भो. साहित्य सम्मेलन के 24 वाँ अधिवेशन 2011 जमशेदपुर के अवसर पर प्रकाशित 'इस्पातिका' आ मैथिली-भोजपुरी अकादमी दिल्ली से प्रकाशित 'परिछन' अप्रैल-जून, 2012), 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' (ले.- डाॅ. तैयब हुसैन पीड़ित) 'समकालीन संदर्भ में भोजपुरी कथा-साहित्य आ नाटक' (ले.- डॉ. अशोक द्विवेदी) आ 'भोजपुरी लघुकथा : एक सर्वेक्षण' (ले.- अतुल मोहन प्रसाद)- ई तीनू आलेख 'पाती' के कथा विशेषांक 69-70, दिसम्बर 2013 में प्रकाशित बा। 'रचना विधान के बहाने भोजपुरी कहानी के पड़ताल (लेखक- विष्णुदेव तिवारी, 'पाती', दिसम्बर 2012 में प्रकाशित) 'भोजपुरी लोक के भाव-बोध के प्रतिबिंब : भोजपुरी कहानी' (लेखक- विष्णु देव तिवारी, प्रकाशित 'पाती', जून 2013), 'समकालीन भोजपुरी कविता : सपना अउर जागरन' (लेखक- डॉ. अनिल कुमार राय, प्रकाशित- 'पाती', दिसम्बर 2014), 'भोजपुरी कविता के विस्तार' (लेखक- डॉ. वशिष्ठ अनूप, प्रकाशित- 'पाती', अंक 74, दिसम्बर 2014), 'भोजपुरी कहानी के समकालीनता' (लेखक- कन्हैया सिंह 'सदय', प्रकाशित- निर्भीक संदेश, जमशेदपुर, मार्च 2016), 'भोजपुरी

हिन्दी कहानी के अन्तरसम्बन्ध' (लेखक-कन्हैया सिंह 'सदय', प्रकाशित-निर्भीक संदेश, जमशेदपुर अंक-23, बरिस 2018) वोगैरह के नाँव सादर स्मरणीय बा। उपर्युक्त आलेखन के सूची हमरा पास उपलब्ध पत्रिकन आ पुस्तकन पर आधारित था। एकरा आउर बड़ होखे के संभावना से इनकार नइखे कइल जा सकत।

जहाँ साहित्य, भाव-प्रधान आ अभिव्यंजनात्मक होला, उहें समीक्षा, विज्ञान प्रधान आ विवेचनात्मक। एही से साहित्यकार आ समीक्षक के बीच मतांतर के भइल स्वाभाविक बा बाकिर जब कबो ई आपसी विवाद, मुँहफुलउवल आ टकराव में बदल जाला त समीक्षक के सभ मेहनत, गुड़-गोबर हो जाला। आज के कुछ साहित्यकार चाहत बाड़ें कि समीक्षक उनका रचना के प्रशंसा त करस बाकिर, दोष मत निकालस। तब सवाल बा - 'समीक्षा, विज्ञापन ह का ? एही से पूर्व समीक्षा शास्त्री लोग कहले बा कि कवनो कृति के समीक्षा करे से पहिले कृतिकार के बारे में जानल जरूरी होला।

समीक्षा शिवत्व के भावना से संचालित होले। एकरा से कवनो साहित्यकार के अहित ना होला। ई कवनो साहित्यकार के लेखकीय दक्षता के परिमार्जित करेले आ सुधी पाठकन के साहित्यिक अभिरुचि के विकसित करेले। ऊ लेखक भाग्यशाली होला, जेकरा कृति के कवनो समीक्षक समीक्षा करे जोग समुझेला। ई तबे होला जब ऊ कृति से विशेष प्रभावित होला।

समीक्षा के मुख्य उद्देश्य होला समीक्ष्य कृति के स्पष्ट चित्र उरेहल आ ओकरा के पाठक का सामने प्रस्तुत कइल। एकरा खातिर समीक्षक समीक्ष्य कृति के गहन अध्ययन करेला, विश्लेषण करेला आ तबे मूल्यांकन करेला। जइसे कवनो वस्तु तब ले सुन्दर नइखे हो सकत, जब ले केहू ओकरा के सुन्दर कहत नइखे। साहित्यिक क्षेत्र में समीक्षक के भूमिको कुछ अइसने होले ।

भोजपुरी समीक्षा के विकास में पत्र-पत्रिकन के सराहनीय योगदान रहल था। एने कुरछ बरिसन से समीक्षा लेखन में शिथिलता आइल बा। एकर मुख्य कारन बा- भोजपुरी में प्रकाशित पत्र-पत्रिकन के अभाव, सामयिक समस्यन के कुप्रभाव, कुछेक साहित्यकारन द्वारा समीक्षकन के तिरस्कार आ संपादकन के सौतेला व्यवहार। सुधार बहुते जरूरी बा ना त समीक्षा खोजले ना भेंटाई।

समीक्षा के गणना शास्त्रन में कइल गइल बा। एकर पवित्रता बनवले राखे में साहित्यकार, समीक्षक, संपादक आ पाठक वर्ग के सहयोग आवश्यक बा। आशा बा, एक ना एक दिन भोजपुरी समीक्षा के अच्छा दिन बहुरी। जय भोजपुरी।

कार्तिक नगर, खड़ंगाझार, एस.एस.अटोमोटिव सर्विस सेंटर के निकट, पो. टेल्को वर्क्स, जमशेदपुर- 831004 मो. 6200737286

प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह 'जय'

वंदनीय विद्यार्थी जी के भोजपुरी साहित्य साधना

आज जब एक-एक करके भोजपुरी सेवी साहित्य सर्जक पूरखन के इयाद कर रहल बानी तब ओह लरी के सबसे अनमोल कड़ी के रूप में 'विद्यार्थी जी' के इयाद बरबस आ जाता। विद्यार्थी जी मतलब अविनाश चंद्र विद्यार्थी। सन् उनइस सौ सत्तासी-अठासी के आसपास भोजपुरी के सिद्ध गजलकार जगन्नाथ जी आ जय दुर्गा प्रेस, पटना के संस्थापक साहित्यकार नागेन्द्र जी के संयुक्त संपादन में 'लोग प्रकाशन' से सितंबर, 1978 में छपल भोजपुरी का प्रतिनिधि गजलन के एगो उम्दा संग्रह पढ़े के मिलल रहे। ओह गजल संग्रह में विद्यार्थी जी के दूगो गजल छपल रहे। पहिल गजल के एक-एक शेर हम आजुओ आ अबहिंयों गुनगुना रहल बानी -

'काँटो का संगे नेह निभवलीं हाँ आजु ले
नाता ना जोरे फूल से पवलीं हाँ आजु ले
ताकीं कहाँ ले आगे मिरिगा के भइल हाल
पानी का भके रेत पर धवलीं हाँ आजु ले'

आज भोजपुरी में ढेर गजलगो हो गइल बारन। बाकिर उनका गजलन में भोजपुरी भासा आ भाव का जगे उर्दू के सब्द आ मध्यकालीन समाज के जमीन ज्यादे नजर आवेला। उहँवे विद्यार्थी जी के एक सौ बीस गजलन के संग्रह 'पतिआत ना केहू' का गजलन के पढ़ला पर भोजपुरी भासा, समाज आ संस्कृति के साक्षात् दरसन हो जाला। उनका गजल लिखे के लकम लागल जगन्नाथ जी का संसर्ग से। ऊ आपन ई गजल संग्रह उनके के समर्पित कइले बारन।

अइसहीं सन् उनइस सौ छियासी में भोजपुरी स्नातक के विद्यार्थी के रूप में 'बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य संग्रह' में विद्यार्थी जी के दूगो काव्य रचना 'अबहीं त बहुत कहे के बा' आ 'बिनु गीत के' पढ़े के मिलल। ओही दरम्यान ओह पद्य संग्रह आ कुछ जेठ साहित्यकार लोग से उनका व्यक्तित्व आ कृतित्व के बारे में जाने के अवसर मिलल। जवना के अनुसार उनकर जनम ०४ जनवरी, 1926 ई. के शाहाबाद के शाहपुर पट्टी में बाबूजी बबन लाल आ माई धीरजा देवी के परिवार में भइल रहे। जनम देला के कुछे देर के बाद माई सरग सिधार गइली आ उनकर फुआ बिरिज कुमारी देवी उनका के पाल-पोसके माई के कमी महसूस ना होखे देली। ऊ अपना फुए के ईआ कहत रहलें। विद्यार्थी जी अपना आराध्य राम भक्त हनुमान जी के नायक बनाके रचल महाकाव्य 'सेवकायन' के ओही फुआ भा ईआ स्व. बिरिज कुमारी देवी के समर्पित कइले बारन। जवन फरवरी, 1984 में भोजपुरी अकादमी, पटना से छपके काफी जस बिटोरलस।

ई 'सेवकायन' महाकाव्य हमरा भोजपुरी एम. ए. का सत्र 1991-93 का पाठ्यक्रम में लागल रहे। जवना के हम अपना गुरुदेव आ विद्यार्थी जी के परम शिष्य स्व. डॉ. जितराम पाठक जी से उनका हरि जी के हाता अवस्थित आवास पर जा जाके पढ़ले रहनीं। पाठक जी विद्यार्थी जी मास्टर साहेब कहत बतवले

रहीं जे मास्टर साहेब अपना साहित्य में भोजपुरी के निसोख-निरइठ सब्दन के मोती जरिले। विद्यार्थी जी का भाव-विचार आ विषय-विनोद के अनुकुल-अनुरूप सब्द-संजोजन-कला पर लट्टू रही पाठक जी।

पाठक जी के अनुसार 'विद्यार्थी जी सन् 1943 में शाहपुर हाई स्कूल से मैट्रिक के परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास कके इंटरमीडिएट खातिर जैन कालेज, आरा में नाम लिखवले रहस आ सन् 1945 में प्रथम श्रेणी से इंटर के परीक्षा कइले रहस। उनका इंटर पास करते हरिनारायण हाई इंग्लिश स्कूल, शाहपुर पट्टी का सचिव के बुलावा आइल आ ऊ सचिव के इच्छा के सम्मान करत उनका स्कूल में 14 मार्च, 1945 के भूगोल आ अंगरेजी शिक्षक के रूप में जोगदान कर लिहलें। ओह घरी उहाँ के हेड मास्टर रहलें जानल -मानल शिक्षा शास्त्री आ साहित्यकार सत्यनारायण लाल।'

जब शाहपुर पट्टी हाई स्कूल में विद्यार्थी जी शिक्षक के रूप में बहाल भइलें ओह घरी पाठक जी उहाँ एगारहवां के छात्र रहस। मतलब विद्यार्थी जी पाठक जी से दू-तीने साल जेठ रहल होइहन। जब 1937 में पाठक जी प्रथम श्रेणी से मैट्रिक पास कइलन त विद्यार्थी जी समय-परिस्थिति के खेयाल करत उपयोगितावादी नजरिया के मोताबिक उनका के राय देलें कि अइसे त तोहार हिन्दी आ सामाजिक विग्यान बहुते मजबूत बा अउर हिन्दी में कवितो-कहानी नीमन लिख लेवे ल, बाकिर जल्दी नोकरी पावे खातिर तोहरा साइंस चाहे कामर्स पढ़े के पड़ी। आ पाठक जी जैन कालेज आरा से इंटर करे खातिर कामर्स विषय ले लिहलें। काहेकि ओह घरी जैन कालेज में विग्यान के पढ़ाई ना होत रहे। आगे सन् 1952-53 तक शाहपुर पट्टी हाई स्कूल में पढ़वला के बाद सरकारी पेंशन के लाभ देखके विद्यार्थी जी पटना सचिवालय के निम्न वर्गीय सहायक के परीक्षा पास करके उहँवें बहाल हो गइलें। एही बीच सन् 1954 में पटना के एगो मोटर दुर्घटना उनका पांव के ठेंघुना क्षतिग्रस्त हो गइल आ उहां का पांच-छव साल ले इलाज करावत पटना से बाहर ना निकलनीं। कइसहूं सचिवालय में आ-जा के आपन ड्यूटी करीं। ओह घरी मैथिल लोग के 'मैथिली परिषद' पटना में बहुत सक्रिय रहे। जवना से प्रेरित-प्रभावित होके आचार्य शिवपूजन सहाय के सलाह पर पाण्डेय नर्मदेश्वर साहेब आदि सन् 1959 में 'भोजपुरी परिवार' नाम के एगो भोजपुरी सेवी संस्था बनवलें। विद्यार्थी जी ओकर संजोजक बनावल गइलें आ सन् 1960 से एह 'भोजपुरी परिवार' से 'अँजोर' पत्रिका निकाले के भइल त उनका के ओकर सहायक संपादक बनावल गइल। फेर 'अँजोर' आ 'योगी' पत्रिका में उनकर भोजपुरी रचना छपे लागल।

एकरा बाद त विद्यार्थी जी सन् 1994-95 तक भोजपुरी के खूब सेवा कइलें। जवना के साक्षात् प्रमाण बा उनकर डेढ़ दर्जन से ऊपर छपल स्तरीय साहित्यिक पुस्तक; जइसे- जय बंगला (लघु काव्य), सुदिन (प्रगतिशील गीत संग्रह), पँखुरी भइल हजार (बरवै संग्रह), लीला ई श्री राम-स्याम के (गीत रूपक), भोजपुरी भूँई (कविता संग्रह), अनसाइल राग (कविता संग्रह), पतिआत ना केहू (गजल संग्रह), गाँव बारहो मास में (गीत संग्रह), कौशिकायन (प्रबंध काव्य), सेवकायन (प्रबंध काव्य), बेटा के नइहर ललित निबंध), घर के गूर (निबंध संग्रह), डागा बाज गइल (कहानी संग्रह),

गइल घर (उपन्यास) आदि।

विद्यार्थी जी से आमने-सामने होके सुने आ सुनावे के पूरहर मोका अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मुबारकपुर अधिवेशन में मिलल। उहाँ का खूब खुल के मिलनीं-बतिअवनीं आ अपना भोजपुरी सेवा पर खुल के बात रखनीं। उहां के अनुसार उनका ऊपर भिखारी ठाकुर, रघुवंश नारायण सिंह, शिवपूजन सहाय, नर्मदेश्वर सहाय, त्रिलोचन शास्त्री, जगन्नाथ, डॉ. अनिल कुमार आंजनेय, प्रोफेसर ब्रजकिशोर आदि साहित्यकार लोग के बहुत प्रभाव पड़ल रहे। उहां के साहित्य के जवन विधा जेकरा से सिखनीं भा प्रभावित हो के लिखनीं ओह विधा के संग्रह ओही व्यक्तित्व के समर्पित कइनीं; जइसे- भोजपुरी गजल संग्रह 'पतिआत ना केहू' जगन्नाथ जी के, बरवै संग्रह 'पँखुरी भइल हजार' त्रिलोचन शास्त्री के, कविता संग्रह 'भोजपुरी भूँइ' रघुवंश नारायण सिंह के, निबंध संग्रह 'घर के गूर' डॉ. अनिल कुमार आंजनेय के, कहानी संग्रह 'डागा बाज गइल' प्रो. ब्रजकिशोर के आदि आदि।

विद्यार्थी जी के अनुसार उहाँ का बचपने से भारी नचदेखवा रहीं। जवार में कहीं भी भिखारी ठाकुर के नाच आवे त उहां का चोरा-छुपाके जरूर देखे जाईं। ओह घरी बड़ घर का लरिका-फरिका के नाच-नवटंकी देखे के मनाही रहे। काहे कि भिखारी ठाकुर आ आउर-आउर नाच मंडली वालन का नाच-पाठ में जगह-जगह पर बेपर्दा के अश्लील संवाद आ बात होखत रहे जवन छोट छोट लरिकन पर खराब प्रभाव डाल सकत रहे। बाकिर विद्यार्थी जी मानस ना। चोरा-छुपा देखबे करस। धीरे-धीरे उनका भिखारी ठाकुर से हेल-मेल हो गइल। हेले-मेल ना भइल ऊ भिखारी ठाकुर आ उनका पाठ-नाटक के विशेषज्ञ जानकार हो गइलन। अइसन मानल जाला कि भिखारी ठाकुर के सही जानकार दूइए लोग रहे- एगो महेश्वर प्रसाद मतलब महेश्वराचार्य आ दोसर अविनाश चंद्र विद्यार्थी। एकर सबूत बा उनका संपादन में प्रकाशित भिखारी ठाकुर ग्रंथावली।

विद्यार्थी जी अपना गीत-गजलन आ कवितन तत्कालीन सामाजिक आ राजनीतिक विद्रूपतन आ विसंगतियों पर चोट करे से भी परहेज नइखीं कइले। उनका गीत के एगो कड़ी एकर नमूना बा -

'हमरा आम के बगइचवा में उगि रहल बबूर।
किन के कलम मँगवलीं,
पाँति नापी के लगवलीं,
राते दिन अगोरीं केतने साँढ़ भइँसवा भगवलीं,
देवता डारी देले डेरा, डाढ़ पर चढ़ल लँगूर।।'

बाकिर नरियर जइसन ऊपर से कठोर आ भीतर कोमल हृदय के विद्यार्थी जी घोर आशावादी साहित्यकार रहीं। उहें के दू पाँति कहके बानी के बिराम देब-

'हमरा बा भरोस रतिया ई पराई मितवा।
तनिका देर भा सबेर दिनवा आई मितवा।।'

लेखक

डॉ. दिवाकर पाण्डेय

गुमनाम कवि
शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी'

श्रीयुत् शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' नाम भोजपुरी साहित्य खातिर हाल-फिलहाल अनजान जरूर बन गइल बा बाकिर एगो समय रहे कि मुकुन्दपुरी जी के डंका भोजपुरी साहित्य में जोरदार ढंग से बाजे शुरू हो गइल रहे। ऊ डंका अबही पूरा लय ना पकड़ि पवले रहे कि ओह पर अनभ्र बज्रपात हो गइल।

श्री शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' के जन्म तत्कालीन शाहाबाद जिला (अब भोजपुर) के पीरो थाना के मुकुन्दपुर गाँव में 01 फरवरी सन् 1925 के भइल रहे। इहाँ के आरा के जैन कॉलेज से बी.ए. के डिग्री हासिल कइनी आ आगे चलिके पीरो के एगो हाई स्कूल में शिक्षक भइनीं। ऊहाँ के बहुआयामी प्रतिभा के धनी रहनीं। बाकिर हमार मतलब ऊहाँ के कवि रूप से बा। ऊहाँ के छात्र जीवन से ही भोजपुरी कवितन के रचना करे लागल रहीं। अबहीं ऊहाँ के कवि परवान चढ़ते रहे कि भगवान के बोलावा आ गइल। भोजपुरी रूपी नन्दन कानन के पारिजात अबहीं खिलहीं के चाहत रहे। कि काल-व्याध ओकर गला दबा देलस। ऊहाँ के मात्र 38 बरस के उमिर में स्वर्ग सिधार गइनीं।

ऊहाँ के काव्य जगत् बहुत लाम-चाकर नइखे, बाकिर एह लघु में विराट के दर्शन होता। ऊहाँ के विविध भावबोधन के ले के कविता रचले बानीं। भक्ति, यथार्थ, संघर्ष, युगबोध, जीवनबोध, आस्था, विश्वास जइसन अनेक भावबोधन के ले के ऊहाँ के कविता चलल बाटे। साथ-साथ तत्कालीन समाज, राजनीति आ संस्कृति पर भी ऊहाँ के आपन नजर गड़वले बानीं। अल्पकाल के अल्पलेखन में एह तरह के भावबोधन पर लेखनी चलावल काफी महत्व रखऽता।

मुकुन्दपुरी जी के काव्य-संग्रह 'भोजपुरी कविता' नाम से सन् 1961 में प्रकाशित भइल रहे। ऊ दौर भोजपुरी के एगो अद्भुत दौर रहल बा। भोजपुरी कविता अनेक तरह के भ्रमजाल से निकले के कोशिश करत रहे। महेन्दर मिसिर अपना पूर्वी के माध्यम से भोजपुरी कविता के एगो स्वस्थ आकार दिहलन। भक्ति, श्रृंगार आ सामाजिक चेतना के त्रिवेणी कायम कइलन। आगे चलिके भिखारी ठाकुर, महेन्दर मिसिर के सामाजिक संदर्भन के विशाल फलक प्रदान कइले। एह दूनों कलाकारन के बाद भोजपुरी काव्य जगत् में एक साथ कई गो कलाकार प्रवेश कइले। कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', बनारसी प्रसाद 'भोजपुरी' भुवनेश्वर प्रसाद 'भानु', पं. महेन्द्र शास्त्री, महेश्वराचार्य, रामेश्वर सिंह काश्यप उर्फ लोहा सिंह, रामनाथ पाठक 'प्रणयी', विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', हरेन्द्र देव नारायण जइसन बहुत-से कवि लोग आइल, जिनका लोगन के कवितन में परम्परा से अलग एगो नया तेवर देखल

जा सकता। मुकुन्दपुरी जी भी एही पाँति के रचनाकार बानीं। इहाँ के कवितन में एगो नया स्वाद आ नया तेवर देखे के मिलता। ऊहाँ के कवितन में एक ओर नाश के प्रति चिन्ता बा त दोसरा ओर निर्माण के प्रति आस्था आ विश्वास भी बा।

अब हम ऊहाँ के कवितन के आन्तरिक सौन्दर्य के ओर चलऽतानीं। ऊहाँ के काव्य-संग्रह के पहिलका कविता बाटे 'सुमिरन'। एह कविता में माता सरस्वती के प्रति आत्मनिवेदन बा। कवि, माता सरस्वती से जवन कुछ माँगता ऊ अपना खातिर ना, जगत् खातिर, समाज खातिर, प्राणिमात्र खातिर। कवि अपना खातिर कुछ नइखे माँगत। माँगता त भोजपुरी के विकास खातिर रचना करे के शक्ति

"कहे के शकति नइखे आपन सोचनवां
उकुसेला मनवा में सुसुकत गेअनवा
मनवां लागल बाड़े भोजपुर के गानवां,
कइसन-कइसन भाव बाड़े
एही में महनवां।
भाखा त सहज बाड़े रूआ के समनवां।
सब रस, सब गुन करीं ना बखनवां
अइसन चलावऽ मइया जइसन मशीनवां
दास 'शिव नारायण' के इहे अरमानवां
सपना के पूरा करऽ फूटते किरिनवां।"

कवि के एगो कविता बा 'अब तक बिगड़ल फिर से बनावे के।' एह कविता में तेजी से गिर रहल पारिवारिक आ सामाजिक मूल्यन पर चिन्ता व्यक्त भइल बा। आजादी के बाद सांस्कृतिक पतन काफी तेजी से बढ़े लागल रहे। सब संजोवल सांस्कृतिक मूल्य तेजी से ढहे लागल रहे। आजादी के अर्थ लोग अपना-अपना ढंग से गढ़े लागल रहे। फल ई भइल कि स्वतंत्रता के जगह उच्छृंखलता बढ़ि गइल। एकर बेबाक चित्र एह कविता में स्पष्ट भइल बा -

"चलिआ बिगड़ि गइले
आपन धेयान नइखे,
सुनि दुरनामवां के गुँगिया कछावे के।
चोरी सीनाजोरी के त कहाँ ले बेआन करीं,
हमनी गरीबवन के खूबहीं सतावे के।
कहे परधान मुँह अपने से अपना के
जइसे बनमुरगा के मोरवा बनावे के।
कुल खानदान-परिवार अवरू पुरखा के
भूलि गइले धुनि खाली दरब जुटावे के।"

भारतीय संस्कृति त्याग के संस्कृति ह। पूरा काव्य-संग्रह पढ़ि जाईं। हर जगह सांस्कृतिक विचलन के चिन्ता व्याप्त बा। कविता के शुरूआत में घोर अंधेरा बा। आगे चलिके ई अंधेरा अउर गहरात जा ता। बाकिर अंत में कवि के आशा फूट परऽता-

"कहे 'शिवनारायण' भाई अबहूँ से
चेति जा तू,
अब तक बिगड़ल फिर से बनावे के।

एक बात अवरू बा। इहाँ के कविता अंधकार से शुरू होता, धीरे-धीरे ऊ अंधकार अउर गहरात जा ता। बाकिर अंत में प्रकाश फैल जा ता। यानी शिवनारायण जी के कविता में अंधकार से प्रकाश के ओर यात्रा करे के भावना बा| ई बात इनका कविता के शक्ति आ सीमा दूनो बनऽता।

अब तक जवन बिगड़ि गइल बा तवना के फिर से बनावे के भावना उदात्तकोटिक बा। काव्य में उदात्त के प्रतिष्ठा करे वाला समालोचक लोंजाइनस ई कहले बाड़न कि उदात्त महान आत्मा के प्रतिध्वनि ह। आगे ऊ कहतारन कि जीवन भर हृदय में क्षुद्र विचारन के पोषण करेवाला आदमी कबो उदात्त रचना करिए नइखे सकत। ई कसौटी कवि शिवनारायण पर खरा उतरता। ऊहाँ

के हृदय काफी विशाल रहे। कइसे ? ई उहाँ के कवितन से मालूम हो ता। कवि एह बेदरदी दुनिया से उबिया के एगो अइसन दुनिया बसावल चाहता जवना में आपन-अनकर के भेद ना रहित-

"आपन दुनिया अलगे बसइतीं
आपन लोग के खूब बिसरइतीं
आपन लोग कब आपन होला।
मायाजाल के खाली पेला
आपन गैर के भेद मिटइतीं।

कवि के यथार्थ चित्रण में व्यंग के धार कविता के एगो नया ऊँचाई दे देता। आजादी के बाद देश के बिगड़त स्थिति पर कवि पछता रहल बा। कवि शिवनारायण एह विडम्बना के पहचनले सामान्य जनमानस के भावना के ऊ अपना कवितन में वाणी दिहलन। 'अब का करी आसरा' कविता में ऊ कहऽतारन-

"अइले महँगी के मेला,
कोई रही ना अकेला
हम गुरु तू चेला, अब का करीं आसरा।
गइले ऋतुराज भाग, अइले सावन सुहाग
देख बेंग अरू काग, अब का करीं आसरा।
सुनऽ कोयल रानी, चहुँ ओर सुनसानी
बेंग बाजा कागा बानी,
अब का करीं आसरा।"

आजादी के बाद गोरका अँग्रेज चलि गइलन सऽ बाकिर करियवा अँग्रेजन के सुतार हो गइल। अंग्रेज त चलि गइलन बाकिर अँग्रेजियत अउर हुँमाचा मारे लागल-

"चाहीं सूट बूट के साज, धोती पहिरे में लाज
अब का अँग्रेज के राज? अब का करीं आसरा।
धइले बगुला के ध्यान, कइले प्राप्त सब ज्ञान
सुन 'जेंटिलमैन' के बयान, अब का करीं आसरा"

कविता के अंधकार अंत में जाके छँटि जाता। कवि के आशावादी दृष्टिकोण उभरि जाता -

"गांधी बाबा के सन्देश,
बाड़े रामराज उपदेश
फैली कोने-कोने देश,
हमनी इहे आसरा।"

आजादी के बाद राजनीतिक स्थिति काफी डाँवाडोल हो गइल रहे। चारों ओर अराजकता के बोलबाला बढ़ि गइल रहे। हर संवेदनशील ईमानदार आदमी अपना के ठगाइल महसूस करे लागल रहे। कवि अपना एगो गीत में एही मनोभाव के अभिव्यक्त करि रहल बाड़न-

"का हम लिखीं दादा, कुछ ना बुझाता
दुनिया के हाल देखि माथा चकराता।
चुपी कइसे साधी चुपो रहलो ना जाता
मानवां के घाव हमरा खूब ककुलाता।"

कवि के दशा फकीराना हो जाता। कबीर के आगि जो लागी नीर में, नदिया जलि कोयला भई के आध्यात्मिक भाव आ प्रतीकन के कवि बड़ी सफाई से आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कइले बाड़न।

“आगि में समुन्दर लागे,
पानी जरल जाता
मछरी आकाशे उड़े, चिरई धराता।"

उलटबाँसी के स्वरूप लेले एह कविता में व्यंग के धार आ प्रतीकन के आपन सौन्दर्य बा।

आज भ्रष्टाचार एगो देशव्यापी समस्या हो चुकल बा। ई अतना भयावह हो चुकल बा कि सत्ता खातिर एगो चुनौती बनि चुकल बा। एकर प्रसार आजादी के बाद तुरन्त होखे लागल रहे। तत्कालीन परिस्थितियन के बेबाक चित्रण करत कवि कह रहल बाड़न -

"चोरी घूसखोरी, सीनाजोरी देखाता

चार सौ बीसवा के नामवां जपाता।
खेत खाता गदहा आ जोलहा पीटाता
के हतेयार रहे जेल के ठुसाता

कवि के एगो गीत बा 'बिना सिरसक के'। चारों ओर के अराजकता से कवि ऊबिया गइल बा। कवनों उपाय नइखे सूझत। बेचारा हिम्मत हार गइल बा। पराजयबोध हो रहल बा -

"दुनिया के हाल देखि चुपिया लगावतानी
कहे के हिम्मत नइखे
चुपिया लगावतानी।"

एक तरह से हिम्मत टूटि गइल बा। बाकिर दूसरका ओर से कवि हिम्मत जुटा रहल बा। ऊ कलम आ भगवान के साथी बना चुकल बा। भगवान के साखी रखिके कलम से आक्रमण करि रहल बा। भले मुँह चुप रहि जाउ बाकिर कलम ना चुप रही।

“साखी भगवान बाड़े हालत सुझावतानी
कहाँ ले बेआन करी,कलम चलावतानी।”

ई पाण्डेयजी के कवितन के कुछ बानगी हटे। विस्तार भय का चलते हम आउर बातन के रहे दे तानी। बाकिर कुछ तथ्यन का ओर संकेत कइल चाहतानी। पहिल बात कि भोजपुरी भाषा के मन-मिजाज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रखे के जवन प्रारम्भिक प्रयास कइल गइल ओह में कवि शिवनारायण पांडे के कविता प्रतिनिधि बाड़ी सऽ। कवि शिवनारायण के कवितन में धरती के राग बा, धरती के लय, धुन आ ताल बा। आ बा बेसुरा होत रागन के सजावे के अकुलाहट। कवि शिवनारायण का कवितन के स्रोत एही धरती में बा। अफसोस बा कि भोजपुरी साहित्य के ई कवि पूरा सेवा ना करि पवले। बाकिर जवन बा तवन भोजपुरी के धरोहर बा। हम दावा त नइखी करत बाकिर सुधी आलोचक लोग अगर शोध करसु त भोजपुरी कविता के नया तेवर देबे वालन कवियन में कवि शिवनारायण जी भी जरूर शामिल होखब।

भोजपुरी विभागाध्यक्ष, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

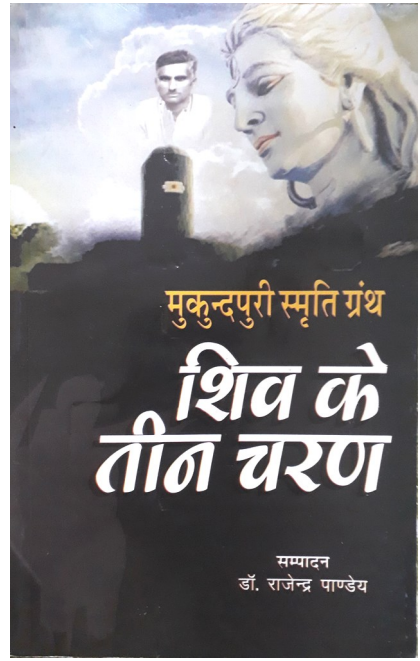

पुस्तक समीक्षा

डॉ. अर्जुन तिवारी

भोजपुरी उपन्यास के त्रिबेनी

ई संसार आफत-बिपति, बाढ़-सूखा, आँधी-तूफान के भँवर ह, जवना में कला, संगीत, साहित्य से शांति मिलेला, कल पड़ेला। साहित्य के मनोरम विधा उपन्यास ह, जवना के "उपन्यासः प्रसादनम्" प्रसन्न करेवाला कहल जाला। उपन्यास अदसन नमकीन-मिठाई ह, जेकरा चाह में साहित्य के भूखा-दूखा लोग व्यग्र रहेला। जिन्दगी के सोगहग तस्वीर एही में उभरेला। कथा, कहानी, नाटक, निबंध, संस्मरण, काव्य सबके समेटले उपन्यास प्रपंच जगत से अलग हटाके पाठक सभ के परमानन्द सहोदर प्राप्त करावेला। सन्मार्ग पर चले खातिर चेतावनी देवे में उपन्यास वड़ा प्रभावकारी सावित होला। डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास बतावेला-

"बेगाना बनकर गाँव छोड़ना ठीक नहीं, क्योंकि तोहमत लगाकर लोग मेहरारू छोड़ते हैं, महतारी नहीं।" (अलग-अलग वैतरणी)

"इस पिछड़े गाँव की कथा में फूल भी है, शूल भी, धूल भी; गुलाल भी, कीचड़ भी; चंदन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी।" (मैला आंचल)

आजकल पाँचदिनी टेस्ट मैच के जगह ट्वेंटी-ट्वेंटी के धूम वा। 'देखन में छोटे लगत, घाव करत गंभीर'। एही सिलसिला में 'डँहकत पुरवइया', 'परशुराम', 'करेजा के काँट' भोजपुरी उपन्यास जगत के त्रिवेनी बनके साहित्य संसार के संगमतीर्थ अइसन विराजऽता। परमपावन संगम प्रयाग गंगा-जमुना आ सरस्वती के मिलन विंदु ह। कर्म, ज्ञान आ भक्ति के संगमे जीवन में तीर्थराज मानल जाला। संत, सज्जन, महापुरुष तीर्थ ह, काहेंकि सुनल जाला कि संत खुदे तीर्थ के पवित्र कर देला। महर्षि अगस्त्य जी के कहनाम ह-

दानं तीर्थं दमस्तीर्थं संतोषस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता।।'

'डँहकत पुरवइया' (1973) सामाजिक उपन्यास ह, जवना में पुरबी (भारतीय) सभ्यता के डँहकल आ पच्छिम का सभ्यता के ठठा के हँसला, ठहाका लगवला के जियतार तस्वीर लउकेला। पूरब के लोग गंगा किनारे बसेले, हर जान के कीमत जानेले। छल-छद्म से दूर रहल इनकर सुभाव ह। 'रोगं शोकं पापं तापं, हर में भगवति कुमति कलापम्' वाली गंगा समाज में समरसता फइलावेले । गंगा का सभ गुन से आगर एह उपन्यास में त्यागी, उपकारी, देशभक्त के महत्ता बतलावल गइल बा। एकरा साथे 'कलजुग बाटे कुनैती' के बात फरियावल गइल बा-

'धरम, ईमान, प्यार, संस्कृति, एहिजा बनल बेगाना बा।
स्वारथ बा महान धरम, अब ओकरे भेरी वाजत बा।"
देश प छवले मोह के बदरी, का कबहूँ छितराई ?

परशुराम' (1977) पहिलका पौराणिक उपन्यास ह, जवना में आधुनिक जीवन मूल्य पर पाठक लोग के बतावल जाता। जब-जब राजसत्ता घमंड में मातल रहेले, कवनो ना कवनो 'परशुराम' नियन संत

राजगद्दी पर बइठल शासक के दुरुस्त करेला। जवना राजा का राज में परजा दुखी रहेले, ऊ नरक में जाला। हमनी के राज में धरम के जगावे के कोसिस करेके चाहीं। जइसन राजा होला, ओइसन परजा होले। एह से राजा के ठीक रहे के चाहीं। जवना राज में नारियन के इज्जत ना होला, ऊ राज चउपट हो जाला। हमार, रउरा सभ से इहे हथजोरी बा कि धरम के रइछा तबे होला जब ओकरा पीछे तलवार के ताकतो रहो। एह से आपन एकता बनवले रहे के बा। अगर नयो राजा फेनु सहसाबाहु वाली गलती दोहराई त ऊहो मिटि जाई। परशुराम का काल से इंदिरा जी तक ई बात चरितार्थ होत बा। यमुना यम के बहिन दुर्गा रहली, जिनका में सूरज के तेज रहे। प्रतीकात्मक 'परशुराम' में जमुना के तेजस्विता रहे, अनेत पर नेत के विजयश्री वाला के यमुना सदृश तेज महत्त्वपूर्ण वा ।

'करेजा के काँट' जनवादी उपन्यास, जेमे सड़ल-गलल समाज का स्थान पर नया समाज बनावे खातिर सरस्वती साधकन से अपील कइल गइल बा-

बनी नया समाज कब, समाज ई पुरान बा।
जहाँ अमीर सो रहल, तहाँ गरीब रो रहल।
जहाँ अमीर के महल, गरीब के मचान बा।
अनेक भोग बा कहीं उपास लोग बा कहीं।
जहाँ कि डेग-डेग पर लुटा रहल किसान बा।
बनी नया समाज कब, समाज ई पुरान बा।

आपन भोजपुरी के भाग्य बा कि डॉ. अरुणमोहन भारवि' जइसन परिवार साहित्य सेवा में जुटल वा। पूरा परिवार 'क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपेति तदैवरूपं रमणीयतायाः' का अनुसार नवाचार, नवनवोन्मेष आ शोध में तहे दिल से लागल बा। एह सभ का साधना से भोजपुरी माई के आँचर समृद्ध हो रहल बा। नया-नया चीजु दे के प्राचार्य अरुणमोहन भारवि जी भोजपुरी के गौरवान्वित कर रहल बानी। तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेनी का रूप में इहाँ के 'डँहकत पुरवइया' (गंगा), 'परशुराम' (यमुना) आ 'करेजा के कॉट' प्रस्तुत क के सामाजिक, पौराणिक आ जनवादी उपन्यास के त्रिवेनी बहावत बानी, जवन हिन्दी-भोजपुरी साहित्य में एक अनूठा, अनुपमेय आ अनुकरणीय कृति बा। आज-काल्ह भारी-भरकम पोथी पढ़ला के समय केकरा लगे बा ? लघु कहानी, लघु नाटिका, लघुकाव्य का जमाना में तीन प्रवृति, तीन मुद्दा, तीन सामग्री के संपुट का रूप में भोजपुरी साहित्य के त्रिबेनी बहा के डॉ. भारवि जी 'लीक छोड़ तीनों चले, शायर सिंह सपूत' के कहावत सार्थक कइले बानीं। इहाँ के साहित्यिक रचना का कद के अंदाज केहू का वश के बात नइखे काहें कि-

'आपके कद का क्या हो अंदाज ?
आप आसमाँ हैं, पर सर झुकाए चलते हैं।"

जनता-जनार्दन के ईश्वर भले कहल जाव बाकिर जेतना ओकर उपेक्षा होला, ऊ शब्द में बखान ना हो सके। एह दुनिया में दुइए गो जाति बा- पहिलका करोड़पति आ दूसरका कौड़ीपति। दूनू में जब तक भेद रही, तब तक अशांति, कलह आ क्रान्ति कायम रही।

जब लौं श्रम अस उपज को, होत न साम्य विभाग।
मिटे मिटाए किमि अहो, यह अशांति की

आग।।

जनवादी प्रबंध काव्य 'परम्परा और विद्रोह' में यादवचन्द्र जी लिखले बानीं-

है दृष्टि नई, चिन्तन नूतन
जीवन में एक व्यवस्था है।
जीवन को गति जो देती है,
वह साम्य-सौम्य शुचि आग जाग।
विद्रोह-पुरुष का भाग जाग।'

'करेजा के काँट' भोजपुरी के पहिला जनवादी उपन्यास ह, जवन नक्सलाइट गतिविधि पर केंद्रित बा। एह दीपक के जरिये उपन्यासकार के गहन चिन्तन-मनन के समझल जा सकेला...

"गरीबन के खून एगो होला। पूंजीपतियन के स्वारथ एगो हमनी के आपन हक आ हिस्सा के लड़ाई सीखे के चाहीं।"

"भगवान...? भगवान कहाँ बाड़ें...? भगवाने रहितन त एतना पाप होइत ? एहिजा त सब चोर आ बेईमान बाड़न। एह धरती पर अतना अत्याचार आ पाप होता, कहीं एकहूँ अत्याचारी पकड़ात बाड़े स ? एकहूँ ब्लैक मार्केटियर पकड़ाता ? कवनो घूसखोर अफसर के सजा मिलऽता ?"

"साँच बात त ई बा कि आज चुनाव प पूँजीवादी व्यवस्था के कब्जा हो गइल बा, जवना में मेहनतकश मजदूर का हितन के गला घोंटाला। जब तक लोकतंत्र में अबर आदमी के वोट लुटाई, छेंकाई आ फुसलावल जाई, तब तक एह सब से कवनो बुनियादी बदलाव ना आई।"

कथ्य आ तथ्य- दूनों दिसाईं नवचेतना से भरल दमगर, रसगर 'करेजा के काँट' जइसन जनवादी कृति के चलते भारवि जी हमरा खातिर शरतचन्द्र हईं। इहाँ का व्यक्तित्व में कवि के हृदय, समालोचक के दिमाग आ कथाकार के तेज नजर बा। शोधपरक दृष्टि के धनी डॉ. अरुणमोहन 'भारवि' में नव उद्भावना के नव्य दृष्टि बा, जेकर सबूत ई उपन्यास बा। काव्य के एगो अलंकार 'रसनोपमा' के उपन्यास में सुप्रतिष्ठित करेके गौरव इहाँ के मिलल बा। 'रसना' शब्द मेखला, करधनी, रस्सी, लगाम, चन्द्रहार, कमरकस, डाँड़ों के पर्याय ह । 'रसना में कड़ियन के लड़ी बनेला। ओइसने एह अलंकार में कई वस्तु उपमेय-उपमान का रूप में सिकड़ी बनावेला, इहे रसनोपमा अलंकार ह। 'करेजा के काँट' सिकड़ी अस गुथाइल बा। जवना वाक्य से उपन्यास शुरू होता ओही से खतम होता। जवना वाक्य से पहिला अंक खतम होता, ओही वाक्य से दूसरा अंक शुरू होता। रसनोपमा अलंकार के उपन्यास जात में ढाल के भारवि जी त्रिवेनी' के 'त्रिफला' में परिवर्तित कइले बानी। 'त्रिवेनी 'सुमिरत सकल सुमंगल देनी' के रूप ह। एही से सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिष्कार के निमित्त ई स्वास्थ्यवर्द्धक त्रिफला भी बा। 'डँहकत पुरवइया' (सामाजिक), 'परशुराम' (पौराणिक) आ 'करेजा के काँट' (जनवादी) उपन्यास के त्रिबेनी बहा के त्रिफला से समाज के उपकृत करे के दिसाईं भारवि जी साहित्य- जगत में शिखरस्थ होखब, हमार इहे दृढ़ विश्वास बा।

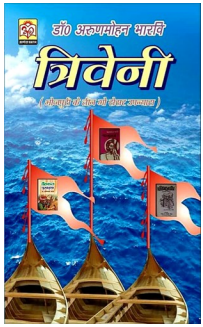

पुस्तक समीक्षा

भगवती प्रसाद द्विवेदी

मौजूदा समाज के अल्ट्रासाउंड

देश के आजादी का संगहीं शुरू भइल भोजपुरी के समकालीन कहानी लेखन के कथा-जातरा आजु एगो अइसना मुकाम पर ठाढ़ बा, जहवाँ भोजपुरी कहानी दुनिया के कवनो भाषा के कहानियन से कमतर नइखे आ कथ,शिल्प,संवेदना के दिसाईं ई आपन छाप छोड़त बा। कथाकार तुषार कान्त उपाध्याय के पहिल कहानी-संग्रह 'कुछ हमार-कुछ राउर' एह तथ के गवाही देत बा, जवना में संग्रहीत कुल्हि एगारह गो कहानी बाजारवादी दौर में तेजी से बदलत समाज के भितरिया चाल-चरीतर के रेशा-रेशा उधेड़त बाड़ी स आ इन्हनीं के अगर मौजूदा समाज के अल्ट्रासाउंड कहल जाउ,त अतिशयोक्ति ना कहाई। हालाँकि 'कुछ हमार-कुछ राउर' संग्रह में एह नांव के कवनो कहानी नइखे, बाकिर कथाकार इन्हनीं के मार्फत किछु अपना जिनिगी के आपबीती आ किछु एह माहौल में मौजूद जगबीती के गहिर पड़ताल करे में कामयाबी हासिल कइले बा। एही से एह में आपन आ अपनन के बाथा-कथा झलकत बा। खास तौर से निचिला आ बिचिला तबका के तंगी-तबाही आउर जनपीर इन्हनीं में बखूबी महसूसल जा सकेला।एकरा कथा -भूंइ के फइलाव सुदूर गाँव, कस्बा से लेके शहर ले लउकत बा।

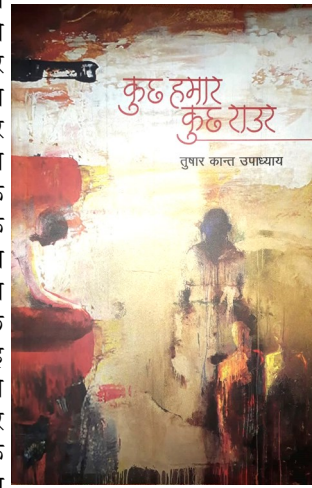

इन्हनीं में एक ओरि नेह-नाता के ध्वंस के कथा बा,त दोसरा तरफ नारी संवेदना आउर बालमनोविज्ञान से सरोकार राखेवाली कहानी बाड़ी स। कथारिपोर्ताज आ रेखोचित्र के एह में जगह दियाइल बा।

'आपन बात' के बहाना से कहाइल कथाकार के कहानी रचे के हालात, नजरिया आ प्रेरना अखियान करे जोग बा-'कहानी का ह? हमरा-रउरा आ अगल-बगल के जिनगी के दस्तावेज ह। ई जिनगी परिवार, समाज आ परिवेश से गढ़ाले। जवन घटना आ स्थिति रोज के जिनगी में सहज लागेला बाकि भीतर तक ओकर असर गुंजत रहेला, उहे कहानी में आके पढ़ेवाला के कचोटेला।एह से कि ऊ एके संगे आके अपना संवेदना से झकझोरेला आ पढ़ेवाला के कहानी के संगें हँसे,मुसकाए, आह भरे भा भीतर से कराहे खातिर विवश क देला।उमिर के ढलान प आके कहानी लिखे के विवश उहे संचित अनुभव आ संवेदना क दिहलस।' एही से कहानी के जीएवाला तुषार कान्त दावा का साथे आपन बात राखत बाड़न, त ओमें बड़बोलापन ना, आत्मबिसवास के साँच झलकत बा- 'एह संग्रह के कहानी हमरा आ रउरा जिनगी के जतरा, उतार-चढ़ाव आ सब विडंबना के बीच से मुस्कियात निकलि आवेवाली कहानी हई स। रउरा बुझाई, कहीं रउरा अपने बानीं आ कहीं

अगल-बगल खाड़ प्रत्यक्षदर्शी--बाकि ओकरा में शामिल बानीं। रउरा हरेक कहानी में अपना के मौजूद पाइब।'

अब किछु कहानियन के कथानक प गौर फरमावल जरूरी बुझात बा।आजुकाल्ह एन जी ओ बनाके अकूत धन आ शोहरत बटोरे के जवन कुचाल आउर खेला चलि रहल बा, ओकर घिनावन तस्वीर 'मारेसि मोंहि कुठाँव' कहानी में देखे के मिलत बा। समाजसेवी संगठन के प्रमुख संध्या दीदी तवायफ निशा के बियाह अपना सखी के माली से कराके ना सिरिफ शोहरत बटोरत बाड़ी,बलुक एह नेक काम खातिर खूब मान-सम्मान आ दौलतो हथियाके समाज आउर मीडिया का सोझा निशा-उमाशंकर के बेरि-बेरि पेश करत शरम से पानी-पानी कऽ देत बाड़ी। कहानी के अंत में ई मर्माहत जोड़ा अपना आँतर के पीर परगट करत बा-"हिचकी लेत लेत निशा के आवाज आइल-'काल्ह तक त खाली हमार गाँहक आ ऊ मुहल्ला जानत रहे कि हम के हईं?बाकिर संध्या दीदी के कृपा से हम पूरा दुनिया के सोझा नंगा आ रंडी घोषित हो गइनीं। हँ संध्या दीदी, तोहार एहसान हम कइसे भुलाइब?' उमाशंकर के भरल आवाज निकलल-'ओह ! बड़ा कुठाँव मरलू , दीदी !"

कवनो अलचार औरत के डाइन कहिके समाज के दबंग मनई कइसे आपन उरुआ सोझ करेलन, एकर मरमभेदी चित्र अंतिम कहानी 'डायन' में उकेरल गइल बा। कारी मइया के मरद सिपाही बाबा खुद अपना मेहरारू के डाइन होखे के अफवाह होत बा फइलावत बाड़न आ अपने छोट भाई के विधवा का संगें गुलछर्रा उड़ावत बाड़न। आखिरकार पोता संतू ई दृश्य देखि लेत बा आ तब कारी मइया के डाइन कहाए के साँच उजागर होत बा।

'कारी रात' गाँव से शहर,फेरु शहर से गाँव भागत बिसेसर के जिनगी के सुख-दुःख, उतार-चढ़ाव आ नियति का हाथे मजबूर करिया भकसावन अन्हरिया रात के हृदय विदारक दास्तान बा, जवना में अनेकानेक घटनन आ नाटकीय मोड़न के उलझाव पाठकीय मन के उदबेगत बा। बाकिर ई उपन्यास उपन्यास के सार-संक्षेप बुझात बा। एह कथानक के आधार बनाके कथाकार के एगो उपन्यास के सिरिजना करे के चाहीं।

'प्लेटफॉर्म नंबर-10' एगो अइसन कथा रिपोर्ताज बा,जवन रेलवे प्लेटफार्म पर आँखि खोलेवाला किसिम-किसिम के अपराधन में प्रवृत्त लावारिस लरिकन के रोजमर्रा के जिनगी पर केन्द्रित बा।

पत्नी आ परिवार का बीचे जाँत नियर पिसात बेबस पति के त्रिशंकु-अस कशमकश भरल जीवन के अनकहल कथा बा 'मेहरमउगा', जेकरा के लोग एही नांव से संबोधित करत खिल्ली उड़ावेला,बाकिर ओकरा मन के पीर के एहसास केहू का ना होखे।'ओकर गलती ' जहवां लरिकन के मनोविज्ञान के बारीक पड़ताल करत बा, उहँवें 'ऊ सँवरकी लइकी ' में किशोर प्रेम के उकेरे के जियतार कोशिश भइल बा।

'अइसे काहें मुस्कियानीं' दिल के छूवेवाला एगो अइसन प्रसंग बा,जवना के देखिके कथाकार के आँतर में अइसन उदबेग भइल कि ऊ अपना जिनिगी के ई पहिल कहानी लिखे खातिर अलचार हो गइल।दरअसल ई कहानी एगो रेखाचित्र ह दाना-दाना खातिर मोहताज ओह खलासी के, जवन अपना गमछी में चाउर के धूरि में सउनाइल कन ओइसहीं उठावत रहे जइसे भग्न हृदय छितराइल

सपना उठावेला।

हमनीं के पुरुष प्रधान समाज में आजुओ अइसन रूढ़ि मौजूद बाड़ी स, जिन्हनीं के बेगर तुरले नारी के उत्थान ना हो सके।तबे नू विष्णुकली पति के मुअते 'बचकालो' बनिके तरह-तरह के साँसत झेले खातिर विवश हो जात बाड़ी आ ससुरा से लेके नइहर ले बदनामी के दंश सहत अंततः खुदकुशी कके ई निठुर दुनिया छोड़ देत बाड़ी।'सइ के नोट'में जहाँ 'बनला का आगा, बिगड़ला का पाछा' वाली कहाउत चरितार्थ होत बा, उहँवें 'अकथ कहानी' में सहजीवन (लीव इन रिलेशनशिप) के जमीनी हकीकत के उद्घाटित कइल गइल बा।

एह कहानी-संग्रह में आम बा, त खासो बा-सभ अपना मन-मिजाज आ तेवर-तल्खी का संगें। भाषा में पनिगर प्रवाह बा आ शैली में बतकही के पुट बा।संवाद पात्रानुकूल बाड़न स। कतहीं शब्दावली तत्सम बा,त कतहीं खाँटी ठेठ शब्द-मुहावरा से लैस। कतहीं-कतहीं काव्यात्मक भाषा के कसीदाकारियो लउकत बा। एक-दू गो कहानी अपूर्णता के एहसास करावत झटके से खतम हो जा तारी स। बाकिर सभसे बड़हन खासियत बा इन्हनीं के विश्वसनीयता आ बतकहिए का बीचे गहिरे संवेदित करे के ताकत। कृत्रिमता आ बनावटी 'वाद' से निरपेक्ष रहिके पढ़निहार में कथारस भरे आ मानवीय संवेदना के झकझोरे के गुन एह कथा-संग्रह के मूल्यवान बनावत बा।

किताब : कुछ हमार : कुछ राउर (कहानी-संग्रह): तुषार कान्त उपाध्याय, प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नेहरू भवन, 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-।।, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070, पृष्ठ संख्या : 85, मूल्य : 115 रुपये (पेपरबैक)

सर्जना, बिस्कुट फैक्ट्री मार्ग,
निकट मगध आई टी आई, नासरीगंज,
दीघा, दानापुर, पटना-801503 (बिहार)

किताबि : एक नजर में

पुस्तक का नाम : बतकूचन
लेखक : सौरभ पाण्डेय
प्रकाशक : Redgrab Books Pvt. Ltd. 942, Mutthiganj, Prayagraj, 211003
पृष्ठ : 212 प्रथम संस्करण-2023 : ₹250/-

भोजपुरी गद्य का एह खूबसूरत पुस्तक का विषय में डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी संक्षेप में लिखतानी-

"सौरभ जी के लेखनी के समाज से गहिरे सरोकार राखत बा आ ओही से जुड़ल बिसय आ बात के कूँचल गइल बा। टोना-टोटका, नजर-गुजर, जाति-पाति, नोटबंदी, भासा, देस जइसन अनेकन बिसय कुल्हि बतकूचन में बा। सौरभ जी अपना कथन के साखी में संस्कृत अस्लोकन के भरपूर इस्तेमाल कइले बाड़न। बतकूचन सवदगरे ना बुधगरो बन पड़ल बा।"('बतकूचन' का भूमिका में से।)

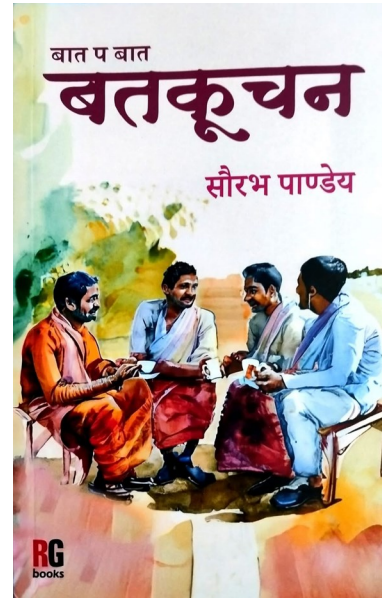

डॉ. सुनील कुमार पाठक

खरकत जमीन आ बजरत आसमान के पीड़ा में पइठल कविता

भोजपुरी के सुधी आ विद्वान साहित्यकार डॉ. ब्रजभूषण मिश्र संगठन आ साहित्यिक आंदोलन से जुड़ल रहला के साथे-साथे लगातार सृजनशील रहके भोजपुरी साहित्यो के श्री-समृद्धि बढ़ावे में अग्रणी रहल बाड़ें। गद्य-पद्य दूनू के दिसाईं भोजपुरी साहित्य के सजावे-सँवारे खातिर लगातार तत्पर ब्रजभूषण मिश्र भोजपुरी साहित्य के इतिहास आ काव्यशास्त्र लेखनो में हाथ आजमाइश कइले बाड़ें। एकरा अलावे, भोजपुरी कविता के आधुनिक भाव-बोध से जोड़के ओकर रूप-रंग निखारे के इनकर कोसिसो कम महत्वपूर्ण नइखे रहल। भोजपुरी के ई धुरन्धर विद्वान कविता के क्षेत्र में छंदबद्ध आ छंदमुक्त दूनू रूपन में आपन काव्य-प्रतिभा देखवले बाड़ें।

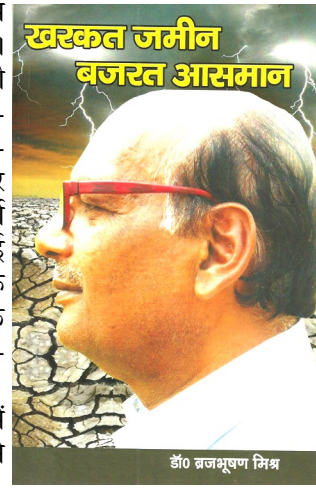

भोजपुरी गद्य में विशेष रूप से साहित्येतिहास, निबन्ध, जीवनी, संस्मरण, पुस्तक-समीक्षा, काव्यशास्त्र आ भाषा के विविध पहलुअन पर खूब मजिगर ढंग से आपन कलम चलावेवाला ब्रजभूषण जी के कवि व्यापक जीवन-बोध, गज्झिन संवेदना, नया सौन्दर्य-बोध, बिम्बन आ प्रतीकन के अनूठा प्रयोग आ शिल्पगत प्रौढ़ि के बल पर भोजपुरी कविता में आपन महत्वपूर्ण स्थान बना लेले बा।

सन 2015 में प्रकाशित 'खरकत जमीन, बजरत आसमान' -ब्रजभूषण मिश्र के कविता के समग्र रूप प्रस्तुत करेवाली कृति बिया। एह कविता-संग्रह में कवि के 28 गो मुक्तछंदी रचना, 32 गो तितकी, 9 गो हाइकु, 1 गो सेनरयू, 14 गो गीत-नवगीत-जनगीत आ विविध विषयन पर 53 गो दोहा संकलित बाड़े सं। 'अचके कहा गइल' नाम से 1990 में ब्रजभूषण मिश्र के गजल संग्रहो आइल रहे जवन काफी चर्चित भइल रहे। मतलब ई कि कविता के लगभग हर प्रचलित फॉर्म में रचे-परोसे वाला ई कवि समय आ समाज के धड़कन भाँपे-परखे के तऽ सलाहियत राखते बा ऊ देश–दुनियाँ के साथ कदम-से-कदम मिलाके चलहूँ में माहिर बा।

भोजपुरी के मुक्तछंदी कविता के इतिहास बहुत सुदीर्घ नइखे। 1970 के दशक में शुरू होके 'ई हरनाकुस मन' (1975- पांडेय सुरेन्द्र), 'बाकिर' (1978- शारदानंद प्रसाद), 'जोत कुहासा के' (1976- प्रो. ब्रजकिशोर), 'चारो ओर अम्हरिया' (1971- डॉ. स्वर्ण किरण), 'लेके ई लुकार हाथन में' (1975- डॉ. स्वर्ण किरण), 'क्षत्रज्ञ' (1972- परमेश्वर दूबे शाहाबादी), 'बात बहुबात' (1978- शिवशंकर मिश्र), 'कुछ खास किसिम के

आवाज' (1983- शशिभूषण लाल), 'टटात परछाहीं' (1982- विश्वरंजन), 'मोथा अउर माटी' (1982- रवीन्द्र श्रीवास्तव (जोगानी भाई), 'बूँद भर सावन' (1988- प्रो. ब्रजकिशोर) 'आगे-आगे' (1988 - सं.-रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव) 'जौ-जौ आगर' (2009- भगवती प्रसाद द्विवेदी) आ 'अनसोहातो' (2011- तैयब हुसैन पीड़ित) आदि के साथे-साथे ब्रजभूषण मिश्र के 'खरकत जमीन बजरत आसमान' (2015) नवबोधी कविता-संग्रहन में महत्वपूर्ण स्थान राखत बा।

आधुनिक मानव के नीचे के जमीन खिसकत जा रहल बा, खरकत जा रहल बा आ दोसरका ओर ऊपर के आसमानो ओकरा पर बज्जर गिरावे से बाज नइखे आवत। जमीन ओकरा नीचे से काहे खरक रहल बा आ आसमान ओकरा पर एतना कुपित काहे बा- ई बातो दरकिनार करे लायेक नइखे। आदमी जब झूठा अहंकार, छद्म आ बहुरूपियापन ओढ़ले गुमान में फूले ना समात होखे, ऊ 'राम नाम' के माला-फेरत आ बगल में गरकटनी छूरी-चमकावत सीना तानि झूमत–अइँठत चलत होखे, तऽ ओकर भार भला ई धरती कहिया ले सहिहें? अइसन मनई के नीचे के जमीन खरकिये नू जाई? आसमानो से हृदय के फैलाव (उदारता) आ घनीभूत होके ममत्व बरिसावे के प्रेरणा अगर मनई नइखे लेत, खाली ओकरा विराटता से अपना में अहंकारे अरजत बा तऽ अइसन दौर में ऊ मनई के बरजत बजरे नू ढाही । 'खरकत जमीन बजरत आसमान' शीर्षक के व्यंजनात्मकता आज के जिनिगी के तबाही के झलकावत नवबोधी कविता के कथ्य आ संवेदनो के बारीकी से उभारत बिया।

एह संग्रह के 'कविता' नामनी रचना के पंक्तियन में कवि के कहनाम बा - कविता त भुखाइल/पेट-पीठ एक भइल -/आदमी का लगे बइठल बिया/जेकरा माथ पर/बजरत-ढ़हत आसमान बा/गोड़ तर खरकत जमीन बाटे।

एह पंक्तियन के पढ़त निराला के कविता 'भिक्षुक' सहजे इयाद आ जात बिया। भिक्षुक के फोटोग्राफिक वर्णन करत निराला जी लिखले बाड़ें-

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक/चल रहा लकुटिया टेक।

ब्रजभूषण मिश्र के कवितो ओही आदमी लगे सटके बइठल बिया जेकर पेट-पीठ मिलके एक हो गइल बा, दिन-रात जांगर ठेठवला के बादो जेकरा अँगना में हाँड़ी चढ़े के कवनो भरोसा नइखे बाँचल-

जांगर ठेठवला के बादो/हाँड़ी उलाटल बा/त टोला पड़ोस से खपड़ा पर आग/माँगियो के/का हो सकेला?

एजवा ई ध्यान देबे लायक बा कि कवि के स्वर एह लाचारी आ बेबसी के हालतो में उबियाहट वाला नइखे। कवि जानत बा कि समय आ समाज जब अँगड़ाई आ करवट ली तब अलाव भा 'कउड़ा' के भीतर छिपल आग का अनुकूल हवा भा फूँक मिल जाई तऽ ओकरा लहोक में अत्याचार, शोसन आ आडम्बर के लंका खुदे धनक उठी-

कउड़ा बा-/त आग बा/आग बा-/त लहोक बा/लहोक बा-/त धाह बा/गरमी बा।

x x x

एक आध/खर-पतवार डाल!/फूँक मार लहराव/लहोक उठी/बूझ रहल आग जिन्दा हो जाई।

कवि के एगो कविता एह संग्रह में बिया- 'लंका आ रावन।'

एहमें कवि के समझदारी साफ बा-

बाहरी लंका का अलावे/सबका भीतरी बसल बा/कई-कई गो लंका/कई-कई गो बा रावन।
एह सगरी लंका आ रावन के धनका देबे खातिर जवन आग के जरूरत बा कवि ओकरा के भउर में से उटकेरत जगा देबे के सलीका जानत बा।

शब्दन में नया-नया अर्थ के विधान नवबोधी कविता के खास विशेषता रहल बाटे। अज्ञेय जी लिखले रहलें कि- ''बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।'' नवबोधी कविता के कवि ओह बासन पर नया चमक चढ़ावे के भरपूर कोसिस कइलस। ब्रजभूषण जी यद्यपि एह संग्रह के एगो कविता में
लिखले बाड़ें कि-
कहाँ बाँचल बा शब्द/जवन खोल सके अर्थ (शब्द आ अर्थ)
बाकिर अगिले कविता में शब्दन के शक्ति में उनकर भरोसा जाग उठत बा-
आखर-आखर धनकाईं/शब्द धिकाईं/आ पिजाईं/जरल इच्छा के कोइला/लहकाईं/ दिमाग के लोहसारी में/खीसि के भाँथी चलाईं/समय के नेहाई पर/जरूरत के हथौड़ा से/पीटीं/इयाद के बसिया पानी में/डुबा के/शब्द के धार तेज करीं। (शब्द के धार दीं)

एह संग्रह में एगो कविता बिया- 'मछरी'। अज्ञेय के कविता में मछरी जिजीविषा के प्रतीक रहल बिया। ब्रजभूषण मिश्र के कवितो में मछरी आदमी के जिनिगिये के चाह के प्रतीकात्मक अभिव्यंजना बिया-
लय-ताल मिलत नइखे/प्राण रहलो पर आदमी/जीयत नइखे/आदमी कुछुओ बड़ुए ना/जीयत-तड़फड़ात मछरी बड़ुए/जे समय-मछुआरा के/जाल में/फँसल बड़ुए। (मछरी)

ब्रजभूषण मिश्र के एह कविता-संग्रह में बदलत गाँवन के तस्वीरो बड़ा बारीकी से उरेहाइल बा-
कहाँ गइल संगीत/जाँत के/मूसर के, ढेंकी के? अब गाँवन में 'फ्लावर मील' के गूँजत बा आवाज।'' (कतना बदल गइल बा गाँव)
गाँवन में आ रहल बदलाव के चलते किसानी जीवन के हलकानि के बड़ी गहिराई से महसूसत कवि किसान के तुलना एगो तपस्वी से तऽ कर देत बा बाकिर ओकर मन एजवो शांत नइखे दिखत। ऊ 'हुआँ-हुआँ' के सियारन के बोली से चिहा जात बा। बेहतर रहित कवि चिहइला से आगे बढ़िके सब मजा चभोर रहल बहुरूपियन के चेहरा नोच लेबे खातिर अपना शब्दन के जरिये हाथ बढ़ा दिहित।

एह संग्रह के छन्दबद्ध रचनन के रूप में गीत-नवगीत-जनगीत के जवन प्रस्तुति भइल बा ओहू में नवबोध के स्वर प्रखर बा। हिन्दी में नयकी कविता आ कहानी के समानान्तर 'नवगीत' के जवन शुरूआत भइल रहे ओही से प्रभावित होके भोजपुरी कवियो लोग नवगीत आ जनगीत का तरफ डेग बढ़ावल। ब्रजभूषण जी गीतन के दुनियो में ओही भावना आ विचारन के साथ जुड़ल बाड़न जवना के अभिव्यक्ति उनका मुक्तछंदी रचनन में भइल बा। एजवो उहे गाँव, उहे मनई, उहे व्यवस्था, उहे अकुलाहट आ बेचैनी, शोसन आ सासत के उहे रूप आ संघर्ष के उहे भरोसा भा विश्वास– गीतन के पंक्तियन में पिरोवल गइल बा। उनका गीतन में जिनिगी के जथारथ चित्रित बा। बिना लाग-लपेट के ऊ कहत बाड़ें-
जवन कुछ लंगटे उधार बा-/उहे सब गीतिया हमार बा/ x x x/देह बा सिरिस के छिला गइल/छाँह बाँटे गाछ के

बिला गइल!/दुखे देह पारत भोंकार बा/
लाग गइल एकरा बोखार बा।
राजनीति के चकुरचाली पर गीतकार के निसाना बाटे-
राजनीति त बेमौसम के लुकवारी भाँजत बाटे/रंगदारन के चलती देखीं/भलमनुसन के पाँजत बाटे/जइसे प्रेत चहेटले बाटे/बाकिर थथमल पाँव। (बारूद पर गाँव)
बारूद पर खड़ा गाँव के एक-न-एक दिन धधकलो स्वाभाविके बा-
धुआँ-धुआँ सगरो बा/हवा अँउजाइल/सोन्ह महक माटी के/राख से तोपाइल/घरे-घर, दलानी में शंका के बास/साँझ पहर राही डाले कहाँ पड़ाव !
(धधक रहल गाँव)

जनगीत का रूप में 'सखि सुखवा लूटे रजधानी कि बड़का लोग काटत बाटे चानी' के लोकप्रियता मिल सकत बा। गोरख पांडेय रमाकांत द्विवेदी 'रमता', दुर्गेन्द्र अकारी, शिवकुमार पराग, महेन्द्र गोस्वामी, विजेन्द्र अनिल, सुरेश कॉटक, केशव रत्नम, बिनय राय बबुरंग, प्रकाश उदय, कुमार विरल आदि जनगीतकारन के परम्परा में ब्रजभूषण मिश्र के तऽ नइखे राखल जा सकत बाकिर एह संग्रह के कुछ गीत जनगीतन के करीब जरूर बाड़े सन।

संग्रह में विविध विषयन पर कुछ बहुत बढ़िया दोहा संकलित बाड़े सं जवना के कहन आ रचाव में नवीनता देखे के मिलत बा-
उहँवे शहर घुसल मिली,
जहँवा राखब पाँव।
गाँवे चलके देख लीं,
नइखे बाँचल गाँव।।
नित्य नया बा उग रहल
कंकरीट के गाछ।
जिनगी जंगल के भइल
सबका लगल कवाछ।।
बीत गइल आधा सदी बदलल ना संदेश।
कवनो एगो लोथ अस घुसुक रहल बा देश।।

एह संग्रह में 'हाइकु' आ 'सेनरयू' तऽ बड़ले बा कुछ 'तितकी' नाम से रचनो बाड़ी सं। ब्रजभूषण जी के एगो 'तितकी' बिया-
चिरकुट-चिरकुट/जिनिगी के सीयेला/कहिये से मुअत बानीं-/जीयेला।
जिनिगी के लुगरी सिअते, आम भोजपुरिहा मनई मउअत के दुआरी जाके ठाढ़ हो जाला। भोजपुरी क्षेत्र के आम मनई के सामाजिक-आर्थिक दशा में आजो कवनो बदलाव देखे के नइखे मिलत।

एह कविता संग्रह के बारे में एकरा बैक कवर पेज पर डॉ. रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव के भोजपुरी में लिखल आ भीतर में 'प्रकाशकीय' आ 'पीठिका' के रूप में क्रमशः आसिफ रोहतासवी आ डॉ. अशोक द्विवेदी जी के टिप्पणी हिन्दी में बा। कवि के 'आपन बात' भोजपुरिये में लिखाइल बा, ई एह भाषा खातिर सुखद, सुभग आ संतोष वाली बात बिया। बढ़िया रहित भोजपुरी कविता-संग्रह के पीठिको भोजपुरिये में तइयार भइल रहित।

कुल मिला-जुलाके देखल जाव तऽ एमें कवनो शक-सुबहा नइखे कि ब्रजभूषण मिश्र एगो मजिगर कवियो के रूप में एह संग्रह के जरिये भोजपुरी के भाग जगावत नजर आवत बाड़ें। हँ एक बात हम जरूर जोड़े के चाहब कि उनकर विचार-प्रवण गद्यकार उनकरा कवि के कहीं-कहीं कबो-कबो धकियावत नजर आवत बा जवना चलते कविता के स्वतःस्फूर्ति भा अनायासपन, जवना के वर्ड्सवर्थ 'Spoutanious overflow' कहले बाड़ें, संकोच भा अझुरहट में पड़ गइल बाटे। बाकिर साँच पूछल जाव तऽ ई आज के कविता खातिर कवनो खास बात नइखे रह गइल। जहाँ जिनिगिये में एतना अझुरहट होखे कविता ओहसे अलहदा कइसे रही?

पटना/ईमेल- skpathakpro@gmail.com,
मो.-9431283596

वंदना कुमारी

अइसन निबंध भोजपुरी में का, हिंदियो में दूलम बा

'बतकही' भाग-2 में डॉ. तिवारी जी के कुल्हि सतरह गो निबंध बा। निबंधन के विषय गाँव-घर के जिनिगी का उपयोग में आवे वाला चीज बा, चाहे गँवई संबंधन के बात जुड़ल बा। एह निबंधन में कुछ भोजपुरी के नामी पत्रिकन में भी छपल बा बाकिर अधिकांश रचना पहिले पहल प्रकाशित हो रहल बा। दाँत-पुरान 'पाती' में पढ़े के मिलल रहे आ 'कलसा' पटना से प्रकाशित भोजपुरी अकादमी के पतरिका में। 'गमछी' कलकत्ता का पत्रिका में पढ़े के मिलल रहे। कुल मिला के पाती, आग, घीव, सैकिल, कलसा, गाँती, कउड़ी, पनही, लोकनी, परास आदि विषयन्ह पर लिखल अइसन निबंध भोजपुरी में का, हिंदियो में दूलम बा।

भोजपुरी में निबंध लिखल ओहू में छोट-छोट विषयन्ह पर बहुते कठिन, अबहिन तक, बनल-लागल बा। हिन्दी में ई विधा मराठी से आइल आ आपन जर जमा देलस। एकरा में रचनाकार के व्यक्तित्व आ विद्वत्ता दूनो पढ़ला पर बाइस्कोप के फिलिम लेखा साफ दिखाई देला। अपना संस्कृति के चेहरा भी एह में लउकेला, साथे ओकर सही रूप में एकरा में साफ ऐनक निअन झलकेला। ई काम रचना खातिर बहुते कठिन हो जाला। बाकिर रचनाकार अपना के आउर रचना के रम्यता (सुनराई) के कवना नजरिया से देखतारन आ उरेहतारन, ओकरा के सभका सामने दरसा देत बाड़न, ईहे रम्य रचना के विशेषता ह। लेखक विषय के कवना कोना से देखत बाड़न आ भाषा उनका के कतना परगट करे में मदद कर रहल बिया। लेखक के भोजपुरी भाषा पर अधिकार बा आ उहाँ के देखे के नजरिया भी बहुते साफ बा। जइसे पूरा जीवन भोजपुरी प्रदेस में बीतल होखे। छोट से छोट बात में बड़ से बड़ बात, सास्तर पुरान के ओठँगन के साचे कहल एह निबंधन के विशेषता लउकत बा। हिन्दी के वैयक्तिक निबंधन से बतकही के निबंधन के जो तुलना कइल जाव, त कवनो निबंध हलुक ना बुझाई। लेखक के बरोबरे कोसिस बा कि विषय आ ओकर उपयोग का तत्व पर भी बरोबरे नजर राखल जाव। जइसे हिन्दी के हजारी प्रसाद सोचत होखीं आ ओकरा के विद्यानिवास जी अपना भाषा में लिखत होखीं।

निबंधकार के जीवन भोजपुरी संस्कृति के कुल्ही रंग में बोथाइल बा। साथे भाषा में लय आउर कथन के मेल के लर कतही टूटत नइखे। 'समरपन' में उहाँ के साफ लिख देले बानीं कि हमरा बाबूजी आ मतारी से जवन भाषा जीअन भर सुने के आ प्रयोग कइल मिलल, हमरा खातिर ऊहे साहित्य के मानक भाषा बन गइल बा। ईहे होखहीं के चाही भी। काहे कि एह भाषा में कवनो दुराव-छिपाव नइखे। हृदय के बात बिना कवनो लगाव-बझाव के ऊपर उतरात चलि आवत बा।

विषय कवनो होखे ओकर विवेचने महत्व के होला। रम्य रचना में विषय का साथे लेखक के मनोगत कार्य ऊपर झरना के पानी के झाग का सङे

मिलल सरूप में परगट होला। 'बतकही' के निबंध एकर परमान बा। ई निबंध बतावत बाड़न कि खाइल पिअल, पढ़ल लिखल कतहूँ छीपे ना। रचना में ओकर सत सगरो उतरात-छीपत रहेला। अइसन निबंधन के जरूरत बा भोजपुरी में लिखे के आउर छपवावे के। निबंधन के रम्यता त एही से परगट होखत बा कि एगो निबंध पढ़ल शुरू कइला प ओकरा के बीचे छोड़े के समरथाय केहू पाठक में ना हो सके। मन पढ़े खातिर आउर अरगाये लागत बा। भाषा में कविता आउर गद्य में कविता एह निबंधन के विसेसता बा। अइसने रचना हमरा भोजपुरी के बढ़ाई, हिमालय पर चढ़ाई।

तिवारी जी के बतकही-1 के फिर से प्रकाशन होखे आउर बतकही-3 भी जलदिए निकलो, एही आशा का साथ हम बतकही का निबंधन के स्वागत कर रहल बानी आउर रउआँ सभ का हियरा में ओकरा प्रति आपन अनुराग जाहिर करत बानी।

किताबि के नाम- बतकही भाग-2
लेखक- डॉ. नंदकिशोर तिवारी
प्रकाशक- किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी
प्र0 सं0 2020 ई0 मूल्य 250/-

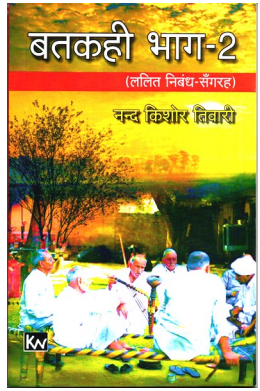

लेखक लोगन से आग्रह

1. सँझवत का साधारण/विशेष अंकन खातिर लेखक लोग से आग्रह बा कि **प्रकाशनार्थ रचना पत्रिका का ई मेल पर भेजल जाउ।**

2. आपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना हिंदी यूनिकोड (मंगल फांट) में टाइप क के भा अपना मोबाइले से टाइप क के पत्रिका का ई मेल पर भेजल जाउ। कवनो तरह के पूछताछ भी एही मेल पर।
sampadaksanjhavat@gmail.com

3. हाथ से लिखल भा टाइप कइल रचना के फोटो भा पीडीएफ जनि भेजीं, काहेंकि ओकरा पर कवनो विचार ना होई।

4. सामान्य रूप से टाइप कइल सामग्री भेजीं, **ओकरा के सजाईं जनि**, नाहीं त ओकरा के पत्रिका लाएक बनावे में ओह रचना के छूट जाए के खतरा ज्यादा बा, काहेंकि ओकरा पर विचार अंत में होई, ऊहो जगह बँचला का बाद।

5. रचना भेजे से पहिले एकर ध्यान राखल जाए के चाहीं कि

क– वर्तनी लोक ध्वनि का अनुरूप होखे भा बहुस्वीकृत होखे।

ख– जवन शब्द हिंदी में प्रयुक्त होखत होखे, ओकरा वर्तनी से छेड़छाड़ जनि कइल जाउ, भोजपुरी के विभक्ति-प्रत्यय लगला का बादे ओकर वर्तनी बदलल जा सकता।

ग– फुल स्टॉप के प्रयोग, चंद्रविंदु का जगहा अनुस्वार के प्रयोग अउर नुक्ता के प्रयोग **वर्जित** बा। ***वर्जित प्रयोग वाली रचना पर विचार ना कइल जाई।***

घ– शब्द (हिंदी) का सङहीं कमा, इनवर्टेड कमा, ब्रैकेट, डैस, हाइफन, कोलोन डैस आदि के प्रयोग हिंदी के मानक वर्तनी का अनुरूप होखे के चाहीं।

ङ- **लेखकीय प्रति डाक से भेंजे के प्रबंध नइखे,** कार्यालय से प्राप्त करेके परी।

विशेष कठिनाई का स्थिति में संपादक से बात कइल जा सकता। बात करे से पहिले 9831649817 पर एगो व्हाट्सएप मैसेज जरूर कर दिहल जाए।

पुस्तक समीक्षा

डॉ. शारदा पाण्डेय

संवेदना के भित्ति पर मूल्यबोध के चित्र : भिहिलात बताशा जइसन

रचनाकार जवना युग आ समाज में जीएला, जब ऊ सामाजिक विषय पर कलम उठावेला तऽ ओह युग खातिर ओकर रचना समकालीने कहल जाई; ई बात दोसर बा कि हर युग के स्थिति, समस्या आ वातावरण भिन्न होला। दोसरा काल खण्ड में आवते पहिलकी अभिव्यक्ति तत्कालीन हो जाली सन। साहित्यकार बुद्धिजीवी रहलो पर संवेदनशील आ भावुक होखेला। ऊ अपना के सामाजिक दाव से अलगा ना सके। अतना अन्तर प्रायः लउक जाला कि कुछ लोग खाली यथातथ्य परोसेला, केहू मसाला लपेटेला आ केहू सभ कुछ देखत-सुनत-गुनत मानवीयता आ नैतिकतापरक मूल्य के भी समस्या, घटना, परिस्थिति के संगे परोस के समाज में जागरण आ भाविक परिष्कार के प्रयास करेला। ओकर भाव विद्रूपता आ आक्रोश के अंकन भलहीं करी, बाकिर ओकरा संगे चेतना के उदात्तता के सहेजी, नष्ट-भ्रष्ट के नियति ना सिरजी। कथा शिल्पी श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी जी कवि-हृदय भी हई। इहाँ के गाँव-नगर दूनू परिवेश के निकटता से जिअले बानी। आवश्यकता आत्मीय जन के भी कहाँ कठोर, निर्भय आ तनी स्वार्थांशी बना देले आ भावात्मकता कब कवनो दुःखी खातिर त्याग के वर्षा कऽ देले ई अनुभव लेखक के सूक्ष्मदर्शी दृष्टि आ वृत्ति से नइखे बाँचल। कहानियन में भाव, परंपरा, यथार्थ, मूल्य, ह्रास, टूटन, विघटन के बीच राजनीतिक स्वार्थी-चालाकी, दाँव-पेंच के नटीय पैंतरा तऽ बड़ले बा बाकिर आदर्श के बचावे के एगो सतर्क दृढ़ इच्छाशक्ति भी बा। कहानीकार समकालीन संवेदनशून्यता, हीनता आ आत्मकेन्द्रित भाव के तूरे के चाहता। एह संग्रह में सोरह कहानी बाड़ी स। कुल्ही के अलगा तेवर बा, लगभग कुल्ही में मूल्य रक्षा के विकलता छटपटातिया।

'बबुआ में बाबूजी' कथा में बाप-बेटा में समय के अनुसार वैचारिक विभेद रहलो पर ओह चउकी पर बइठला पर बछरू के आँखि के घूरल बबुआ अनुभव कइले, खेत के कुल्ही काम सम्हरले, काका के व्यंग्य सुनले-समझले, अपना व्यक्तित्व के अंतरो बता दिहले, बाबूजी के व्यवहार के विश्लेषण करत अपना कष्ट-भय अतीत के इयाद करत पढ़ल, नौकरी कइल सोचत रहले। एगो अंतर्द्वन्द्व ईहो मन में चलत रहल कि पढ़नी हम अपना छात्रवृत्ति से, ट्यूशन करि के आ सूने के परेला कि ई कुल्ही बाबू जी के परिश्रम आ त्याग से भइल, तऽ मन में विरोध के लहर जागेले। गाँव के अनपढ़ लइकी से बिआह भइल ऊ बाबूजी आ घर परिवार के सेवा टहल में लगली। नोकरी से गाँवे अइला पर हम बाबू जी के कबो टोकबो करी खों खातिर, मेहरारू के कहला पर नशाबाजो अन्योक्ति से कहि दीं, एक बेर खर्चो के हिसाबो मँगनी, बाबूजी तनी अनमनाह दिखलन, फेरु पहिलहीं अइसन हँसी-ठठ्ठा में डूबि

गइलन। हम अइला पर शहर के बात करीं ऊ खेत-खरिहान, हित-नाता के छः बरिस के बेटा घोड़ा बने के कहलस त डॉटि दिहनी । ऊ बाबा के बारे में बतवलस। मेहरारू बाबू जी के मेहनत के बात करसु हमरा शहरीपन पर व्यंग्यो करि देसु त हमरा मन में एगो तुलना त चलते रहे। तब अवरू जब खेत में काम करे के मजदूर तेयार ना होखे, कहे कि 'शहरी लोगन के का विश्वास।'

आजी के खोंखत सुनि के खेत बेंचि के शहर चले के कहनी तऽ उनुकर आँखि छलछला गइल, कहली, महंथ बबुआ तऽ सपनो में अइसन ना सोचलन। तू जनमभुईं बेचे के बात करऽतार।" (अइसन पीड़ा राजपथ आ पगडण्डी में भी बा)। चउकी पर बइठि के मजूरी देत मजूरन के हँसत-खिलखिलात जात देखि के जइसे पहिलका कुल्ही विरोध आ असंतोष आक्रोश के भाव कहाँ बिला जाता ? उनुका इहे बुझाता कि 'अब हम बबुआ नइखीं, बाबू जी हो गइनी। ई आत्मीय भाव पात्र के पूरा चरित्र के छापि लेता आ परंपरित भाव-संस्कार जीत जाता।

बाट जोहत' तीन उपेक्षित नारियन के भाव चरित्र आ संस्कारशील आस्था के ज्वलंत गाथा हऽ।

भारतीय नारी के सर्वोत्कृष्ट भावोद्दीप्त उदात्तता के चित्र ह। एमें कुल्ही नारी चाहे लंगड़ी चाची होखसु, दीपा भउजी होखसु, चाहे गंगा फुआ होखसु- केहू अपना कवनो कमी के कारण तिरस्कृत आ निराद्दत ना भइल। सभके पीछे समाज पुरुष प्रधान दृष्टि, सामाजिक असंतुलित न्याय कारण बा। घर के आर्थिक विपन्न स्थिति के कारण कलकत्ता जाए वाला नवयुवकन के आपन चारित्रिक बिचलन रूप लोलुपता आ स्वार्थ कारण भइल, जेकर पीड़ा आजीवन एह नारियन के सहे के परल। चाचा के मौत के सूचना से चाची के बेहोश होके गिरल लंगड़ापन के कारण भइल। ऊ पहिला बेर विधवे बनि के ससुरा अइली आ जीवन भर परिवार के सेवे में बिता दिहली। कवनो विरोध ना कइली। दीपा भउजी साँवर रहली, मातादाई के दाग वाला मुँह देखि के सुधाकर गइलन त कलकते के होके रहि गइलन। ई सोहाग-राति ना जनली। गंगा फुआ क बिआह एगो सुन्दर फौजी युवक से भइल, बाकिर ऊ कबो गंगा फुआ के लगे ना आइल। सासु पोता के मुँह देखला में असफल होके गंगे फुआ के दोष देसु नागिन कहसु, फुआ का करसु ? फूफा एच.आई.वी. के शिकार रहलन। ईहो सुहाग रात ना देखली, जिनिगी गंगे नीयर बहत बीतल। तीनो नारी के आपन चरित्र, भाव, विचार पवित्र पतिव्रता के कथा रहल।

'चिरई के जान जाय' एगो सिपाही के साहसिक कदम उठावे के कहानी हऽ जे एगो लंपट के लोलुपता के पात्र बनल गर्भवती देवकली के पंचायत के सामने पत्नी रूप में स्वीकार कइ के सामाजिक सम्मान दिआवे के प्रयास कइल। ओकरा पहिलका बेटा के आपन नाँव दीहल। बाकिर ऊ भुला गइल रहे कि गाँव में ओकर पत्नी अबहीं तक ओकर राह जोहतिया। गाँवे लवटला पर फेरु पंचायत क आगा छितेसर आ देवकली के पहिलहीं नीयर अपराधी बने के परत। पत्नी सौत के आ ओकरा बेटा के स्वीकार ना कइली। उनुकर जेठ खेत के लालच में छितेसर के अपमानित कइलन। ऊ फेरु अपना पहिलका पत्नी के छोड़ि के देवकली के संगे गाँव छोडि दिहलन। न्याय आ अंतर्मंथन के दुविधा में उसिनात ई कहानी संवेदना के औचित्य पर प्रश्न

उठावतिया। 'कवि सम्मेलन आजु के कवियन के गैंगीय स्वार्थी कुत्सित दृष्टि, धनाहरण आ नीतिगत सोच के दाँव-पेंच के नग्न उद्घाटन बिआ। राजनीतिक कुटिलता कहाँ नइखे ? प्रकृति के पृष्ठभूमि पर उरेहल 'बून-बून टिपटिपात मन' अपना अतीत के जीअत धन के लोग पर गूँग पत्नी के संगे जीवन बितवला आ भरल-पूरल लरिका-पतोह पोता से गुलजार मन के अकेलापन के झेलला के करुण स्थिति के बयान बा। 'खोंता' किसान क किसानी छोड़ के मजदूर बनि के शहर में जाके झोपड़पट्टी में रहला के विवशता, सफेदपोश समाज के सम्भ्रांत वर्ग में गहरा पइसल निर्भय पशुता आ राक्षसीपन के अमानवीय गंध से बसात आदमखोर चरित्र के पर्त-दर-पर्त के उद्घाटन बा, जहाँ मनुष्यता तार-तार हो जातिया। बेटी-पतोह के इज्जत नसाता, एगो घर के लालसा में नीति, नीयत के विर्गहण के जीअल कठिन हो जाता। दरिद्रता के अइसन चित्र लेखक खिंचले बा कि दरिद्रतो लजा जातिया। ओपर आगि में घीव कि एगो बोर्ड पर लिखल बा - 'हम सुनहरे कल की ओर बढ़ रहे हैं।' परभू के मन हुलियाए लागल। ऊ खँखारि के बलगम फेंकलन- 'आक्थू। प्रश्न बा, एह समाज से कइसे लड़ल जाउ ?

'बीच के जिनिगी' का कवनो जिनिगी हऽ ? निम्न मध्यमवर्ग के लइका कतनी प्रतिभाशाली होखो, साधन के अभाव में ओकर क्षमता सिर धुने लागेला। ना घर के प्राणी समाज में उठे बइठे लायक, ना साधन आगा बढ़े लायक। ऊ डोनेशन कहाँ से ले आओ आ कइसे अपना योग्यता के सिद्ध करो, आपन भविष्य सुधारो। दोसरा ओर ऊ 'पोतन अइसन खोमचा उठावे के नियति भी ना स्वीकार सके। ई मध्य वर्ग के मानसिक संस्कार हऽ। परिणाम बा कि ऊ सपनो में एही यथार्थ के भयंकरता देखि के चिचिआता। सपना पर महतारी बाप के अवश झुर्रीदार चेहरा देखि के ओकर विवशता भोकार देके रो उठतिया। आजु के नवयुवकन के एही भयावह स्थिति के जीये के परता। ई मार्मिक कहानी मन के हिला देतिया। 'हाथी के दाँत' जीवन के दुविधापूर्ण भाव के व्यक्त करतिया। जहाँ हम दुःखी के सहायता करे के चाहतानी, बाकिर कवनो व्यवधान अइला पर हम निर्धन व्यक्ति के सच्चाई पर संदेह करतानी। जब आपन संदेह झूठ होता त व्यक्तित्व आ भाव के सत्य आ देखावटी रूप के स्वरूप सोझा आ जाता। ओइसे आज के भ्रष्ट समाज में प्रायः संदेह साँचो हो जाता। बाकिर लेखक एगो सकारात्मक भाव लेके कथान्त करऽता। 'राजपथ आ पगडण्डी' आज के नवयुवकन के स्वार्थी, माता-पिता के प्रति संवेदनशून्यता के भाव के ज्वलंत समस्या राखता। आजु लइका के आपन सुख प्रमुख लागता। कपटाचरण बढ़ गइल बा। वृद्धावस्था के प्रति निर्मम भाव पसर रहल बा। 'बहुरूपिया' में अभिभावक के प्रति एगो विचित्र उद्दण्ड भाव के समावेश बा कि जबले लइका कमात नइखे ओकर अनादर, प्रतारण बा पत्नी तक के स्तर पर। बाकिर नोकरी पावते सबके मन में प्रेम लहराये लागता। नायक के विचार में ई 'बहुरूपिया' पन हऽ। देखावा हऽ, सभके पइसा से प्यार बा, व्यक्ति से ना। एहू योग्य बनावे के साधनात्मक भाव के नकारात्मकता दीहल उचित नइखे लागत।

लेखक संग्रह के कहानियन के सोद्देश्य रचना करता। समाज में जागरूकता, जीवन के प्रति स्वस्थ चेतना जगावल ओकरा समकालीन चिंतन के

पृष्ठभूमि में बा। तहरे बदउलत, प्यार के दू-चार दिन एच आई.वी. के प्रति समाज आ व्यक्ति (स्त्री-पुरुष दूनू) में जागरूकता होखे के आवश्यकता बतावता। साथ ही पॉजिटिव भइला पर निराश ना होके स्वस्थ जीवन बितावे के प्रति लालसा राखे के भाव देता। 'ऊहापोह' कहानी में हरखनाथ के अंतर्ध्यान के दुविधा उपायित बा। पत्नी के त्याग आ प्रेरणा से आगे बढ़े वाला हरखनाथ पत्नी के दिवंगते भइला पर जब दोसर बिआह के मंडप पहुँच गइलन तबे उनुका कान में पत्नी के शब्द गूँजे लागल कि "बड़ आदमी भइला पर रउआ हमरा के भुला तऽ ना देब ?" पत्नी के प्रति उनुकर प्रेम के लहर अइसन प्रखर भइल कि ऊ 'ना पंडी जी, ई बिआह ना होई' कहि के ठाढ़ हो जातारन। ई भलहीं प्रेम के तीव्रता होखो, बाकिर नायक के अस्थिर चित्त के उभारता, जवन सामाजिक दृष्टि से बहुत अच्छा ना कहाई। उनुका ई निर्णय पहिलहीं लेबे के चाहत रहे। काहें कि बिआह के सपना सजवले लइकी के एमे कवन दोष रहे ?

लेखक समकालीन लगभग कुल्ही संवेदनशील विषय, लक्ष्य वाक्य आ सामाजिक दायित्व के बिन्दुअन के आधार बनवले बाड़न। 'बोझा' 'लड़की पढ़ाओ' के प्रपूर्ति हऽ, त 'जंगल में मगल' पर्यावरण सुरक्षा के आवश्यकता बोध के प्रकाशन। यद्यपि एमें नाटकीयता बा। अंतिम क शीर्षक कहानी 'भिहिलात बताशा जइसन' लेखक के किशोरावस्था के तरल-स्वाभाविक रागात्मकता के माधुर्य भाव के अविस्मरणीय भाव-बोध के सशक्त अभिव्यक्ति हऽ। प्रारम्भिक वाक्य 'चिन्हलऽ कि ना ?' से कथा के प्रवाह प्रेयसी के रूप वर्णन से आरम्भ होके नायक के मन के अन्तर्जागृत तार के झंकार आ प्रेम के रंग-सुगंध के तीव्र आकर्षण के व्यंजना से परिपूरित बा। दूगो वाक्य में प्रेम मधु के मिठास भरि गइल बा, 'तहरा ओठ के दूधिया चाननी अस निश्छल हँसी के निरेखि के हमरा आँतर में रजनीगंधा के अनगिनत फूल अनसोहाते गमगमा उठलन स। अइसन लागल जइसे सेवाती के बूनी नियर तहार सबद बून-बून रिसत हमरा सीप अस हिरदया में पइसि गइल होखऽस आ भितरी-बहरी अनगिनत जोन्ही मतिन मुक्तादीप जगमगा उठल होखऽस।' एह भाव वर्णन के प्राकृतिक भंगिमा के समानान्तर राखि के पवित्रता, प्रेम के सान्द्रता, गम्भीरता, प्रफुल्लता, प्रतीक्षा आ ज्योतित भाव के अविरलता के जवन अंकन बा, ऊ प्रथम प्रेमांकुर के प्रखरता के अंतर्ध्यान बनि गइल बा। लेखक के स्वीकारोक्ति बा कि 'हमार किशोर मन तहरा रूप के सरोवर में गोता लगावे के बेचैन हो उठल रहे।'

आजुओ विवाहित भइलो पर मन अतीत में चलि जाता। मेहरारू पति के ऑखि में देखि के भाव के ताड़ि के शशि के गृहस्थी के दिशाईं प्रश्न उठा के ओह प्रेम कके आकाश में झाँकत मन के यथार्थ के भूमि पर ले आवे के प्रयास करतिया। बाकिर पति के पहिला प्यार के प्रकाशन आ ओकर परिणति नइखे भुलात। नायिका आजुओ ओतने सुन्दर लउकतिया । शशि के ई कहल कि, 'छिः। भला इहो कवनो प्यार हऽ ?' एगो झटकार रहल। अमीरी-गरीबी के खाई के ओर एगो संकेत रहल। दोस्ती सम्भव हो सकेले, बाकिर पति-पत्नी के संबंध समाज -परिवार ना स्वीकारी। शशि पवित्र मन से अपना पति से मिलवली। उनुकर मन गंगा जल अइसन पवित्र रहल। आजु सालन के बाद मिलला पर भी ऊहे भाव नायक के मन में जागता, एगो कृतज्ञता

के साथ कि हमरा के व्यवहार के नया ज्ञान देबे वाली तूही बाड़ू। हमरा बेमारी में तू तन-मन-धन से हमार सेवा कइलू। ई तहरे दीहल जीवन दान हऽ। कतना भाव नायक के मन में आवता, ऊ शशि के तरहत्थी के अपना लिलार से छुआवता। फेरु एगो चुंबन लेबे के भाव छटपटाता। तले पत्नी कचौड़ी के प्लेट लेके आ धमकल, भाव बँटा जाता। 'भीतरे ना जानी का सदबदाता। पसीजत भिहिलात बताश जइसन। बहरी झमाझम बरखा होखे लागत बा।'

ई मिठास मानसिक भावात्मक अभिसार क संकेतक हऽ । पूरा कथा नायक के भाव के भोग आ अतृप्ति दूनू के अभिव्यक्त करऽतिया, जेमें शशि के संयमित व्यवहार अपना उदात्तता से खड़ा बा ।

एह संग्रह में द्विवेदी जी के भाषाधिकार क प्रशंसा करे के पड़ी। प्रकृति के चित्र भाविक वर्तमान स्थिति के अभिव्यक्ति में सफल बा। मुहावरा के प्रयोग से कथन आ अर्थ में चारुता आइल बा। हँसुआ के बिआह में खुरपी के गीत', 'किस्मत पर झाड़ू फेरावल' अर्थ के भगिया देता। 'अन्हरिया के अजगर फन काढ़ि के फुफकारे लागल', 'सपना में जइसे केहू कील ठोक दे' अइसन प्रयोग स्थिति, भाव, वातावरण कुल्ही के व्यक्त कऽ देता। कहानी में गति आ रोचकता ले आवे में संवाद के विशेष महत्व होला। लेखक एह दृष्टि से संक्षिप्त आ सशक्त संवादन के सृष्टि कइले बा।

सरकारी प्रयास आ समकालीन समस्या के अनेक बिन्दुअन के स्पर्श के वाला ई कहानी संग्रह खाली वर्तमान के कथ्य ना बनि के विकास के सार्वकालिक प्रयोजनीयता के सशक्त उत्तर बा। अइसन श्रेष्ठ रचना खातिर श्री द्विवेदी जी बधाई के अधिकारी बानी। साहित्य आ देश के ऊहाँ से बहुत पावे के विश्वास बा।

भिहिलात बताशा जइसन
(कहानी संग्रह) :
भगवती प्रसाद द्विवेदी,
प्रकाशक : हिन्दुस्तानी एकेडेमी, 12डी, कमला नेहरू मार्ग, प्रयागराज-211001, पृष्ठ 114, मूल्य : 115

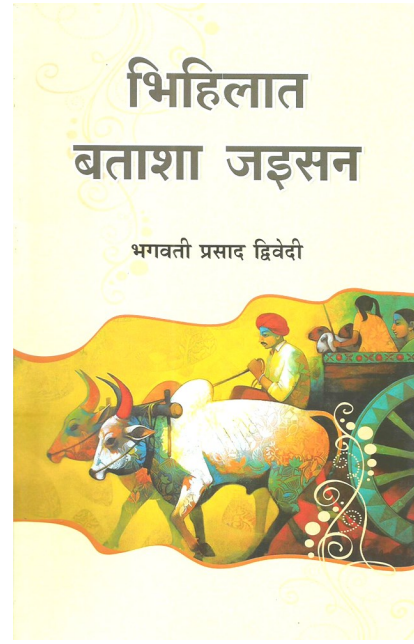

142, बाघम्बरी गृह योजना, भरद्वाजपुरम्,
प्रयाग-211006

डॉ. अरुण मोहन 'भारवि'

भोजपुरी में आइल सेसर महाकाव्य

बड़ा दिन के बाद भोजपुरी में एक बेर फेनु सेसर महाकाव्य लिखाइल बा। एह टटका महाकाव्य के कवि बानी भोजपुरी के नामचीन साहित्यकार श्री शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम' आ इहाँ के काव्य -कृति के नाम बा 'सेसर संत'। परशुराम जी के अत्याचार के विरोध करे वाला मानल जाला। जब तक एह दुनिया में गैर बराबरी, शोषण आ अत्याचार रही - परशुराम जिन्दा रहिहन - एही से शायद परशुराम के अमर मानल गइल बा।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमान्श्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥

परशुराम जी महान तपस्वी, संत, साधक आ अपराजेय योद्धा रहीं। इहाँ के खासियत रहे कि अपना शत्रु के शाप देके भस्म कर सकत रहीं।

अग्रतः चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः ।
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि ।।

भोजपुरी में महाकाव्य लिखे के परंपरा 1964 ईस्वी में श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' का 'साहित्य रामायण' से मानल जाला जे के श्री आदिनाथ चंद्र विद्यार्थी जी अपना कौशिकायन (1973) श्री सर्वेंद्र पति त्रिपाठी 'सहृदय' सत्य निष्ट हरिशंचंद्र (1976) श्री राम बचन सिंह यादव 'अँजोर' निरधन के घनश्याम (1982) से अउर पोढ़ होत चल गइल। एही परंपरा के नया कड़ी के रूप में अब आइल बा प्रीतम जी के सेसर संत। एकरा पहिले कवि के हिन्दी में अश्वथामा पर लिखल प्रबंध महाकाव्य प्रखर पुरुष, हिन्दी उपन्यास सुन्दरवाती, गज़ल संग्रह 'गुन्च ए गज़ल-ज़मीं से आसमाँ तक', वेदानुगमन आ गणेश दत्त किरण के पद्यानुवाद किरण बावनी (सं. डॉ. भारवि) के रूप में पाठकन के दिल-दिमाग में आपन जगह बना चुकल बाड़ी स।

भारतीय काव्यशास्त्र में महाकाव्य के परिभाषा आ व्याख्या आचार्य भामह, आचार्य दण्डी, आचार्य रुद्रट, आचार्य विश्वनाथ कइले बानी जेकरा अनुसार महाकाव्य में सात से कम सर्ग ना होखे के चाहीं आ एकरे नायक महान गुणन वाला, चतुरोदात्त भाधीरोदात्त, वीर, साहसी आ सौंदर्यप्रेमी होखे के चाहीं अउर कथा का अंत में ओकर हार ना होखे के चाहीं।

प्रीतम जी कुछ नया सोचे आ नया लिखे में विश्वास रखे वाला कवि हईं। इहे कारण बा कि सेसर संत के पुराण के कार्बन कॉपी नइखे मानल जा सकत काहें कि ई नया जीवन मूल्यन से जुड़ल रचना बिया। एकर भाषा, विचार के धार, प्रवाह, रस, छंद आ अलंकार के चमत्कार देखते बनता। कवि देश काल आ नया सोंच के तहत नायक का चरित्र के और प्रभावी बनावे खातिर ओकरा में फेर-बदल करे में इचिको संकोच नइखे कइले। हो सकता पोंगा पंथी पाठकन के अच्छा ना लागे बाकिर एह से महाकाव्य के रूप आउर निखरल बा।

कवि सौंदर्य प्रियता के आग्रही होला- प्रीतम जी एकर अपवाद नइखन। अप्सरा रूपमती के गदराइल स्थूल सुघराई के बखान देखि के कवनो ब्रह्मचारियो के

कुछ-कुछ होखे लागी।
चंदा लेखा मुख मंडल पर नैन आम के फारी
गोर बदन पर केशराशि, जइसे हो बदरी कारी
गर्दन सुघर सुराही जइसन, अउरी अरुण कपोल
वक्ष प्रांत, रमणिक शिखर पर दूगो मणि अनमोल
मंद उदर आ कटि प्रदेश के, दृश्य मनोहर लागे
मन के चैन देख लिहला पर, क्षण में जइसे भागे
नूपुर के ध्वनि व्यथित हृदय के, दे दे जइसे त्राण
मृत शरीर में जइसे अमृत से परि जाला प्राण
कवि के अनुसार प्रेम के बिना दुनिया बेकार बिया -
प्रेम बड़ा अनमोल रतन ह, हर प्राणी के प्राण
तृप्त प्रेम से श्री हरि भी हो जालन दया निधान

सेसर संत का भाषा में प्रवाह आ कथानक में कसाव देखते बनता। एगारह सर्गन में विभक्त आ विविधतापूर्ण छंदन के प्रयोग जइसे- सार सरसी, डमरु ताटंक, वीर (आल्हा) आ पंझटिका- एकर खास विशेषता मानल जाई काहे कि छंदन पर जोरदार पकड़ कवि के कलम के दमदार भइला के वकालते करता।

एह बात में इचिको संकोच नइखे कि "सेसर संत" भोजपुरी के एगो सेसर महाकाव्य के रूप में साहित्य आ पाठकन के दिलन में आपन एगो खास जगह बनाई आ उचित मान-सम्मान पाई। कवि के एह सुघर, दमदार कृति खातिर बहुत-बहुत बधाई।

समीक्ष्य पुस्तक : सेसर संत
कवि : शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'
प्रकाशक :- कुमुद प्रकाशन, बक्सर
प्रकाशन काल 2015 / दाम 151 / पृष्ठ 108

- आर्य आवास, बंगाली टोला, बक्सर, बिहार।

सँझवत के अगिला अंक

डॉ. नंदकिशोर तिवारी विशेषांक

प्रकाशनार्थ सामग्री भेजे से पहिले एक बार बात क लिहल ठीक रही ताकि एकहीं विषय के आवृत्ति मत हो जाए। संपर्क सूत्र पत्रिका का आरंभ में मिल जाई।

पत्रिका के **फेसबुक अकाउंट Bhojpuri Patrika Sanjhavat** पर अलग से रचनाकार लोगन से रचना आमंत्रित कइल जाई। ओहिजा संवाद के सुविधा रही। जे रचनाकार लिखल चाहत होखे, मन बना ले आ उपयुक्त समय पर संवाद करे।

पुस्तक समीक्षा

विष्णुदेव तिवारी

भोजपुरी कविता के विकास-यात्रा के पड़ताल करे वाला ग्रंथ 'भोजपुरी कविता के इतिहास'

'भोजपुरी कविता के इतिहास' डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के शोध-ग्रंथ ह जे २०२४ में मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली से प्रकाशित भइल रहे। एह ग्रंथ के विशेषता के बारे में बात करत अकादमी के सचिव डॉ. अरुण कुमार झा लिखत बाड़े कि– 'हमरा समझ से भोजपुरी साहित्य के इतिहास जे अबतक लिखाइल बा, ओह सब के ग्रहण करे योग सामग्रियन के समेटत आ ओह सब के त्रुटियन के छोड़त एह इतिहास के अद्यतन करे के सफल कोशिश मिश्र जी कइले बानीं।'

नव अध्याय आ ४६८ पृष्ठ में फइलल एह ग्रंथ में भोजपुरी कविता के उत्पत्ति से लेके आजतक के इतिहास क्रमवार दर्ज बा।

इतिहास का ह ? इतिहास दर्शन के मतलब का होला ? भोजपुरी साहित्य के इतिहास लेखन के समस्या का बाड़ी स ? भोजपुरी में इतिहास-लेखन के परंपरा का रहल बा? भोजपुरी काव्य के इतिहास के काल-विभाजन आ नामकरण के परंपरा का रहल बा ?- एह सब आवश्यक विषयन पर विवेक सम्मत ढंग से विचार करत इतिहास-लेखक कई-कई अन्य विद्वान लेखकनों के विचारन के उद्धृत करत बा, जे ओकरा गहिर अध्ययन, मनन आ अनुशीलन के परतोख बा।

दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह,पं गणेश चौबे,डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय,डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव, रासबिहारी पाण्डेय, डॉ. रामाशीष प्रसाद, डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित', डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य आ नागेन्द्र प्रसाद सिंह जइसन विद्वानन के काल विभाजन के ऊपर बात करत डॉ. मिश्र भोजपुरी कविता के जवन काल विभाजन करत बाड़े ऊ एहतरी बा-

१. सिद्ध आ नाथ काल– ७०० ई से ११०० ई

२. लोकगाथा-लोकगीत काल–११०० ई से १४०० ई

३. आध्यात्मिक काल– १४०१ ई से १९०० ई

४. देशभक्ति काल– १९०१ ई से १९४७ ई

५. रचनात्मक आंदोलन काल भा भाषायी जागरण काल– १९४८ ई से १९७७ ई

६. विकास काल– १९७८ ई से २००० ई तक

७. समकालीन काल या विस्तार काल– २००१ ई से चल रहल बा।

भोजपुरी कविता के प्रारंभ बतावे के क्रम में डॉ. मिश्र सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में रहल सम्राट हर्षवर्धन के काल तक जा तारे आ उनका समकालीन महाकवि बाणभट्ट के 'हर्षचरित' में लिखल गइल दू कवियन ईसानचंद्र आ बेनी भारत के नाँव ले तारे जे भोजपुरी में कविता करत रहले। डॉ. मिश्र के कहनाम

बा कि 'हर्षचरित' के अनुसार ई दूनों कवि लोग संस्कृत आ प्राकृत से हट के ओह समय के गँवई बोली में कविता करत रहे। ई गँवई बोली भोजपुरिए होई काहें से कि ईसानचंद्र के गाँव बिहार राज्य के शाहाबाद जिला के पीरो भा पिअरो रहे, जे भोजपुरी क्षेत्र ह। ओह घरी एह क्षेत्र के 'प्रीतिकूट' कहल जात रहे।

एह तरह से 'भोजपुरी कविता के इतिहास' के पहिला अध्याय 'पूर्व पीठिका' समाप्त होत बा।

ग्रंथ के बाकी अध्यायन में काल विभाजन वाला क्रम के अनुसार भोजपुरी के कवि आ उनकरा काव्य के बारे में बात कइल गइल बा। एगो अध्याय कई उपशीर्सकन में बाँटल गइल बा। उदाहरण खातिर पाँचवा अध्याय– 'देशभक्ति काल' के लिहल जा सकता बा जेकरा भीतर ई सब उपशीर्षक बाड़न–'उद्देश्य', 'पृष्ठभूमि', 'राजनीतिक हालत', 'आर्थिक हालत', 'सामाजिक हालत', 'धार्मिक सांस्कृतिक स्थिति', 'साहित्यिक स्थिति', 'राष्ट्रीय धारा के प्रमुख कवि आ कविता', 'भोजपुरी लोकगीतन में देश-भगती', 'समाज-सुधार, दलित विमर्श आ नारी विमर्श के कवि आ उनकर काव्य', 'पूर्ववर्ती धारा के विकास' आ 'सारांश'।

पाँचवाँ अध्याय के उपशीर्षक 'पृष्ठभूमि' में राष्ट्र के स्वरूप के स्पष्ट करे के क्रम में डा मिश्र डा सुनील कुमार पाठक के शोध-ग्रंथ 'छवि और छाप'(राष्ट्रीयता के आलोक में भोजपुरी कविता का पाठ) से कथन उद्धृत करत बाड़े– "... विभिन्न विद्वानों ने राष्ट्र के लिए कुछ सत्ताओं (विशेषताओं) की अनिवार्यता मानी है, जैसे देश सम्बन्धी एकता, धर्म की एकता, वर्ग की एकता तथा ऐतिहासिक पूर्वजों के प्रति गौरव की एकता। राष्ट्र में प्रमुख रूप से भौगौलिक,

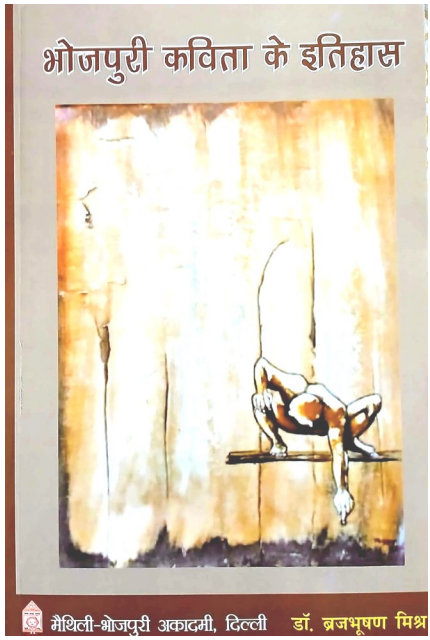

राजनीतिक और सांस्कृतिक इकाइयाँ पूंजीभूत रहती हैं। इन तीन तत्वों के संकोच या विस्तार के अनुसार राष्ट्र का स्वरूप भी संकुचित या विस्तृत होता है।"

एह अध्याय के उपशीर्षक 'राष्ट्रीय धारा के प्रमुख कवि आ कविता' में नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह 'ईश', शिवशरण पाठक, मदन मोहन सिंह, रघुवीर नारायण, मनोरंजन सिंह, गुंजेश्वरी मिश्र 'सुजस', छांगुर त्रिपाठी 'जीवन', सुंदर (कजरी गायिका), शायर मार्कंडेय, चंचरीक, सरदार हरिहर सिंह, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, राम विचार पाण्डेय, प्रसिद्ध नारायण सिंह, दूधनाथ सिंह आदि कवि लोग के जीवन आ उनकरा कवितन के उदाहरण दिहल गइल बा। अइसहीं 'समाज सुधार, दलित विमर्श आ नारी विमर्श के कवि आ उनकर काव्य' उपशीर्षक के अंतर्गत हीरा डोम, भिखारी ठाकुर, बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव 'ढीबरी

लाल', महेंद्र शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, विश्वनाथ प्रसाद शैदा आ रसूल मियाँ के जीवन-वृत्त आ कविता रखल गइल बा। महेन्द्र मिश्र, श्याम बिहारी तिवारी देहाती, लक्ष्मण शुक्ल 'मादक', बिसराम, मन्नन द्विवेदी गजपुरी, कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' जइसन लोग 'अन्य तरह के कवि आ उनकर काव्य' उपशीर्षक के अंतर्गत रखल गइल बाड़े।

द्रष्टव्य बा कि दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह अपना ग्रंथ 'भोजपुरी के कवि और काव्य' में जे काल विभाजन कइले बाड़े ओह में सन् १९०० ई से १९५० ई तक के समय के आधुनिक काल (जेकर दोसर नाँव राष्ट्रीय काल आ विकास काल बा) कहल गइल बा आ एह अवधि में जवन कवि लोग भइल बाड़े ओह में ढेर जाना श्रृंगारोपरक कविता लिखले बा लोग। डॉ. मिश्र के इतिहास ग्रंथ में एह काल के कई महत्वपूर्ण कवि लोग के नाँव नइखे आ पावल जे दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के इतिहास ग्रंथ में प्रमुखता से आइल बा। डॉ. मिश्र एह बात के जानते बाड़े, एकर पता उनका १०/०४/२०२५ के लिखल एगो फेस बुक पोस्ट से चलत बा। डॉ. मिश्र के कहनाम बा कि– "कवनो भाषा का साहित्य के इतिहास ओकरा कविता के इतिहास के आधार पर लिखाला। जहाँ तक भोजपुरी भाषा का साहित्य के इतिहास के सवाल बा , बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ के 'भोजपुरी के कवि और काव्य' खोज पूर्ण बा। अपना दम भर सामग्री उहाँ का जुटवले बानी। सबसे बेसी उहाँ के मेहनत संत कवियन के बाद जवन श्रृंगारिक आ राष्ट्रप्रेम के कवियन के आ उनका कवितन के खोज बा, में लखार बा। एक से एक कवि आ कविता। अइसन कवियन में बीसू, महादेव, खलील, अब्दुल हबीब, बच्ची लाल, लालमणि, बिहारी, भैरो, ललर सिंह, रूपन, कैद, रसिक किशोरी आदि के नाम शामिल बा। परवर्ती इतिहास लेखक लोग एह में चूक कइले बा। हमहूँ समय सीमा आ ग्रंथ का आयतन के धेयान राखत चाह के भी अइसन कई लोग के छोड़ देले बानी। बाकिर अइसन भुलाइल बिसरल लोग पर लिखहीं के पड़ी। हम लिखब आ छूटल लोग पर लिखब।"

ग्रंथ के छठवाँ, सतवाँ आ अठवाँ अध्याय सुराज मिलला के बाद के कवि आ उनकरा कविता के लेके लिखाइल बा आ मजगर लिखाइल बा। डॉ. मिश्र के कोशिश रहल बा कि हर ओह कवि के, जेकरा रचना से भोजपुरी साहित्य के कुछुओ हित सध रहल बा, अपना ग्रंथ में स्थान दिल जाउ। ई सद्भाव सामान्य इतिहास रचयिता खातिर ठीक बा। डॉ. मिश्र के इतिहास सामान्य इतिहास ना ह, एह से एह में कुछ कवियन के उपस्थिति खटक सकत बा। अइसहीं, कुछ नीक-नीक कवियन के जवन कविता उद्धृत कइल गइल बा ऊ सामान्य कोटि के बा, ईहो बात खटक सकत बा।

विकास काल (१९७७-२०००) के उपशीर्षक 'नवकी कविता' पर बात करत डॉ. मिश्र लिखत बाड़े– "एह काल में नया-नया बोध आ सोच के कवितो खूब उजिआइल आ ओकरा विकास में पुस्तक प्रकाशन आ पत्रिका सब के योगदान रहल। शशिभूषण लाल के 'कुछ खास किसिम के आवाज' एह कालावधि के सबसे पहिला नवबोधी काव्य संग्रह रहे। छंद से छुटकारा आ बौद्धिकता के बात। दूसर संग्रह सम्पादित रहे 'आगे-आगे' जवना में लगभग अठारह कवियन के मुक्तछन्द के कविता रहे आ सोच आ शैली से ई सब कवि मुक्तछन्दी नवबोधी

कविता के धारा के पोढ़ बनवलें। बहुत कवि लोग अपना-अपना कविता संग्रह में गीत-गजल के साथ मुक्तछन्द के कवितन के जगह दिहले रहलें। महेन्द्र गोस्वामी के 'एगो मेहरारू' आ प्रकाश उदय के 'बेटी मरे त मरे कुँवार' पूरा क पूरा मुक्तछन्द में रहे, बाकिर लयात्मक रहे।"

जइसन पहिले से चलत आइल बा, एहू इतिहास ग्रंथ में पहिले कवि लोग के बारे में एगो परिचयात्मक टिप्पणी बा आ तब उनकरा एगो अथवा एगो से अधिका कविता के उदाहरण। कवि लोग के परिचय में यथावश्यक किफायत से काम लिहल गइल बा।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के 'भोजपुरी कविता के इतिहास' विशुद्ध रूप से कृतिकार के अपना श्रम आ मेधा के फल ह। डॉ. अर्जुन तिवारी भी 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' लिखले बाड़े। बड़हन कलेवर में विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से छपल ई इतिहास भानुमती के पेटार्ही ह, जेकरा में पन्ना के पन्ना आने के रचना से उड़ावल गइल बा। एगो अन्य इतिहास डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के बा जे इतिहास त ह, बाकिर ओमे विचार तनिक बेसी बा, व्यवहार तनिक कम। रास बिहारी पाण्डेय के 'भोजपुरी भाषा के इतिहास' जइसन कि एकरा नाँवें से जनात बा, भाषा के इतिहास ह, साहित्य के ना। नागेन्द्र प्रसाद सिंह आ डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' अपना इतिहास-पुस्तकन में, कथ्य के लेहाजे समदर्शी नइखन रह सकल लोग। 'पीड़ित' के इतिहास-पुस्तक 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रूपरेखा' (२००४) ४७ पृष्ठन में भोजपुरी साहित्य के प्रमुख विधा सब के ऊपर लिखल गइल तत्कालीन आलेखन के एगो संग्रह ह जेमें कविता के इतिहास (भोजपुरी काव्य: उद्भव आ विकास) पर मात्र सात पृष्ठ (१२ से १८) बा। अइसन आलेख भोजपुरी साहित्य-लेखन में थोक के भाव से लिखल गइल बाड़े।

दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के कालजयी इतिहास ग्रंथ १९५८ में छपल रहे। बाद के इतिहास-लेखक लोग अपना समय के साथ चलत अपना समझ आ दृष्टि के सहारे इतिहास-लेखन कइल। डॉ. मिश्र के इतिहास में प्रायः २०१९ के पहिले के सामग्री शामिल बा। कुछ लोगन के एह ग्रंथ में एके बतिया के दोहराव आ दोसरा के कहलका के उद्धरण के बहुलता से अनस बर सकत बा। सभ्य, सुशिक्षित आ वैज्ञानिक विवेक से भरल लोगन के समाज से लगाइत एगो जिज्ञासु पाठक तक एके तहेदिल से पसन करिहें, एमें संदेह करे के कवनों गुंजाइश नइखे जनात।

किताब के नाँव :
भोजपुरी कविता के इतिहास
प्रकाशक :
मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली
पहिल संस्करण : २०२४
पृष्ठ संख्या : ४६८ मूल्य : ५००/-

तिवारीपुर, पो. दहिवर, जि. बक्सर (बिहार)

भगवती प्रसाद द्विवेदी

लोक आ समकाल का बीचे सेतुबद्धता

रचनाकार ओइसे त साहित्य के कई गो विधा में लिखेला, बाकिर कवनो खास विधा में नाँव-जस हासिल होला आ कबो-कबो त अइसनो होला कि रचनिहार के पसंदीदा मूल विधा से अलगा हटिके कवनो दीगर विधा में पहिचान मिलेला। इहँवें 'जस-अपजस विधि हाथ' के उक्ति चरितारथ होला। शिक्षा, साहित्य, संस्कृति के त्रिवेणी डॉ शारदा पाण्डेय के सिरिजनशीलता के कई गो आयाम रहल बा,जवना में हिन्दी आ भोजपुरी के गद्य-पद्य के निबंध, आलोचना, लोक साहित्य, कहानी, कविता जइसन विधा शामिल बाड़ी स। बाकिर एगो वैचारिक आ ललित निबंधकार का रूप में उहाँ के खास मुकाम हासिल कइले बानीं आ एकर टटका सबूत बा उहाँके चरचा में रहल निबंध-संग्रह 'रस-बोध के एने-ओने'। इहो बात अखियान करे जोग बा कि विधा चाहे कवनो होखे, उहाँके आँतर में लोक, सेहतमंद परिपाटी आउर भारतीय संस्कृति एह कदर रचल-बसल बा कि एकर भाव व्यंजना हरेक जगहा मौजूद मिली आ अतीत का सँगें आधुनिकता के सेतुबद्धता उहाँके रचनाशीलता के मकसद रहल बा। ई भावबोध भरबित्तनो में साफ-साफ झलकत बा।

सुपर्णा कथा, अतीत अमृत हऽ जइसन दमदार कविता-संग्रह आ लुतुकी-हाइकु-संग्रह के बाद छपल 'भरबित्तन' कविता-संग्रह में तकरीबन छोट-बड़ पाँव दर्जन कविता संग्रहीत बाड़ी स, जवना में पौराणिक, ऐतिहासिक आउर लोककथा के मिथकन के बखूबी इस्तेमाल कइल गइल बा। एकरा पहिले 'अतीत अमृत हऽ' के 'प्राक्कथन' में हम लिखलहूँ रहलीं- 'एकइसवीं सदी के एह गरदनकाट समय में बाजार के पइसार घर में ले हो गइल बा आ ओही के नतीजा बा कि नेह-नाता, रहन-सहन,जनम-मरन-सभ में भौतिकता के उठान आ नैतिकता के भसान साफे झलकत बा। एक ओर गँवई संस्कृति के लोप, उहँवें दोसरा ओर अपसंस्कृतियन के भेड़ियाधसान आ मृगमरीचिका में दम तूरत आदमीयत। डॉ शारदा पाण्डेय के टटका कविता-संग्रह 'अतीत अमृत हऽ' लोक से लेके समकाल तक के एही त्रासद स्थितियन आ आँतर के छटपटाहट के जियतार ढंग से खुलासा करत बा।'

'भरबित्तन' के 'कवि-कथ्य' के ई पाँती गौरतलब बाड़ी स- 'साहित्य समाज, राष्ट्र आ संस्कृति के प्रति सकारात्मक प्रतिबद्धता हऽ। साहित्यकार अपना व्यष्टि के अनुभव के समष्टि तक पहुँचावे के प्रयास करेला; जेमें ओकर आपन सामाजिक परिवेश, राष्ट्रीय संवेदनात्मक स्थिति, वैचारिक समरसता, भौगोलिक-ऐतिहासिक पारिस्थितिक सन्निवेश आ परिमाणात्मक दाय के पूँजी निहित रहेले। ओकर आपन संस्कार आ स्थिति, विचार आ दृष्टियो समावेशित होले। एही से ऊ लोक आ शास्त्र, उल्लास आ नीति लेके चलेला। खाली आपन स्वार्थ-मनोविलास, शाब्दिक व्यायाम के झाँकी दीहल ओकर कर्त्तव्य ना हो सकेला। ओमें व्यापक सामाजिक लयता के संदेश होला। ऊ 'केवल

मनोरंजन न होकर कवि का कर्म होना चाहिए/उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए' के व्यंजना लेके चलेला। 'भरबित्तन 'में प्रायः एही भाव के स्पर्श लिहल बा। प्रश्नन के मर्म तक पहुँचे के यत्न बा, जे अतीत से वर्तमान तक सतत गतिमान बा।'

शीर्षक कविता 'भरबित्तन' संग्रह के एगो लमहर कविता बिया। एकरा के काव्य कथा कहल ज्यादा उपयुक्त होई। दरअसल भरबित्तन भोजपुरी के एगो लोकप्रिय लोककथा ह,जवना में कद-काठी से उपहास के पात्र बनल भरबित्तन आखिरकार नाइंसाफ़ी के खिलाफ राजा से लोहा लेबे खातिर तय्यार हो जात बाड़न, बलुक कुदरत के सहजोग से जीतो हासिल करत बाड़न फेरु त चारू ओरि उन्हुकर जै-जैकार होखे लागत बा। संग्रह के भरबित्तनो के अइसने करिश्माई शख्सियत बा, जवन सही माने में सामाजिक सरोकार के बदउलत उन्हुका के राजसी सुख आ जै-जैकार दियवावत बा। कविता के अंत एह पाँती से होता-

'ऊ एगो जीयत किंवदंती बनि गइलन
अपना देहि के कारन ना मनलन हार
बुद्धि के साह बनि गइलन।'

अइसने अभिप्रेरणा से भरल बिया 'परबतिया उठिके खड़ा भइल' शीर्षक कविता, जवना में नारी सशक्तीकरण के भाव व्यंजना कूटि-कूटि के भरल बा। एकरा उलट आचरण करेवाली गांधारी से कवयित्री के एगो मौजूं प्रश्न होत बा-'आपन पत्नी आ मातृधर्म, राजधर्म, न्यायधर्म काहें ना निभवलू?' एही तरी धृतराष्ट्र के जीवन चरित से सबक लेत ई सनेस अखियान करे जोग बा-'तू धृतराष्ट्र कबो जनि बनिहऽ!' महाभारत के अइसन कई गो इतिहास रचेवाला चरित्र बाड़न, जिन्हिका के संग्रह के कविता के विषय बनावल गइल बा आ ओह मार्फत से सकारात्मक सनेस देबे के उतजोग कइल गइल बा, जइसे-युधिष्ठिर, कुन्ती, हिडिम्बा वगैरह। एह में प्रायश्चित करत कर्ण बाड़न, त हर बेरि हरावे वाली संयोगितो बाड़ी।

संग्रह में एगो लमहर काव्य कथा बा-'आनन्दी अमलतास तर'। नौ खंड (पन्ना) में बन्हाइल ई कथा ओह आनन्दी के ह,जे संयोगिता नियर आपन सभ किछु तियागे के ना,हक हासिल करे के हिमायती बाड़ी आ अमलतास अपना हरकत से जइसे शुभकामना देत होखे-'अमलतास हिलल/गो लहर उठल/आ मधुर मुस्कान में नियति के तीर तना गइल/अमलतास सनसना गइल।' अइसहीं बुद्ध-आनंद के बतकही 'सागौन वन में' प्रश्नाकुलता में बीतल सउँसे जिनिगी के एगो अइसन आकलन बा, जवन वन,पंछी, अँजोरिया के निःशब्द, स्तब्ध कऽ देत बा।

किताब में आजु के जरत-बरत मुद्दन से जुड़िके ई सवालो ठाढ़ कइल गइल बाड़न स-'ई देश कहाँ जाई?','के बा दोसिहा?','भगवान बोलऽतिया?' वगैरह।

दोसरा ओर राष्ट्रीय चेतना जगावे का गरज से 'हमरा बाटे गर्व देश पर 'शीर्षक गीतो बा। रोमानियत से सराबोर लोकधुन पर आधारित गीत 'पिया आइके जो जइहें' अभिभूत करेवाला बा। धिकतर कविता मुक्त छंद में रचाइल बाड़ी स, बाकिर जहाँ-तहाँ गीत आ लोकधुनो के प्रभाव के झलक मिलत बा।

अतीत से वर्तमान ले एह कवितन के कथ्य समकालीन समय-संदर्भ से जुड़ल बा आ पढ़निहारन में सकारात्मक सोच जगावे के दिसाईं जरूरी पहल करत बा, जवन संग्रह के

महाभारत कालीन चरित्रन के मन:स्थिति पर केन्द्रित लेखिका के कहानी-संग्रह 'ओह दिन 'आइल रहे आ एह संग्रह में कमोबेश ऊहे कथानक कविता में गढ़ाइल बा। कई रचनाकार अइसन प्रयोग कइले बाड़न, जइसे अज्ञेय, धर्मवीर भारती वगैरह। दूनों विधा के अलगा अलगा आस्वाद आ ग्रहणशीलता बा।

सहजता एह संग्रह के खासियत बा आ सहजता से गम्हीर बात कहे के हुनर लेखिका के लमहर साधना के सूचक बा। तत्सम शब्दन के भरपूर इस्तेमाल भइल बा, बाकिर कतहीं-कतहीं लोकोक्ति-मुहावरा के चटख प्रयोग भाषा के जियतार बना देता।

बिसवास बा, अतीत से मौजूदा दौर के हालात से जोड़िके गहिर संवेदना जगावत 'भरबित्तन ' के स्वागत होई।

किताब : भरबित्तन (कविता-संग्रह) :
लेखक : डॉ. शारदा पाण्डेय,
प्रकाशक : सत्येन्द्र प्रकाशन,
30,पुराना अल्लापुर, प्रयागराज-211 006,
पृष्ठ संख्या : 152, मूल्य : 400 रुपये

सर्जना, बिस्कुट फैक्ट्री मार्ग,
निकट मगध आई टी आई, नासरीगंज,
दीघा, दानापुर, पटना-801503 (बिहार)

किताबि : एक नजर में

भोजपुरी साहित्य : परम्परा आ परख,
लेखक : डॉ. ब्रजभूषण मिश्र
प्रकाशक : सर्व भाषा ट्रस्ट, प्लॉट नं.- 65-66, जी-ब्लॉक, गली नं.- 20, राजापुरी उत्तमनगर, नई दिल्ली-59 मूल्य- 250 प्रथम संस्करण- 2021

'भोजपुरी साहित्य : परम्परा आ परख' में कुल अठाइस गो आलेख बा। ई आलेख प्रायः साहित्यकार लोग के किताबन के भूमिका चाहे समीक्षा के रूप में लिखल गइल रहे। कुछ आलेख कवियन के विषय विशेष से प्रेम के रेखांकित करे के क्रम में लिखाइल रहे। एह अठाइस आलेख में अठारह गो, कवि के कविता आ कविता पुस्तक पर केंद्रित बा। बाकी दस गो आलेख गद्य के विभिन्न विधा के पुस्तकन पर केन्द्रित बा। एह विभिन्न विधा में निबंध, उपन्यास, कहानी, भाषा-विज्ञान, साहित्य के इतिहास आदि शामिल बा।(दू टूम)

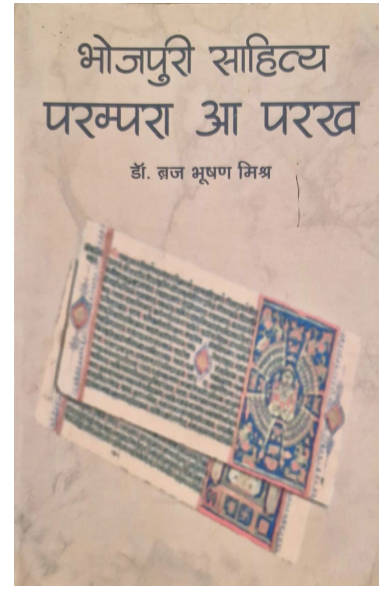

समीक्षात्मक टिप्पणी

नीक-जबून

पुस्तक- नीक-जबून विधा- डायरी लेखक- डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल
प्रकाशक- नमन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 72, योगेंद्र विहार, नौबस्ता, कानपुर
प्रकाशन वर्ष- 2019 पृष्ठ सं. 120 मूल्य- (अजिल्द)110/- (सजिल्द)220/- रुपये मात्र
पुस्तक मँगावे खातिर संपर्क- मो. 9807605604 (प्रकाशक) 9831649817 (लेखक)

भोजपुरी के अँजोरिया : डायरी 'नीक-जबून'

रामदेव शुक्ल

नदी का बोलिया में बने रसियाव रे !
सरगो से नीमन बाटे सइयाँ के गाँव रे !

जेकर लिखल आ गावल गीत हवे, उनही की डायरी के एगो झलकी- "हमनी किहाँ बरती (व्रत करेवाली) खा पी के आराम ना करेलिन, आपन मए कामो निपटावत रहेलिन। ओइसहूँ बइठियो के रहेके होखे तबो दूधवाली खीर

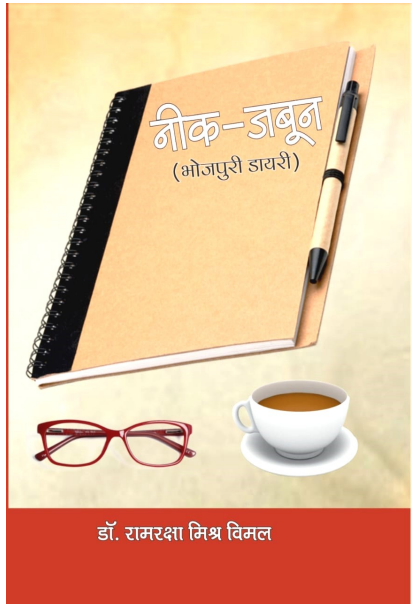

नुकसाने पहुँचाई, भलहीं बुझाउ भा नाहीं। रसियाव खाईं आ टन-टन काम करत रहीं, देंहि हलुक लागेले। लउकियो -भात का पाछा ईहे बिग्यान बा। गैस आ एसिडिटी खातिर लउकी रामबाण हटे। भात से गैस बनी आ लउकी ओकरा के फरकावत रही अउर ऊर्जो बनल रही। धन्य रहन हमार पूर्वज, बात-बात में बिग्यान। हम त आजुओ कहबि कि लजाईं सभे मति कि रसियाव देखि के लोग रउआँ के गरीब आ पुरान बूझे लगिहें। लउकी-भात आ रसियाव का परंपरा के जिंदा रहे दिहल जाव। एही प लउकजाबरि, अलुमकुनी, गादा के दालि, महुआ के लाटा, बजड़ा आ जोन्हरी के चिउरी, साँवा के भाका, टाड़ुनि के लाई आ दरिया-दही पर बात चले लागल अउर हमार कुछ बंगाली मित्र कबो अचरज से आ कबो भकुआ के हमनी के देखे लगलन।"

विमल जी भोजपुरी बिज्जन पर एक ठो किताब लिखि देईं त ई कुल्हि मल्टीनेशनल मॉल आ बिग बजार में बिकाए लागी। भूजल तीसी आ तीसी-तिल-सोंठ मिलल गुड़ बिकाते बा। बिहार के एगो कंपनी के विज्ञापन जगह-जगह

भीति पर लिखाइल बा- 'सत्तू ऑन, गैस गॉन'। बिमल जी जवने-जवने चीज के बखान कइले बानी, ऊ सब जेकरे जबान पर चढ़ि जाई ओकरा पास्ता आ पिज्जा नाहीं रुची।

विमल जी कवि गीतकार हरिवंश पाठक 'गुमनाम' के गीत के एक पाँती के मुखड़ा बना के एक दिन की डायरी में लिखले बानी - 'दू-तिनिए दिन के उहाँ के संग आ पितृवत स्नेह के खुशबू आजुओ मन-प्राण में ओसहीं बसल बा आ जब-जब मन के आङन गमगमाला त उहाँका बरबस इयादि आ जाईले-

मटिया क गगरी पिरितिया क उझुकुन
जोगवत जिनगी ओराइ
सगरी उमिरिया दरदिया के बखरा
छतिया के अगिया धुँआइ।" (गुमनाम)

'उझुकुन' की जगहि पर राखे लायक शब्द हमके त कौनो भाषा में नइखे लउकत। 'सगरी उमरिया दरदिया के बखरा'- भाई लोगन के बँटवारा (जवने के प्रेमचंद अलग्योझा "लिखले बानें) में केहू के बखरा में अन्न धन मिले आ दुसरका की बखरा में उमिरि भरि के दरद।

रीतिकाल के अजगुत कवि, जिनके आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'साक्षात् रसमूर्ति' कहत रहीं, अपने विरह-वर्णन में एह बँटवारा के एह रूप में देखले हवें- "इत बाँट परी सुधि रावरे भूलनि, कैसो उराहनो दीजिए जू।" ई बखरा भगवाने के लगावल बाटें कि इत (इहाँ, हमरी भाग में) सुधि (प्रियतम के स्मरण) परलि बा आ उनके (प्रियतम के) हिस्सा में भुलाइल (विस्मृति) परल बा, तब ओरहनो कइसे दियाव आ के से दियाव ?

डायरी पढ़त जाईं त भोजपुरी समाज के संस्कृति के महक त मिलबे करी, गाँव-जवार के राजनीति शहरी समाज के नकल में केतना जहरीली हो गइल बा, लाकडाउन में नोकरिहन के कइसन दुर्दशा भइल बा, महेंदर मिसिर, भगवती प्रसाद द्विवेदी, ब्रजभूषण मिश्र, अधीर पिंडवी, महेश्वराचार्य जी, रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष' जी' अरुण मोहन भारवि अउर बहुत रचनाकारन के रचना के आत्मीय परिचय मिलि जात बा। भोजपुरी भाषा में अँगरेजी के शब्द कइसे रचि-बसि गइल बाटें- एकर सैकड़न उदाहरण मिलि रहल बा। नवका चलन के फेसबुकिया साहित्य के बधार के का पूछे के ! एह डायरी में स्मार्ट, सुन्नर आ सट-कट (शार्ट कट के बढ़िया रूपान्तर) जइसन प्रयोग अलगे मजा दे रहल बा। यूट्यूब पर भोजपुरी के जलवा देखले के आ भोजपुरी में अश्लीलता परोसले के प्रसंग आइल बा।

भोजपुरी के लिखित रूप से जवन लोग फुहरकम बढ़ावेवाला गीतन के सुनिके चिन्तित बा, ओ सब के तनी मेहनत करे के चाहीं, तब्बे भोजपुरी के सिरजनहारन के इतिहास समुझले के अवसर मिली।

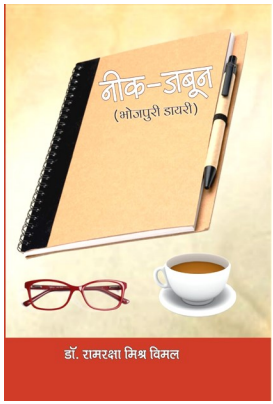

नीक-जबून पर दू टूक नीक-जबून

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

हिंदी-भोजपुरी का अनेक विधन में अधिकार का साथे कलम चलावेवाला डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के भोजपुरी डायरी पढ़ के बहुत आनंद मिलल। पढ़े खातिर डायरी के मेज पर रखते सामने चश्मा आ तश्तरी पर चाय से भरल कप पाके कमजोर नजर में आ थाकल मन में ताजगी भर आइल। ई जानके ज्यादा खुशी भइल कि डॉ. विमल के 'नीक-जबून' भोजपुरी में लिखल पहिलकी भोजपुरी डायरी का रूप में जगह बनवले बा।

एहसे 2016 से 2018 के बीच 91 दिन के डायरी लिखल बा, जवना में अनेक विषयन के बहुत रुचिगर ढंग से परोसल गइल बा। एह में आइल विचारन में कुछ सामयिक, कुछ साहित्यिक आ कुछ संस्मरणात्मको बाड़े सँ। एहन में बान्हे के एतना क्षमता बा कि पाठक बिना रुकले लगातार पढ़त चल जाई। ना मन ऊबी ना उत्सुकता घटी। एहनी के पढ़ला पर विमल जी का बहुआयामी सोच आ समसामयिक परिस्थितियन पर तेज नजर रखेवाला व्यक्तित्व के दर्शन होत बा। डायरी में पर्व-त्योहार, टोला-मोहल्ला, भाषा-संस्कृति आ तलाक, नोटबंदी आदि पर भी विचार भइल बा।

कम से कम पाँतियन में आपन ठोस विचार राखे में सफल भइला से विमल जी के कलम सधल लागत बा। नया-नया विषय के खोजके एगो निश्चित समय पर कवनो पत्रिका खातिर लिखल आसान काम ना होला, बाकिर विमल जी एहू में सफल बानी। उमेद बा कि विमल जी के 'नीक-जबून' पढ़ला का बाद एह से प्रेरणा लेके दोसरो लेखक भोजपुरी में डायरी विधा के आगे बढ़इहें। डायरी लेखक के हार्दिक बधाई।

द्वारा-श्री देवेंद्र मिश्र, सी-499 एफ. इंदिरा नगर,लखनऊ-226016

पुस्तक समीक्षा

दिनेश पाण्डेय

गोपी गीत में समकालीन युगबोध

श्रीमद्भागवत पुराण के दसवाँ स्कंध के 46-47 वें अध्याय में कृष्ण के उद्धव के जरिए गोकुल में सनेसा भेजे के प्रसंग बा। एह घटना के विस्तार दू तरे भइल, एगो उद्धव-गोपी के बतकही के रूप में, दोसरका एही दरम्यान बातचीत के जगह उड़ रहल एगो भँवरा के बहाने कृष्ण बदे ओरहना के प्रकटन का रूप में। एह पौराणिक प्रसंग के उद्देश्य सगुण-रसोपासना पद्धति के जरिए भक्तिनिरूपण रहल ह। एह प्रसंग के आधार बना के बाद के भारतीय साहित्य में एक परंपरा के विकास भइल। ब्रजभाषा के भक्तकवि सूरदास में एह घटना के सरूपगत आ भावगत फैलाव के चरम रूप दिखाई देला। विशुद्धाद्वैत के दार्शनिक सिद्धांत से उपजल पुष्टिमार्गी बिचार के मजगूती देवे बदे ई प्रसंग एकदम माकूल रहे जेकर वस्तु के आधार बना के अनेक रचनाकार लोग रचना कइल जवना में नंददास, प्रागन, जगन्नाथदास रत्नाकर, सत्य नारायण कविरत्न सरीखे कवि लो के अधिका महत्त्व प्राप्त भइल। एकर वजह इन्ह लोगन के काव्य प्रतिभा के उन्नत स्तर, भाव-सघनता, बिचार-सामरथ, युगबोध आदि रहल ह। इहे सब ओजह इन्ह रचनन में प्राप्त अंतर के रहलन। परंपरा के अलावे रचनाकार के प्रतिभा आ युगबोध के असर उनकर कीरति प पड़ल सुभाविक बा आ इन्ह मापनी प कवनो रचना के ताकत जाँचल-परखल जा सकेला।

भोजपुरी लोकसाहित्य भा मुख्य साहित्यिक धारा में उद्धव-गोपी प्रकरण के आधार पर सिरजल सामग्री बाड़ीसँ बाकी ओमे ओकर खाँड़ा-टूकी रूप नजर आवेला। चौधरी कन्हैया प्रसाद 'आरोही' जी के 'गोपी गीत' भोजपुरी में एह परंपरा के नायाब आ समग्र रचना ह। महत्त्व एह बात के नइखे जइसन 'गोपी गीत' के संपादकीय में आइल बा कि कृष्ण सर्वोच्च ईश्वर रहन भा ओकरा से कमतर कवनो भगवान। 'यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति' के नजरिया जेकर आदर्श रहल ह ओह संस्कृति में एह विभेद के समुझावल सैद्धांतिक आ बेवहारिक दुन्नो नजरिए निरर्थक बा, कृष्ण त फिर भी कृष्ण रहन। गोपी गीत' में कृष्ण के अलम बना के जवन बात कहल गइल बा, महत्त्व तेकर बा, महत्त्व रचना में व्यक्त कृष्ण के स्वरूप के बा, महत्त्व गोपी लो के, उनकर प्रतिकात्मकता के बा, उनका माध्यम से व्यक्त भाव आ विचार के सत्यता आ प्रासंगिकता के बा। कवनो रचना पर आलोचक के आपन दृष्टि के आरोपन रचना के सही सरूप के पहिचाने में बाधक हो जाला। ईश्वर के अवतरण के अर्थ भौतिकता में ना बलु वैचारिकता में पेहम बा। साने गुरूजी के कहनाम कि "हाथ पर हाथ ध के बइठे से अवतार ना होखस। बिलोए बेगर नेउनो ना निकसे। बिना कष्ट उठइले काम ना होखे। कोशिश के पराकाष्ठा में अवतार के फल लागेला। हमनीं के मन के आशा, कामना जवन बेकती में उतरल दिखाई

देवे ऊहे अवतार ह। हमनीं के मन के ध्येय, हमनीं के भावना, हमनीं के सुख-दुख आ हमनीं के मन के विचार जवना व्यक्ति में मूर्तिमान दिखाई देवे ऊहे अवतार ह।" एह वास्तविकता के ध्यान में रखले बेगर सिर्फ भटकावे हाथ लागी। सारा सगुनोपासना के विचार दर्शन भौतिक जथारथबोध के भीतर ईश्वर के मौजूदगी के अहसासे के बुनियाद प ठाढ़ बा। जदि मौलिकता में ईश्वर निर्गुण, निराकार हइयो बा त तुलनात्मक रूप से एह रूप में तेकर का उपयोग? "गोपी गीत में वर्तमान भारतीय त्रास के अभिव्यक्ति प्रदान करके सच्चाई के बेहद करीब पहुँचावे के प्रयास कइल गइल बा। जवन अनुराग बा ऊ मानव समाज के प्रति बा। ईश्वर के प्रति अनुराग नइखे व्यक्त भइल।"- 'आपन बात' में आरोही जी के एह कथन के असली तात्पर्य ऊ ना जे सतह प लउकऽता। बताईं भला, जेकर आग्रह 'मानव आ मानव समाज के प्रति' बा ऊ ईश्वर से बिमुख कहाँ भइल, एकरा उलट 'मानव आ मानव समाज' से बिमुख ईश्वर के अनुरागी कब भ गइल? अनुराग बा, व्यक्त नइखे भइल, एह बारीकी के बूझल जरूरी बा। एह 'अनभियक्ति' के पाछू समकालीन वैचारिकता के तरजीह देवे के कारन बा।आधुनिकता के रुख हमेसे बौद्धिकता के दिशा में होला आ ई एगो गतिशील विचार-प्रवाह ह, गोपी गीत में ई चीज कहईं अलोत नइखे।

श्रीमद्भागवत के कृष्ण ब्रह्म के वाचक हवें आ गोपी जीवात्मा के आ एही रूपकत्व प आधारित सारा कथात्मक तानाबाना बा। ईश्वर के गुन-सरूप के दर्शन कवनो काल बिसेखी के सीमित दायरा में ना कइल जा सके। हँ, जुग के मोताबिक नजरिया आ ता अनुरूप वैचारिक स्तर, भाषा, शैली आदि में फरक जरूर होखी आ इहे सहज, सुभाविक बा। भाव आ विचार के जुगसापेक्ष ना भइले एक असहज स्थिति कायम होई आ तेकर असर कम हो जाई। इहो हो सकेला कि तेकर उपयोगिते खतम हो जाय। पुरातन के सार्थकता तबे ले रहेला जबले ओकर प्रासंगिकता बरकरार बा, एकरा से कटल-टूटल चीज इतिहास के गर्त में गुम हो जाला। इहे कारन ह कि सुदीरघ अतीत के चरित नायकन के आधार बना के रचल कीरति में जुग के सोच के अनुसार बदलाव आवत जाला बाकी परंपरा के असर से ऊ पूरी तरे मुक्त कबो ना हो सके।

'गोपी गीत' नाम में एगो वहम बरकरार बा, कम-से-कम आलोचना के पच्छ से ई बात त कहले जा सकेला। रचनाकार के आपन सोच आ चयन के आधार हो सकेला बाकी नाम के भीतर नामधारी के तलाश एक सामान्य आदत ह। एह प्रसंग के आदि सोत श्रीमद्भगवत महापुराण में उद्धव-गोपी संवाद (भँवरगीत) से अलहदा एक प्रसंग 'गोपी गीत' के बा जवन दशम स्कंध के एकतिसवाँ अध्याय में आइल बा। एह 'गोपी गीत' के प्रकरण अलग बा। शरद पूनो के महारास के अवसरि बा। एक कृष्ण अनेक गोपी, जुगल निरित उफान प बा। अब एकरा के अखिलकलादिगुरू के पदसंचार के कमाल कहल जाव, बेइंतहा आनंद में गोपी लो के सचेतना के लोप कहल जाव भा निगुढ़ आध्यात्मिक मनस के सर्वात्मबोध, हर गोपी के भुजपाश में कृष्ण के प्रतीति हो रहल बा। ए से गोपी लोग में एक अहंभाव चोर दरवज्जे घुस आवता कि कृष्ण के नजर में ऊहे सभसे सरेख बाड़ी आ कृष्ण के उनका प्रति अनुराग सबसे जादे बा। एह अहंबोध के धुंध में कृष्ण कहईं अलोपित

हो जात बाड़न। श्रीमद्भगवत महापुराण के 'गोपीगीत' गोपियन के आकुल हिरदय के समवेत गान ह जवना में उनकर भरम के टूटे, जथारथ के ज्ञान, अल्पकालिक बिरह, अनुनय, स्मृति, कामना के बखान बा। गोपी गीत के उनइस श्लोकन में ईश्वर के पावे के अनेक राह में से अहं भाव के लोप आ दृष्टि बिस्तार के जरिए समूचे ब्रह्मांड में एक तात्विकता के दर्शन के बात मुखर बा। श्रीमद्भगवत महापुराण के 'गोपी गीत' प्रकरण में ऊधो के उपस्थिति नइखे। आरोही जी के 'गोपी गीत' के अधिकांश गीत में ऊधो के प्रति संबोधन बा, कृष्ण के मथुरा जाए के पीठिका बा एसे ई बात साफ बा कि ई 'गोपीगीत' उद्धव-गोपी संवाद प आधारित ह ना कि मूल 'गोपी गीत' प।

'गोपी गीत' सूर सरिस अलगे-अलगे फूटल पद भा कहीं गीतन के संग्रह ह जे में कथात्मकता के विकास प कवनों जोर नइखे दिहल गइल। जाहिर बा एह तरे के प्रबंधमुक्त रचना में विचार के फिर-फिर दोहराव होई। इहाँ गोपी में बतौर बेकती कवनों पहचान बिसेखी कायम नइखे होत बलु उनुकर सहज रूपांतर वर्तमान सामूहिक संवेदना के वाहक के रूप में भ गइल बा। नंद-जसोदा, गोप-ग्वाल, राधा आदि के निजी मनोदशा के परगटन के बजाय समिलात सामाजिक भावबोध के अभिव्यक्ति प्रमुख बा। 'गोपी गीत' में अतिशय बेकतीगत भावुकता के जगह जथारथ लोकभावना के अहमीयत दिहल गइल बा। उद्धव के कहईं परतच्छ मौजूदगी नइखे, महज संबोधन से उनकर मौन श्रोता के रूप में होखे के अहसास उपस्थित बा। गीति तत्व के पसराव सगरे बा बाकि ओ में आत्मनिष्ठता के बजाय समष्टिमूलकता प्रबल बा। 'गोपी गीत' के रचना के उद्देश्य अगुन-सगुन वितर्क, ज्ञान -प्रेम भा जोग-भगती के टकराव, पुष्टिमार्ग के सरेखता के बखान नइखे, एकर मकसद वर्तमान जुगबोध, तेकर विसंगति आ ए से निपजल मानसिक हालात में सोच के दिशा के भीतर खोजल जा सकेला। खाली समस्या के बदरूप जथारथ सिरिजे के बनिस्बत मानुस जीवन के बेहतरी के प्रति ब्यापक नजरिया 'गोपी गीत' के आत्मा ह।

'गोपी गीत' के शुरुआत में कुछ संकल्प बाड़ी सँ-

"अँखियन से बादर अधरन से,
पतझर मार भगाइब।
छेदे पड़ी पाताल चीर
आकास श्याम के लाई
मुश्किल लाख कठिन कालो से
मधुबन ना घबड़ाई
असंतुलित डगमगात रथ,
सीध राह पर लाइब।" (गीत- 1)

वास्तविकता त ईहे बा कि हालात ठीक नइखे। श्याम बिना वृंदावन के परिवेश दुखद बा बाकी नाउम्मीदी आ हताशा के जगह गोपी लो के मन में श्रम, निरभय, 'संघर्ष आ लचर रथ के घिसल-पीटल चूल के फिर से दुरुस्त करे' के प्रबल संकल्प बरकरार बा। अइसने इरादा सगरे आ बेरि-बेरि नजर आवऽता, कुछ बानगी-

"झंझावात बवंडर तूफाँ, आई ना भय खाइब
भँवर चीर मँझधार करेजा, नाव बढ़ावत जाइब।" (गीत- 17)

"चमचमात आशा के सगरो, पाइब जहाँ निहारब
पर्बत मिली कठोर राह में, ओकरो छाती फारब।" (गीत- 35)

"काम क्रोध मद तृष्णा तेजब, कतनो कष्ट उठाइब
ज्ञान-चेतना ऊपर पर्दा आप डाल ना पाइब।" (गीत- 42)

"मिले मुक्ति विपरीत समर ना,
श्यामें श्याम पुकारब
समय बिषैला सदा दंश दे,
बा विश्वास न हारब।" (गीत- 45)

रचनाकार के आपन विजन बा आ ए के लेके कवनो ऊहापोह नइखे जनात। खलिहे समस्या के अंबार रख देल कवि के ध्येय नइखे, सरब नकार के मनोवृति के बरा के हकीकत के स्वीकार आ बेहतरी के आदर्श के खोज के बेचैनी के 'गोपीगीत' में सिद्दत से महसूस कइल जा सकेला। भीतर के वृंदावन कबो ना दरके, भलहीं अनगिन चोट पड़े। बदतर हालात के ओजह आपसी भीतरघात बा। सब खुराफात के जरि के रूप में स्वार्थी अर्थतंत्र के भूमिका के पहिचान करत एकर दबाव के कम करे आ जन-जुड़ाव के मजगूत करे के राह के सेवाय कवनो चारा नइखे (गीत- 2)। कृष्ण के जरूरत काहे बा? एक अइसन व्यक्तित्व के आदर्श के जनकामना जेकर नेतृत्व जुग-जुग के सामूहिक आकांक्षा के पूर्ति करे, लोक चेतना के सही दिशा में मोड़ दे आ तेकर संजुत-शक्ति के संधान से सारी नकारात्मकता के जरि खोद दे-

"बैरी के नापाक इरादा, खाइत जल्दी मात
मधुवन मूल्य घटावत निसिदिन,
मौजूदा हालात
आरोही बिन श्याम अपाहिज,
मधुवन सुबहो-साम।" (गीत- 18)

निरा कामना से बात बनी थोरे? सरब-समरथ ईश्वर के चाह आ सारी जवाबदारी तेकरे प डाल के निहचिंत हो जाए के सोच राह के भटकन ह एह बात के जतिने जल्दी समुझ लिहल जाव त ठीक। कन-कन में मौजूद कृष्ण के सक्रियता लोक के माध्यम से ही व्यक्त हो पावेला ए से जन भागीदारी के बेगर बेहतरी के कामना के कवनों मतलब ना। सहयोग, सक्रियता आ निरंतरता सामाजिक उठान के अनिवार शर्त ह। इन्ह पाँतिन में छिपल अर्थ प ध्यान दिहल जाव-

"बदहवास बेचैन समय के,
करत आप से बात
सामूहिकता साथे निजता,
होत हवाई जात
आरोही खुशहाली लागी
करब जंग अविराम।" (गीत- 40)

विश्व बेवस्था में जवन सकारात्मक बा, सुखद बा, दिव्य बा तेकर समावेश ईश्वरत्व में हो जाला। ईश्वरत्व के अधिकाई के चाह आदर्श ह। तेकर सक्रिय मौजूदगी आनंदलोक के सिरिजन क जाला तेकर बिलगाव कलेस दे जाला-

"एक समय ऊ रहे श्याम
मन भीतर कइलन वास
शस्य-श्यामला मधुवन धरती
बाँटत रहे सुबास
ओढ़ उदासी बइठल मधुवन
गर्द आलता साज।" (गीत- 43)

संसार में शुभ-अशुभ, रूप-विरूप, नीक-जबून सबके मौजूदगी बा। सिर्फ विरूप जथारथ के मेंहि बना के तेकरे चक्कर कटले आदिमी जीवन के व्यापक पहलू से अजाने रहि जाई। मानुस सहज रूप में कल्पनाजीवी ह। 'गोपी गीत' के गोपियन के मानीं त जागतिक वास्तविकता के आदर्श सरूप के अंगीकार जीवन के ध्येय होखे के चाहीं-

"अंग-अंग बिन श्याम अपाहिज,
ना तनिको उत्साहे
आसमान तज घेरा अंदर,
चिरई रहल न चाहे
जे ना नाचल मोहन साथे
का मोहन के जानी।" (गीत 3)

भारतीय लोकसंस्कृति के मूल सुर आशावादी बा। निहिचे जानीं कि

जथारथ के भीतर विरूपता, विकृति, विसंगति, दुखात्मकता के गुन व्यापक बा बाकी आशावादी नजरिया सबन के नजरअंदाज क के उन्नति के राह आसान क देला। 'गोपी गीत' में उम्मीदी के तत्व कहईं छूटत नइखे। इहाँ गोपी लो के चरित्तर के गठान में हताशा, निराशा, टूटन जइसन दुखात्मभाव के जकड़न नइखे। कुछ बानगी-

"बरसत रहत मेघ निसिवासर,
माघ पवन उत्पात
बा पुरहर विश्वास श्याम
अइले बदली हालात।
बीतल समय साथ मन रसिया,
बिसरत ना अधिकात
मनमोहन के सफल वापसी,
होई मानी बात।" (गोपी गीत 4)

"ऊधो कायम रही उम्मीद।" (गोपी गीत 6)

"कइले कुब्जा पंजा में बेजारे ऊ जर जाई
लौट गइल खुशहाली आई, सब दुख दर्द पराई
भीतर जलन न बाहर धूआँ,
ना अइहें डहकइहें।" (गोपी गीत 11)

"असफलता के बादो आवे,
विजय भोर जीवन में
महाप्रलय आसार हमेशा, रही न वृंदावन में
उलझल ममिला सुलझावे के
चाहब होखी बात।" (गोपी गीत 46)

जहाँ टकराव अथवा कष्ट पहुँचावे के एकमात्र उद्देश्य होखे वइसन स्थिति के छोड़ के कवनों गलतफहमी के अंत भा अंतर्विरोध के बीच तालमेल कायम करे बदे संवाद सटीक माध्यम ह। उधो के दिहल संबोधन में गोपी लो के कहनाम कि-

"अनुचित साथे भइल होय तब,
सहज राह बतलइतीं
हमनी के मोहन करीब जइसे होइत पहुँचइतीं
उभरल खड़ा सवाल सामने
मारीं फूँक भगा दीं।" (गोपी गीत 25)

"रहत सदा बेचैन बनवले, भागी अंतर्नाद
वृंदावन के कुंज-कुंज में,
गूँजी फिर संवाद।" (गोपी गीत 26)

सूरदास जी के 'भ्रमरगीत' के गोपी भावुक आ संवेदनशील बाड़ी, नंददास के 'भँवरगीत' के गोपी तार्किक आ प्रगल्भ। 'गोपी गीत' के गोपी में बौद्धिकता आ विचारशीलता के तत्त्व अधिका बा। पहिले के दूनो रचनन में दार्शनिकता आ सगुण भक्ति के सिद्धांत के निरूपण के उद्देश्य बा 'गोपी गीत' में समकालीन चेतना के प्रस्तुति। 'आपन बात' में खुद कवि के हामी बा कि "गोपी गीत में गोपी कृष्ण के पौराणिक मिथक के परंपरागत आ निर्जीव आवृति ना कर के समकालीन भारतीय जीवन के अनुरूप मानवीय धरातल प चिन्हित कइल गइल बा।" जाहिर बा प्रकरण भलहीं पौराणिक लिहल गइल बा सारा व्यक्त भावबोध आधुनिक बा।आधुनिकता के लछन में हालिया अतीत के त्याग, नई शुरुआत के पक्षधरता आ ऐतिहासिक मूल के पुनर्व्याख्या शामिल हवें। 'गोपी गीत' में युगीन जथारथ, तेकर नकारात्मकता (गीत सं 5, 7, 8, 9, 12, 13 आ 48), चिंता (गीत सं 30, 31), असहमति (गीत सं 33, 47), सवाल (गीत सं 38), असर (गीत सं 39, 52), हताशा (गीत सं 24), दृढ़ता (गीत सं 41), उद्वेग (गीत सं 20, 21, 23) आदि के सुर खालिस आधुनिक बा।

शास्त्रीनगर, पटना

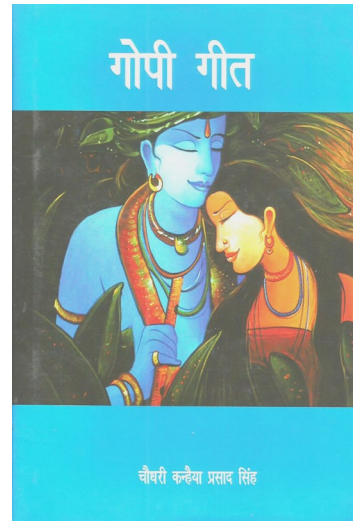

शंकर मुनि राय ‘गड़बड़’

देहाती जी के ‘रावन के पाती’

'रावण के पाती' ब्रजमोहन राय 'देहाती' के दोसरिका भोजपुरी व्यंग्य संग्रह ह। एह से पहिले 2012 में 'मंच के प्रपंच' नाँव से इहाँ के पहिला संग्रह आइल रहे। दूनों किताब जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद से छपल ह।

'रावण के पाती' में कुल्ह 22 गो व्यंग्य रचना बा, जवना में 16 गो निछान विधात्मक व्यंग्य आ पाँच गो रामजी के नावें लिखल रावण के पाती, माने कि पत्र शैली में। एह में एगो सुपनेखो के पाती बा जवन पार्वती के नावें लिखल बा। किताब के प्रकाशकीय लिखले बानी कन्हैया सिंह 'सदय' जी आ लेखक परिचय अजय कुमार ओझा जी। किताब के पँचपेजिया प्रस्तावना-भूमिका लिखले बानी डॉ. जयकांत सिंह 'जय' जी जवना में व्यंग्य के माने समुझावत एह संग्रह का बारे में लिखले बानी कि देहाती जी के एह किताब में "व्यंग्य-दृष्टि आ भाव-भाषा पर सम्यक पकड़ के अजगुत उदाहरण बा। एकर बाइसो व्यंग्य रचना पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक आ रूढ़िग्रस्त परंपरागत समस्यन पर तंज कसे भा मेहना मारे से बाज नइखे आइल।"

एहिजा हमरा बस अतने कहे के बा कि ब्रजमोहन जी के एह संग्रह के सब रचना कवनो ना कवनो पत्रिका भा अखबार में छपल बाड़ी सन। एह से एह में समय का माँग के अनुसार विचार आइल बा। समकालीन समस्यन पर पत्रकारी व्यंग्य लिखे के पुरान परंपरा बा। एह विचार से सब रचना परंपरावादिये कहाई, बाकिर अंतर बा त लेखक का शैली में। देहाती जी के पास व्यंग्य रचना खातिर गजब के आपन शैली बा, एकदम भोजपुरिया शैली। इहाँ का शैली में केहू के उधारी नइखे, एकदम मौलिक शैली बा एह देहाती रचनाकार के पास। सपाटबयानी के नीरसता दूर करे खातिर बीच-बीच में व्यंग्य के तीर घोंपे के कलाकारी एह किताब में देखे के मिली।

राम आ रावण अपना संस्कृति के दूगो अइसन प्रतीक हवन जा जे समूचा भारतीय समाज के अच्छाई आ बुराई में बँटले बा लोग। रामराज एगो कल्पना ह, रावण राज हमेशा मिली, बाकिर रामराज ना, बाकिर देहाती जी के कहनाम बा कि एह रामराजी दुनिया के प्रजा रावणो से बदतर बिया। प्रतीकात्मक बात कहीं त रावण आज का विकृत व्यवस्था में आम आदमी के गोहार लगावे वाला चरित्र बा। एह किताब के नजरिया इहे बा।

एह किताब के एगो खास विशेषता बा एकर शैली। एकदम मौलिक शैली बा देहाती जी के। व्यंग्य खाली व्यंगेना होला, ऊ शैली भी होला। एह किताब में व्यंग्य विधा आ शैली दूनो बा। व्यंग लिखे खातिर व्यंग्यकार के परिवेश चाही। एकरा बारे में देहाती जी के विचार ई बा कि एकरा के खोजे के जरूरत नइखे, चारु ओरी छपिल बा व्यंग्य। एह दूनो बात के जवाब इहाँ के 'आपन बात' में देखल जाए--

"जिनिगी के हर क्षेत्र में व्यंग्य। धार्मिक,

सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक। सुख के चाह में दुःख के नेवता। आपन देखल छोड़ दूसर के फरियावन। हम सही, दूसर गलत। अनेकन अपमान-सम्मान, सही-गलत के स्वामी मानव दूसर से बेपरवाह। दूसर हमार कदर करो, ना त पटरी ना बइठी। साहित्य समाज के ऐनक होला। साहित्यकार पहरुआ दुनो में मेल बइठे के चाही आपन पटरी बैठावे खातिर दूसर के धकियावत मनई।" एह किताब में सगरी ईहे शैली बा। गद्य में एह शैली के बहुते महत्व बा। अगर एह किताब में व्यंग्य शैली ना रहित तब ई किताब एगो ललित निबंध कहाइत।

हमरा जानकारी के अनुसार ब्रजमोहन जी भोजपुरी के चउथका व्यंग्यकार हवन जेकर गद्य व्यंग्य रचना संग्रह के रूप में प्रकाशित भइल बा। भोजपुरी में गद्यात्मक व्यंग्य लिखे के शुरुआत मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' माने कि 'चतुरी चाचा' के अखबारी चिट्ठी से भइल रहे। उनका चिठियन के पहिलका संग्रह 1957 में आ दुसरिका 1958 में लूकरगंज इलाहाबाद से छपल रहे, नाँव रहे 'चतुरी चाचा की चटपटी चिठियाँ।' ओकरा बाद 1988 में पटना से प्रभुनाथ सिंह के भोजपुरी संग्रह 'गाँधी जी के बकरी' नाँव से छपल रहे। एह दूनो रचनाकारन के बाद 1995 में जगरम प्रकाशन, बक्सर से विजयानंद तिवारी के व्यंग्य "खोलक दास के चिट्ठा" नाँव से छपल रहे।

भोजपुरी किताबन के प्रकाशन का बारे में एक जमाना में वाराणसी के बहुते नाँव रहे, दुअनिया किताब से लेके एकटकिया-दूटकिया किताब ओहिजे से खूब छपत रही सन। आरा, पटना आ कलकत्ता से भी बहुते किताब छपली सन, बाकिर कवनो प्रकाशन के छितिर-बितिर होखे में देरी ना लागल। ई बात विजयानंद तिवारी के व्यंग्य "खोलक दास के चिट्ठा" नाँव से छपल रहे।

भोजपुरी किताबन के प्रकाशन का बारे में एक जमाना में वाराणसी के बहुते नाँव रहे, दुअनिया किताब से लेके एकटकिया-दूटकिया किताब ओहिजे से खूब छपत रही सन। आरा, पटना आ कलकत्ता से भी बहुते किताब छपली सन, बाकिर कवनो प्रकाशन के छितिर-बितिर होखे में देरी ना लागल। ई बात एहिजा एहसे कह रहल बानी कि भोजपुरी किताबन का प्रकाशन में जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के बहुते बड़ योगदान बा। हर साल दू-एक गो किताब एहिजा से लगातार चालीस बरिस से छपत आ रहल बाड़ी सन। 'रावण के पाती' एह प्रकाशन के पचपनवाँ पुष्प ह।

बिहार के भोजपुर जिला के एगो गांव तेलाढ़ में 1945 में जनमल ब्रजमोहन जी 20 बरिस का उमिर में टेल्को (स्टील नगरी) में आपन पसीना बहावे शुरू कइनी आ भोजपुरी साहित्य सृजन के काम जारी रखनी, अमेरिका तक ले घूमघाम के देहाती के देहातिए रह गइनी, एहसे बढियाँ व्यंग्य का होई। खान-पान, रहन-सहन आ बात-विचार से एकदम देहाती, काहेंकि लोग भोजपुरी के देहातिए भाषा जानेला कुछ लोग। जेकरा अपना दोसरा भाषा पर गुमान होई ओकरा खातिर ई किताब पढ़ल जरूरी बा। तब बुझाई कि अपना भाषा आ माटी के मरम का होला।

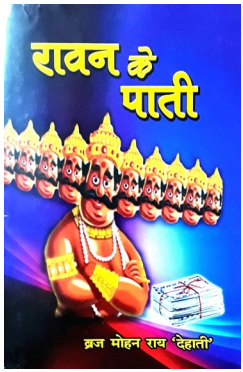

पुस्तक समीक्षा

रामेंद्र मिश्र

साहित्य आ संगीत खातिर एगो अनुपम उपहार

"कलसा भइले उजियार" एगो सुंदर आ भावपूर्ण गीत-संग्रह बा, जवन डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल द्वारा लिखल गइल बा आ सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित बा। एह संग्रह में भिन्न-भिन्न अवसरन पर गावे जाए वाला भोजपुरी गीतन के शामिल गइल बा। डॉ. विमल का एह गीतन में प्रेम, समाज, संस्कृति आ देश-प्रेम आदि जीवन के विभिन्न पहलू वाला विषय शामिल बाड़े सन, जवन संग्रह के महत्त्वपूर्ण बनावतरे सन।

पुस्तक के चार खंड बाटे- भजन खंड, लोक धुन खंड, आधुनिक लोकगीत खंड आ जागरूकता के गीत अउर एहमें कुल 116 गो गीत शामिल कइल गइल बाड़े सन। हर खंड के गीत बहुते सुंदर आ विविधता से भरल बाड़े सन।

विमल जी का गीतन में एगो अनोखा आकर्षण बा, जवन पाठक आ श्रोता के मनहीं मन गुनगुनाए के प्रेरित करी। ई किताब गायक आ पाठक खातिर साहित्य अउर संगीत के एगो महत्त्वपूर्ण संसाधन बाटे।

सभे गीतन में भोजपुरी भाषा के सुंदरता आ मिठास के अनुभव कइल जा सकेला। गीतकार के शब्द चयन आ भाषा शैली रेघरियावे लाएक बा। सभे गीतन में जीवन के अनुभव अउर भावना के सुंदर अभिव्यक्ति भइल बा।

गीतकार डॉ. विमल अपना एह पुस्तक के अपना बाबूजी के समर्पित करत खा लिखतारे कि "समरपन काका (अपना बाबूजी) के, जे हारमोनियम पर अङुरी धरे सिखवलन।" एहसे स्पष्ट हो जाता कि एह संग्रह के सभे गीत जरूर संगीतात्मकता से भरल-पुरल होइहें सन। भूमिका में स्वयं विमल जी अपना गीतन के पारिवारिक आ सामाजिक माहौल में गावे लायक गीत बतावतानी।

"कलसा भइले उजियार" का हर गीत के एगो आपन सौंदर्य बा, एगो विशिष्ट अर्थबोध बा।

एह संग्रह के एगो चैती देखीं-

"रोंआ-रोंआ खुसिया समाइल
ए रामा पिया घरे अइले।
मध दुपहरिया के तपल बटोहिया
पनिया से जइसे अघाइल
ए रामा पिया घरे अइले।
सिहरेला अंग-अंग खिलि गइली सधिया
पोरे-पोरे रस भरि आइल
ए रामा पिया घरे अइले।"

एह गीत में पिया का आगमन पर पत्नी का धधइला के वर्णन जइसे कइल गइल बा, ऊ खुशी के वर्णन खातिर एगो अन्यतम उदाहरण बा।

"आजु दुनिया करोना से अइसे डरल
रूह काँपेला जो डेग बहरा परल
केहूँ निकली जो बहरी भरल जोम में
पी के सभके पियाई करोना गरल"

गजल में भलहीं करोना महामारी का भयावहता के वर्णन भइल बा, बाकिर एकर मार्मिकता एकरा के कोमलता प्रदान

कइके भावात्मक संगीत का लायक बनावतिया।

निश्चय ही एह पुस्तक के जहाँ भोजपुरी साहित्य के एगो महत्त्वपूर्ण योगदान मानल जाई, ओहिजे भोजपुरी गायकन खातिर एगो अनुपम उपहार कहल जाई। गीतकार का अनुसार एह संग्रह के गीत मंचीय गायन आ रिकॉर्डिंग खातिर भी बहुत उपयोगी बाड़े सन। भोजपुरी गायकन के बढ़िया गीत ना मिलला का कारन भी भोजपुरी संगीत पर बहुत अंगुरी उठ रहल बा। हमरा पूरा विश्वास बा कि ई संग्रह भोजपुरी गायकन के अपना स्तरीय आ खूबसूरत गीतन से समृद्ध क के भोजपुरी संगीत के खूबसूरत बनावे में भी आपन योगदान सुनिश्चित करी।

कलसा भइले उजियार
गीतकार : डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल
प्रकाशक : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
प्रथम संस्करण : 2021 पृष्ठ सं. : 136
मूल्य : ₹220/-

बड़कागाँव सबल पट्टी, पो. नगपुरा, जि. बक्सर (बिहार) पिन- 802118

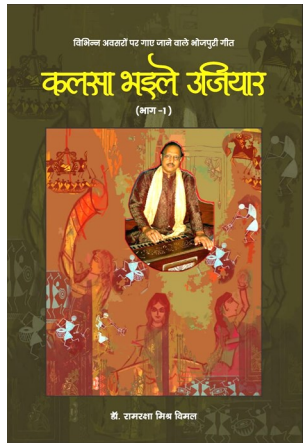

किताबि : एक नजर में

सुनगुन
दिनेश पाण्डेय
प्रकाशक : सर्व भाषा ट्रस्ट J-49, स्ट्रीट नं. 38, राजापुरी, मेन रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59
प्रथम संस्करण-2021 मूल्य- 250.00/-

जइसे भोर के ओसहीं साँझ के, दिन के, रात के, नदी के, पहाड़ के, जाड़ा, गर्मी, बरसात के, नीन के, जाग के, राग-विराग के आ अउरियो बहुत-बहुत के जानल-अजानल जाने कतने रंग बा इहाँ, कतने ढंग जाने कतना कुछ कहत-बतियावत! कहाँ से आइल बा एह कवि के पास अइसन तकान आ अइसन तकावन के अइसन कबिलाँव- एकरा में जाइब त संस्कृत कविता के भोजपुरी में गहे-कहे के एह कवि के जवन एगो शुरुए से, आ अनवरत किसिम के कोशिश रहल बा, तवना के महातम समझ में आई। (किताब का भूमिका 'धीरे धरिबा पाँव' में से।)

डॉ० उमेश कुमार पाठक 'रवि'

यथार्थ के धरातल पर बुनल कहानियन के संग्रह

भोजपुरी साहित्य जगत में श्री अतुल मोहन प्रसाद के कहानी संग्रह 'अन्हार के साँच' पहिली कृति ह बाकिर हिंदी-भोजपुरी दूनो मिला के उहाँ के ई पाँचवी कृति ह। एह संग्रह में अतुल जी के छोट-बड़ कुल बीस कहानियन के संग्रह बा। खास बात ई बा कि एह कुल्हि कहानियन के प्रकाशन पहिलहीं कवनो पत्र-पत्रिकन में हो चुकल बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'अन्हार के साँच' का प्रकाशकीय में ब्रजकिशोर जी के कहनाम बहुत सही बा कि "अतुल जी कहानीकार का रूप में जस पा चुके बाड़े। एह संग्रह के अग्रलेख 'अतुल मोहन प्रसाद, व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में डॉ० रवींद्र शाहबादी और अतुल जी के लघुकथा आ कहानियाँ पर विस्तार से प्रकाश डाले के प्रयास कइले बाड़े।

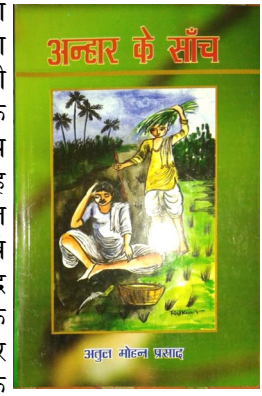

समीक्षा संकलन के कुछ कहानी बीसवीं सदी के अंतिम तीन दसकन के बाड़ी सन त एकइसवीं सदी के शुरुआती दू दसकन के एगो लंबा काल खंड के अन्हार के साँच के कहानियन में आसानी से देखल जा सकत बा। एह संग्रह के पहिली कहानी 'सेन्ह' ह। एमा किसानन के समस्या बड़ा सटीक ढंग से सोझा जा आइल बा। सकलदीप सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम कीमत पर आपन धान बेचे के जी-तोड़ कोशिश करत बाड़े बाकिर अंत में उनुकर साहस जवाब दे देता आ दलालन के हाथे कम दाम पर धान देके उनुका घरे लवटे के परत बा।

'सटल घर, फरक जिनिगी' कहानी में शहरी जीवन के मतलबी लोग अगन पर फोकस बा। आदमी की संवेदना कवन तरह घाट रहल बा ई कहानी में देखल जा सकेला। 'ठोकर' कहानी में रामअसरे कमालू का चक्रव्यूह में फंस जात बाड़े आ उनुका मजिगर ठोकर लागत बा। उ फेर चोरी ना करे के प्रण करत बाड़े। कहानी हर तरह से समाज-सुधारक नजरिया से कसल बिया।

'शिवाजी के समय' कहानी में लोकतंत्र में नियम बनाकर खुद तूरे वाला विधायक जी के कहानी बा। एमा नियम पर चले वाला दरवान के करारी हार होता आ एकरा से अधीनस्थ कर्मचारीन पर नेतन के दबंगई के ओर स्पष्ट संदेश जाता। 'नया संसार' कहानी के आफत-विपत के मराल से बेबस यौवना पर समाज के गलत नजर के बढ़िया रेखांकन भइल बा। 'कुकुर के पोंछि' कहानी में गरीब लइकिन पर धानपशुन के आवारा लइकन के कुदृष्टि के दरसवाल गइल बा। प्रशासन भी कमजोर के आवेदन पर कम धेयान देला जवन कि सरासर गलत बा।

'गोहार' कहानी में वीर बलिदानी सोहन के बहादुरी के सनेशा बा आ उनुका माता आ पत्नी के विलपत पीड़ा इजहार बा। 'मन मानत नइखे'

कहानी धन लोभी समाज के चिट्ठा खोल के रख देत बिया। धन के लालच में लोग दूसरा के कोमल बच्चा के हत्या कर देत बा। न्याय में देरी के कुपरिणाम भी एह कहानी में साफ लउकत बा।

'चुनौती' कहानी में बेटी-विदाई, पतोह-सास संबंध, पति-पत्नी संबंध, भाभी-देवर संबंध, माता- पुत्र संबंध आदि के जियतरा संवेदना उमरल बा बाकिर एमा हर जगह एगो हास्य के पुट भी बा। एहसे ई कहानी अतिरिक्त रोचक हो गइल बिया। 'प्रायोजित बंद' कहानी में नेता का लइका के मनसोखई आ नेता लोग के गरीब जनता को गुमराह कके आपन राजनीति चमकावे पर फोकस परल बा। एमा प्रयाजित बंद के बढ़िया वर्णन बा।

'कामरेड का साँच' में कमनिष्टन के नेतागिरी आ सेवा का आड़ में अपना उल्लू सीधा करे के नीयत आ लोभी प्रवृत्ति के साफ दरसन हो रहल बा। कामरेडन के घटिया चाल - चरित्र एह कहानी में देखा जा सके ला।

'अन्हार के साँच' कहानी लेकिन के जनमते मारेवाला एगो क्रूर गांव के कहानी बिया। लइकिनके प्रति समाज में पनपत निर्दयता कतना भयावह बा ई कहानी में साफ लउकत बा। एह कहानी के अंत नारी-विद्रोह प्रतिशोध का साथ होता। एह तरी ई कहानी निष्ठुर समाज के आगाह सावधान भी कर रहल बिया।

'रिश्ता' कहानी में मजदूरन के नेतागिरी करेवालन के मजदूर विरोधी करतूत के वरनन बा। एकरा से उत्पादन पर असर त परते बा बाकिर जादा नुकसान मजदूर का रोजगार के हो रहल बा। 'उम्मीद' कहानी में घरेलू कलह के बड़ा जीवंत चित्र उकेरल गइल बा। नारी -हठ कि बड़ा सटीक जवाब एकर खासियत बा।

'खोंइछा' कहानी में कुंवर साहब के उदात्त चरित्र का दर्शन होता। नावही दुसाधी के आपन बढ़िया संस्कार आ काएदा के पालन करत देखि के कुंवर साहब इतना खुश होत बाड़े कि ओह पूरा इलाका के मालिकाना हक ओकरा के बहिन बना के उकरा खोंइछा में डाल देत बाड़े। एह कहानी में उच्च भारतीय मूल्यन से भरल संस्कार आ वेवहार के सहज दरसन हो रहल बा। बाकिर रचना के अइसन चारित्रिक उत्कर्ष कवनो रिलेशनशीप के महिमंडन करनेवाला पियक्कड़ का भी प्रगतिवादी कलमकार की बूता में नइखे। ओह लोग का त भारतीय समाज के लड़ाके, ओके नष्ट करें में आपन महानता बा। अइसन स्तरीय रचना खातिर लेखक के भी मां भारती के सच्चा सपूत आ आहार-विहार में खुद संस्कारी होखे के परी। हमरा कहे में इचको संकोच नइखे कि प्रख्यात कथाकार श्री अतुल मोहन प्रसाद मां भारती एगो अइसने सपूत कथाकार हवे। 'खोइछा' एह कहानी के सर्वश्रेष्ठ कहानी बिया।

'होटल का खर्च' में लइकन के साम्यवादी लुफुत आ गलत आचरण के अच्छे ढंग से परोसल बा। अइसन लोग का अपन हर अपराध के सही ठहरावे के कुतर्क बा। 'चरतल्ला' कहानी में पढ़ाई आ डिग्री के घटत इमेज के चर्चा भइल बा।

'चेहरा' कहानी में शहरन में गरीब मजदूर के दूत्कारे के आदत के सजीव चित्रण बा। भौतिक विकास आदमी के मानवीय संवेदना के तेजी से चबा रहल बा। धनपशु अपना हंकार में अतना मतंग हो गइल बा कि ऊ मजदूरन से जानवर अस बेवहार करे में आपन

बड़ाई समझ रहल बा।

'केकरा के कोसी' कहानी में ऑफिस प्रबंधक के मनमानी आ संवेदनहीनता के बड़ा बढ़िया चित्रण भइल बा। अधीनस्थ कर्मचारियन का भावना के ई लोग लतिया देवे में कवनो मोका खाली ना जाए देला।

'हथियार' समीक्ष्य संग्रह के आखरी कहानी ह। कहानी कला का नजर से ई एगो बढ़िया, कसल आ सफल कहानी ह। बालिका उत्थान आ नारी-सशक्तिकरण के दिशाई एगो बढ़िया कथानक एकर विशिष्टता बा। अपराध पर लगाम लगावे खातिर आ पुलिस प्रशासन के सुस्ती दूर करे खातिर पढ़निहार लइकी सरकार से मिलल साइकिल के हथियार बना देत बड़ीसन। साइकिल से सारा रोड जाम होता आ प्रशासन की नींद टूटत बा आ जाम सोरह आना अपन उद्देश्य में सफल होता।

कुल मिला के 'अन्हार के साँच' स संग्रह किस्सा कहानी सोद्देश्य बाड़ी सन। यथार्थ के धरातल पर बुनल सब छोट-बड़ कहिनियन के मिजाज आम जिनिगी के आपाधापी के आपन कलेवर में समेटले अपन चरम के प्राप्त कर रहल बा। कहानी कला का दृष्टि से कुछेक छोट कहानियन के छोड़ के अधिकांश कहानी पूर्ण सफल बाड़ी सन। कागज बढ़िया, छपाई सुंदर आ कभर आकर्षक बा। आशा ना पूरा विश्वास बा कि भोजपुरी साहित्य में एह कहानी-संग्रह के यथोचित सम्मान मिली। कहानीकार अतुल जी एह संग्रह के परोसे खातिर अशेष साधुवाद के पात्र बानी।

बक्सर / मो. 8825211125

पुस्तक का नाम : अन्हार के साँच
कहानीकार : श्री अतुल मोहन प्रसाद
प्रकाशक : अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना

किताबि : एक नजर में

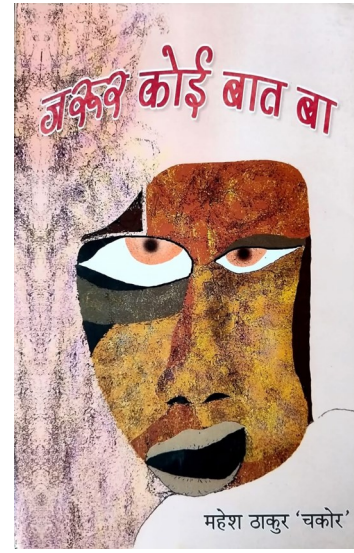

भोजपुरी भाषा में जवन मिठास, गहराई, मर्म तक पहुँचे के क्षमता आ संवेदना बाटे, ऊ अउर कहीं नइखे लउकत। चकोर जी के कविता ए तरह का संवेदना से लैस बाड़ी सन। इन्हनी में जीवन के हर रंग बाटे। 'जरूर कोई बात बा' संग्रह के कविता आज का समय अउर समाज से सीधा संवाद करतारी सन। 'जरूर कोई बात बा' गुमान काहे के, चुंगला, इनका राज, माटी के दुर्गा, अब का करो ई सरकार, बालम भइल मुखिया आदि कवितन में राजनीति आ सत्ता के विद्रूप चेहरा के साथे आज के मर रहल संवेदना पर भी चिंता जतावल गइल बा।

'कोयल के बोली बोलत बाटे कौवा,
जरूर कोई बात बा।
विचार करीं रउआ, जरूर कोई बात बा।।'

- हरिनारायण ठाकुर

पंकज तिवारी

'यादगार' यादगार किताब बनि के रही

वरिष्ठ कवि, साहित्यकार एवं समीक्षक कन्हैया सिंह 'सदय' के साहित्य से जुड़ाव विद्यार्थी जीवन से ही रहल पर शुरुआत हिंदी कहानी कविता से भइल आ कुछ बरिस बाद कुछ विशेष परिस्थिति आ कुछ विशेष लोगन से मुलाकात के बाद भोजपुरी ओर रुझान भइल अउर ऊ अइसन भइल कि जीवन के अभिन्न अंग हो गइल। 'सतुआ हमार नाम' शीर्षक से पहिल भोजपुरी कविता साधे वाला 'सदय जी' के पहिल कहानी के शीर्षको कुछ विशेष रहे जेकर नाम रहल 'अवघड़ बाबा'। इनकर कहनाम बा कि 'कहानी हमार सबसे प्रिय विधा रहल बिया। कहानी, जिनगी के ओह संवेदनशील संदर्भन के अभिव्यक्ति होले, जवना के आदमी, जीयेलें, भोगेंले आ महसूस करेंलें। 'सदय जी' के पढ़ला के ई हमार पहिला मौका रहल। अइसनो ना बा कि पहिले हम इहाँ के ना पढ़ले रहीं, बाकिर एक साथे 14 कहानी पढ़ला के मौका पहिल दफा मिलल रहे आ हम ई मौका गवाँवल मुनासिब ना समझनी। जेतना झटपट हो सकल, हम सब कहानी पढ़ गइनी आ साँच कहीं तऽ कुछ कहानी अइसनो रहल जवना के दू बार पढ़े के परल। एहसे आनंद में कवनो कमी ना आइल, पर कहानी के अउर करीब पहुँचे खातिर दुबारा पढ़ल बहुत जरूरी रहे।

'यादगार' के पहिल कहानी 'अंतर' में एगो झगड़ा के एतना सरल भाषा में राखल गइल बा कि ऊ झगड़ा, झगड़ा ना बाकिर प्रेम से कहल गइल बात हो गइल बा। एह कहानी में सबसे जरूरी बात ई रहल कि झगड़ा भइला का बादो अगर आदमी अपना गलती प विचार करे त ऊ झगड़ा समझौता में बदल जाई, एहमें दू राइ नइखे। शुरू में त कहानी बस झगड़ा भर लागल बाकिर कहानी का अंत में उषा अउरी सावित्री के संवाद, संवाद का बाद के चुप्पी अउरी सावित्री के आत्म संवाद के बेरा कहानी से उठल पर्दा पूरा कहानी के जान बाटे। "तूँ पप्पू के काहें ना मारेलू ?" एह प्रश्न का उत्तर में सावित्री के टालल बात आ फेरि ओकरे पीछे के कहानी जेकर अंतिम वाक्य रहे 'अंतर के कसक लोर बनके पप्पू के स्वेटर पर गिरे लागल रहे' आ माई आ दाई के बीच के फरक आ फरक में छिपल कराह, दरद, सावित्री से अलग केहू अउर का समझ सकेले; कहानी पढ़ला के बाद सावित्री के मान सम्मान पाठक का मन में कई गुना बढ़ गइल बा। एहिजा पाठक भगवान से एगो गुजारिश करे प विवश हो गइल बा कि हे भगवान, अइसन परिस्थिति केहू के सोझा जनि राखीं...कृपा करीं भगवान!

ओहिजे कहानी 'चरित्रहीन' के कुछ दृश्य बेल्कुल अजीब लागल या कहल जा सकेला कि विश्वास के लायक नइखे। कहानी अपना अंतिम समय तक एकतरफा चलत बिया, जवना में खाली सुनीते नजर आवतारी। कहानी का सब पात्रन प सुनीता भारी परतारी बाकिर पति पर आइल अइसन विपदा के समय सुनीता अउर डॉक्टर के बीच भइल क्रिया -कलाप आ रंगरेली के दृश्य हजम करे

लायक नइखे बुझात। बाकिर जो ई साँच घटना पर आधारित कहानी होई अउर अइसन भइल रहल होई त कहानी का अंत में पूछल प्रश्न के उत्तर दिहल आसान हो जाई। एह परिस्थिति में अइसन काम एगो चरित्रहीने क सकेला। कहानी में कहीं न कहीं सुरेश आ उनुकर परिवार भी एह पूरा घटनाक्रम के जिम्मेदार बाटे, जवन सुरेश का बेमारी के बात सुनीता से छुपावल गइल रहे चरित्रहीनता के बढ़ावा देवे खातिर। एक बात ईहो हो सकेला कि जब डाक्टर का मुँह से सुरेश के पहिले के बेमारी का बारे में सुनीता सुनलसि त ओकरा जोर से गुस्सा आइल होखे सुरेश आ ओकरा परिवार वालन प, जेकर बदला ऊ आपन चरित्र गिरा देबे खातिर तैयार खड़ा डाक्टर का सङे खेलि के लेबे के चाह लेले होई आ उहाँ से बाहर अइला का बाद सुरेश के मुअला का खबर प कुलि गुस्सा डाक्टर रमेश के मथ्थे मढ़ि के अपना के पाक-साफ सिद्ध करे का प्रयास में एतना बड़ परपंच रचलसि। बाकिर कहानी का अंत में आइल ई प्रश्न ओकरा खातिर एतना कठिन नइखे, जे पूरा कहानी पढ़ले होई। ऊ ई सब जान जाई कि आखिर कहानी में चरित्रहीन के बा।

एह किताब के एगो कहानी बिया- 'झील'। जइसन कि शीर्षके से लउकता कि केतना मनोरम दृश्य होई एह कहानी में। सचमुच प्रकृति के मनोरम दृश्य उकेरल गइल बिया एह कहानी में। शब्द-शब्द का साथे बहत प्रकृति के गीत जंगल, पहाड़, तलाब, नहर आ पेड़न का बीच से छनि के आवत झुरुर-झुरुर हवा, छाँव-धूप का बीच के मजइत खेल, पगडंडी पर के पैदल यात्रा- कुलि मिलाके अगर कहल जाव कि इहाँ तक ई कहानी पूरा के पूरा प्रकृति के अइसन बड़हन बखान हटे कि इहवाँ एक बेरि घूमे के इच्छा मन में प्रबल हो गइल पर हाय! ...असली कहानी त अबहीं ले शुरुए ना भइल रहे। निशांत अउरी कैरी के मिलन के घटना आ निशांत प भरोसा कइला के बाद कैरी के काम प जाए के घटना तक भी कहानी कवनो बड़ बखेड़ा वाली कहानी के बोझ से बचल रही बाकिर लखना के करम... ना-ना कुकरम के चलते कहानी में एगो अइसन मोड़ भी आ गइल, जवन समाज खातिर हमेशा से एगो सराप रहल बा। लखना का साथे जवन भइल ऊ त समय का हिसाब से सहजे कहाई, अइसन लोग का सङे अइसने होला, बाकिर अब ऊ चाहे कैरी कइलस भा केहू अउर, गलती निशांत के त ना कहाई नू! बाकिर मन में चलत द्वंद्व का चलते ऊ बियाह के जवन कदम एतना दिन बाद के बाद उठवलस, जो पहिलहीं उठावे के प्रयास कइल रहित त साइत कैरी भी बच गइल रहित आ लाखन के कानून सजा दिहित। अंत में निशांत के त्यागपत्र दिहला का बाद उहाँ से भाग जाए के घटना उनुका भीतर छिपल डर के परिणाम रहे, जे अंतिम समय में उनका के भी कटघरा में खड़ा कइ दिहलस। एगो निछाँछ सरल आ विनम्र सुभाव के लइकी परिस्थिति बस एतना क्रूर हो जाले, ई समाजे के काम कहल जाई। काश! अइसन घटना प बिराम लागित!

कहानी 'दलदल' में बस्ते वाले प्रेम के सोझा रिस्ते वाला प्रेम यानी दादी के प्रेम भारी पड़ गइल बिया आ बाँचि गइल बिया एक बिटिया दलदल में फँसे से, पर कहानी के ताना-बाना के बीच दादी के गइल जान खातिर ऊ बिटिया अपना के कभो माफ ना क सकी। एह उमिर में अइसन गलती काहें करेला लोग ? काहें ना सुने चाहेलन अपना से

बड़ के बात ? काहें अनुभवी लोगन के बात ठुकरा के ऊ चार दिन के इयार के बात ना मिटे वाली लकीर मान लेवेले ? कुल मिलाके ई कहानी आँख खोले खातिर काफी बा बाकिर जे जान के गांधारी बनल चाहत होखे ओकरा पर त कवनो चोट के कवनो प्रभाव ना परी। कहानी में बिटिया के सफलता का पीछे ओकरा दादी के बड़हन कुर्बानी छिपल बिया, बिटिया के सही रहता पर ले आवे में रामायन के भी बड़हन भूमिका बा।

'पुनरावृति' कहानी में भलहीं कइयो जगह उतार-चढ़ाव रहल, कइयो जगह एक दूसरा के गलत देखावे के बात रहल, पाठको के मन बीच-बीच में भँवरजाल में फँसि जात रहे बाकिर कहानी के अंत पूरा कहानी पर भारी रहे। पुनरावृति एहू रूप में हो सकेला ई बहुत बड़ बात रहे आ अगर हम केहू खातिर बबूल ना बोअब त हमरो खातिर हमेशा आमे के फल मिली ना कि बबूल के। कहानी के अंत में दुनू दोस्त के समझदारी आ विस्वास पूरा कहानी पर भारी पड़ि गइल बा आ अइसन बिसम परिस्थिति में भी एगो नीमन राह निकल सकेले, ई लंबा पाठ पढ़ा गइल ई कहानी। समझदारी हर मुश्किल काम के आसान कइ देले, ई बात सीखे के मिलल बा एह कहानी में। कहानी 'नजरबंद' भी बहुत बढ़िया कहानी बनल बिया बाकिर कहानी के अंत थोड़ा गड़बड़ लागत बा। एहमें थोड़ा अउर काम माङत रहे, कुछ अजीब लागत बा कहानी के अंत।

"नैतिकता से कटुता के अंत होला आ प्यार से नफरत के। प्यार पूरा पूरी जागरूकता के नाँव ह। शिक्षा आ संस्कार से जागरूकता आवेले। हम अपना बड़-बुजुर्ग के सम्मान करींले... कुल-परिवार से प्यार करींले...आ जे प्यार आ सम्मान करेला, ऊ कबो गाली ना देला। गाली, अहंकार के प्रदर्शन ह... दमित भावन के छद्म संतुष्टि ह। ई आदमी के विवेकहीन बना देले।" एतना बड़हन बिचार भा कहि सकत बानी एगो प्रबल दार्शनिक पक्ष के माध्यम से एह कहानी में बहुत बड़ बात कइल गइल बा जवना के नाम बा 'बदलाव संभव'। कन्हैया सिंह 'सदय' के लिखल लगभग हर कहानियन में जवन एक बात हमरा मिलल बा, ऊ ई बा कि जहाँ तक हो सकेला हमनी के आपन गलती पर विचार जरूर करे के चाहीं। अगर हम अपना गलती प विचार करेके प्रयास करब त निश्चे केतनो बड़ मुश्किल के समाधान पल भर में हो जाई आ समाधान एगो प्रबल समाज के बनावे में मदद कर सकेला। संग्रह के लगभग हर कहानियन में सकारात्मक पक्ष के बात भइल बा, ना कि नकारात्मक पक्ष के, जवन आज का समय में बहुत जरूरी बा।

कहानी 'यादगार', जेकरा नाम पर एह किताब के नाँव धराइल बा ऊ एतना धारदार आ जानदार बन गइल बा कि जनि कहीं। बेटा अउर बिटिया के लेइके जवन भरम समाज में पसरल बा, ओह विषय पर लेखक के धारदार कलम चलालि बा। कहानी का अंत में आनंद के बिटिया द्वारा कइल गइल काम वाकई यादगार बन गइल बा।

कहानी 'बैसाखी के आँख' आ 'भूल चूक क्षमा'- दुनहू संदेशपरक कहानी बाड़ी सन। आपन अपने होला। तमाम लांछन लगला का बादो, ससुर के छोड़ि गइला का बाद अचानक बिसम परिस्थिति में फेरि अपने घर वापिस आके बाबूजी के पैर लगे माथ नवाके आपन गलती मानि लिहला के बाद बाबूजी के सनेह आपन पतोहू आ नाती पर देखि के सनेह के परिभाषा समझ में आ गइल आ कहानी अपना शीर्षक के सार्थक करे में सफल रहल।

'यादगार' कहानी संग्रह के लगभग कुल्हि कहानी एक से बढ़के एक बाड़ी सन। एहमें प्रयुक्त एक-एक शब्द पाठक के अपना ओर खींचे में सफल बाटे। अइसन किताब कबो-कबो आवेले, जेकर सार्थकता असंदिग्ध होले।

संपर्क- 9264903459 (दिल्ली)

दीप कुमार 'दीप'

दीप शलभ : एकतरफा प्यार के प्रबंध काव्य

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कलम के जादूगर मार्कण्डेय शारदेय जी का 'दीप शलभ' भोजपुरी प्रबंध-काव्य में प्राकृतिक सौंदर्य, रूप सौंदर्य, श्रृंगार आ प्रेम प्रसंग में प्रेमालाप, विरह, वीरादि रस प्रचुरता से भरल बा। एह काव्य का शुरुआत में प्राकृतिक सौंदर्य के जवन चित्रण कइल गइल बा, भोजपुरी साहित्य में ऊ सचमुच एगो नया चीज बा। काव्य का प्रेम प्रसंग में प्रेमालाप का माध्यम से एगो प्रेमी के एकतरफा प्यार के मनोभाव आ मनोदशा के जवना तरे उकेरल गइल बा, ऊ रचना के सजीव बना देता।

युवा नायक सुरनाथ शर्मा गयासुवेग के बेटी मेहरुन्निसा के पढ़ावे जाता। दूनों के उमिर में ज्यादा के अंतर नइखे। नायक; नायिका-शिष्या के रूप आ यौवन पर आसक्त हो जाता। बाकिर हमेशा तड़पत बा प्यार पावे खातिर। पहिला सर्ग में

परिमल लेके इठलात पवन
आइल आके ढरके लागल
चकवा-चकई के जुड़ल नेह
प्रिय-प्रिया बिना दरके लागल...." से कुछ -कुछ बुझाए लागता कि काव्य-कथा के प्रवाह केने जाई। नायिका के आकर्षक रूप-यौवन के बखान में दूसरा सर्ग के पंक्ति

"रूप सुधा के पान करे के
सभ आतुर हो जाला।
एको बेर परल दृग जेकर
ऊ सुध-बुध खो जाला।" जइसन अनेक पंक्ति बाड़ी स, जवन एगो युवा चित्त के झकझोर देबे में बिलकुल सक्षम बा।

गुरू आ शिष्य- दूनो के कइसन होखे के चाहीं, ओकरो परतोख एह पंक्तियन में (एही सर्ग में) स्पष्ट लउकत बा-

जइसन पात्र रहेला तइसन
द्रव पदार्थ हो जाला।
जतना ज्ञान पियासल चेला
ओतने ज्ञान दियाला।
गुरु-द्रव के ना दोष, दोष बा
शिष्य पात्र के मानी।
बलथर में सुबहित खेती
ना हो पाई ई जानी।।

गुरु अपना समझ से प्रेम के जीयल-जागल सच्चा ज्ञान देबे के प्रयास करत रह गइल बाकिर शिष्य ओइसन होखे तब नू ! ई साफ आगे के सर्गन में वर्णित बा। असहीं काव्य के हर पंक्ति मानस से बहुत कुछ कह जात बिया, सिखा जात बिया, सोचे पर बाध्य कर जात बिया।

तीसरा सर्ग में गुरु रूप में नायक प्रेमालाप के जरिए हृदय के बहुते बात बतावता-सुनावता किन्तु शिष्या नायिका नइखे ग्रहण करत। ओकरा विचारन के अपना मधुर बानी से काट देबे में लाग जातिया। नायक सुरनाथ शर्मा जब ओहिजा से जाए लागता, तब नायिका मेहरुन्निसा के दिल कचोट जाता। अइसन बुझाता कि ऊ लोक भय से त्रस्त प्रेम समर्थन के मनोभाव व्यक्त ना करके अंगूठी देत बिया।

जानि गइली बाड़े सम्भ्रांत,
न रुकिहें निज मुद्रिका निकाल।
थमावत बिनवत कहली मान्य
अंगुली में लीहीं डाल।
पास कुछ अभी न बा उपहार

के तरे गुरु दक्षिणा दियाउ
ग्रहण एके करिके कृतकृत्य,
आज शिष्या के बना दियाउ।।

मेहरुन्निसा के पिता गयासुवेग आपन बेटी के पढ़ावे के नियुक्त विद्वान गुरु सुरनाथ शर्मा के वापस जाए के कारण बिना जनले -समझले उपहार देके ससम्मान विदा करत बाड़े। ई बहुते अनूठा बात बा चौथा सर्ग में। काव्य कला में साहित्यिक चातुर्य परिलक्षित होता।

पाँचवा सर्ग में मेहरुन्निसा आ सलीम के बीच प्यार फुलाए लागता किन्तु अकबर अउर गयासुवेग द्वारा नायिका मेहर के शादी शेर खाँ के साथ कइ दियाता। इहाँ एक बार फिर प्रीत के डोरी टूट जात बिया। नायक सुरनाथ शर्मा के मनःसंताप आ विचारन के उपद्रव छठा सर्ग में सहजता के साथ देखे के मिल जाता। भले ही धनपजा (मेहरुन्निसा) से विदा हो गइल बाकिर सपनो में
अमरूकशतक धनपजा लेले रही पढ़े के
सुरनाथ जा विरजलें लगलें अरथ बतावे।
कहते-सुनत उभय में संवेदना फफाइल
अँइठन समग्र तन में मनुहार गीत गावे।
ओकर लगाव नइखे बिसरल।

बाकिर सातवाँ सर्ग में एकदम नायक सुरनाथ के धैयवान के रूप आइल बा रचना में। ऊ सूतल शेर खाँ के हत्या करेवालन के साथ ओकर पलंग तक पहुँचता आ अपना उपदेशात्मक बानी से ओन्हनी के हत्या करे से रोकता तले शेर खाँ के नींद टूट जात बिया। ऊ अपना तलवार से हत्या करेवालन के कत्ल कर देता। दुबकल सुरनाथ पर जब ओकर नजर पड़ता तब ओकरा से ऊ उहँवा तक आवे के उद्देश्य पूछता मगर सुरनाथ सिर्फ इहे कहता कि हम सजग करे खातिर ओहनी के साथ आइल बानी। अब प्रश्न ई उठत बा कि का नायक सिर्फ एही खातिर आइल रहे ? पंक्ति देखल जाव-

मेहरुन्निसा उनुकरा
हिरदय में जब समइली,
तब से शरीर उनुकर
पचकत गइल सदाही
विद्या-विवेक के तऽ
गठरी कहीं लुटाइल
लउकत न प्राप्ति सम्भव
अइसन विपत्ति व्यापी।।

एकरा से त बुझाता कि संन्यास लेबे से पहिले अंतिम बार मेहरुन्निसा के दर्शन करे भी ऊ गइल होखी। ओकर अधीरता आ प्रवृत्ति, जइसन कि घटनाक्रम से भी लागता, फिर भी ओह पहलू के जिक्र शेर खाँ भा मेहरुन्निसा के सोझा ओकरा मुँह से एह सर्ग में नइखे व्यक्त करावल गइल। एह से ई एगो आशिक खातिर प्रेरणापूर्ण बात बिया। सम्पूर्ण प्रबंध काव्य में साहित्यिक-कला के खूब निखार भइल बा।

वार्ड-21, डुमराँव-802119 जिला-बक्सर (बिहार)

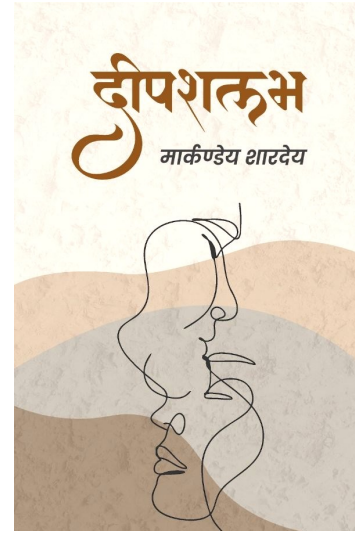

भोजपुरी के विश्वकोश पंडित गणेश चौबे : एगो बहुमूल्य कृति

भोजपुरी के विश्वकोश पंडित गणेश चौबे
लेखक : डॉ. बिक्रम कुमार सिंह
प्रकाशक : हर्फ़ पब्लिकेशन
प्लॉट नं. 3/436, दुग्गल एन्क्लेव, ओल्ड पालम रोड, द्वारका सेक्टर-15,नयी दिल्ली-58
प्रथम संस्करण: 2020 मूल्य: ₹ 200

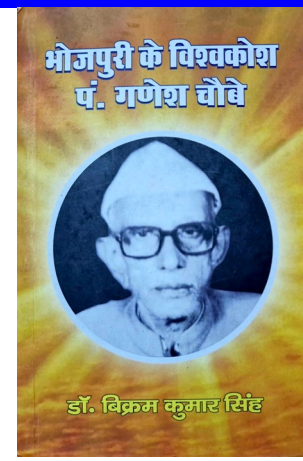

डॉ. बिक्रम कुमार सिंह,भोजपुरी विषय से एम.ए. आ पी-एच.डी. कइके अध्यापन कार्य में संलग्न बाड़ें। इनकर शोध प्रबंध के विषय "लोक साहित्य विषयक अध्ययन, अनुसंधान, संग्रह आ संपादन कार्य में पं. गणेश चौबे के योगदान" बाटे, जवन 'भोजपुरी के विश्वकोश पंडित गणेश चौबे' नाम से प्रकाशित भइल बा।

एह शोध ग्रन्थ का पहिलका अध्याय में विषय प्रवेश का सङहीं अध्ययन के आधार भी बतावल गइल बा।

दोसरा अध्याय में पं. गणेश चौबे के जीवन वृत्त, जन्म, शिक्षा, पेशा अथवा वृत्ति, स्वाध्याय आ संग्रह, संस्थागत सम्बंध भा व्यक्ति संबंध वर्णित बाटे।

तीसरा अध्याय में पं. गणेश चौबे के लोक साहित्य आ शिष्ट साहित्य विषयक लेखन आ संपादन कार्य पर प्रकाश डालल गइल बा।

चउथा अध्याय में पं. गणेश चौबे के लोक गीत विषयक लेखन, संग्रह आ संपादन कार्य के विश्लेषण कइल गइल बा।

पाँचवा अध्याय में पं. गणेश चौबे के लोकगीत से इतर लोक साहित्य-लोकवार्त्ता विषयक लेखन, संग्रह आ संपादन कार्य के विश्लेषण कइल गइल बा।

छठवा अध्याय में लोक साहित्य से इतर कोश, ग्रंथ-सूची, साहित्यिक आ समीक्षात्मक लेखन कार्य के विश्लेषण लउकता।

सातवाँ अध्याय में उपसंहार से लेखन सम्बंधी कार्य के सम्पूर्णता प्रदान कइल गइल बा। परिशिष्ट शीर्षक का अंतर्गत सहायक ग्रंथ सूची अउर संदर्भित पत्र-पत्रिकन के सूची शोध कार्य को पारदर्शी बनावतिया।

चौबे जी पर शोध करत खा लेखक के जवन अनुभव भइल ऊ भूमिका में लिखतारे-
शोध के क्रम में ई परिपुष्ट भइल कि चौबे जी लोक साहित्य के विविध तत्त्वन के संग्रहकर्त्ता रहीं। उहाँ के पास हजारन लोकगीतन के संग्रह, सैकड़न लोककथा के संग्रह, सैकड़न कहावत, पहेली आ मुहावरा के संग्रह रहे। चौबे जी के सैकड़न लेख एह सब विषय पर छपल बा, जे लोक साहित्य का सौन्दर्य के अपना आलोचना के माध्यम से दुनिया के सामने परोसले बानी आ दुनिया में

लोकरंग के सौन्दर्यशास्त्री के रूप में प्रतिष्ठित भइलीं। चौबे जी के लेखन हिन्दी, अंग्रेजी आ भोजपुरी तीनों भाषा में भइल बा। चौबे के ग्रंथ सूची आ शब्द कोश त मानक बड़ले बा, भोजपुरी आ हिन्दी के शिष्ट साहित्य लेखन भी मानक आ स्तरीय बा। चौबे जी के बड़हन-बड़हन साहित्यकार विद्वान आ समाजसेवी लोग से सम्पर्क भर ना रहे, बल्कि ओह लोग के जीवन संस्मरण भी लिखले बानी आ ओह लोग के साहित्यिक आ भाषायी विचार के ऊपर आलोचकीय टिप्पणी भी कइले बानी। चौबे जी ग्रंथ के समीक्षा आ भूमिको लिखले बानी। चौबे जी के लेखन आ संग्रह कार्य एतना विस्तृत बा, उहाँ के द्वारा धारित पद आ सम्मान आ पुरस्कार उहाँ पर एक ना, कई शोध आ अनुसंधान के अपेक्षा राखत बा। (भूमिका में से)

- सीमा मिश्र

सँझवत के आठवाँ अंक एगो लंबा अंतराल के बाद आ रहल बा। एह दौरान हमनीं का बीच से कई गो साहित्यिक विभूति अनंत यात्रा पर चलि गइल बानी।

सँझवत परिवार उहाँ सभ का प्रति सादर नमन निवेदित करत श्रद्धांजलि अर्पित करत बा।

किताबि : एक नजर में

भोजपुरी कविता : रुचि आ रचाव
सुनील कुमार पाठक
प्रकाशक : भोजपुरी प्रकाशन, जे-49, गली नं.-38, राजापुरी उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
पहिलका संस्करण : 2025, पृष्ठ 248,
मूल्य : ₹ 349.00

'पढ़त-लिखत' (2024) के परम्परे में अब ई किताब 'भोजपुरी कविता : रुचि आ रचाव' हाजिर करे में लगभग एक साल लाग गइल। ई परम्परा आगहूँ कम से कम आउरो दू-तीन गो किताबन तक तऽ जारी राखे के पड़ी ताकि भोजपुरी कविता पर बतकही कुछ ठोस तरीका से सही आ सार्थक रूप में हो सके। अपना भोजपुरी समीक्षा के एह किताबन के जरिये भोजपुरी कविता के ना हम कवनों इतिहास लिखे के कोसिस कर रहल बानीं ना सगरी महत्वपूर्ण कवियन पर आपन बात राखे के दावा कर रहल बानीं। मगर एह किताब-रचना का पीछे हमार ई प्रयास जरूर रहल बा कि भोजपुरी कविता के रुचि (कथ्य) आ ओकरा रचाव (शिल्प) पर तनिका मजिगर ढंग से बात-बतकही होखो। (लेखक का 'आपन बात' से)

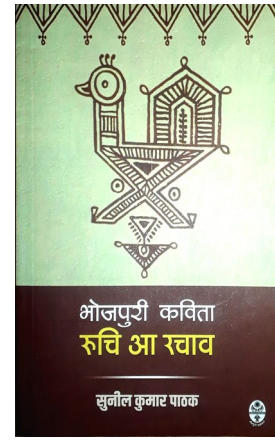

पुस्तक समीक्षा

पं० मिथिलेश चतुर्वेदी उर्फ देहाती पंडित

समाज का विसंगतियन प पारखी नजर

भोजपुरी आ हिंदी भाषा के मिक्स करि के, ऊहो व्यंग्य का मशाला में पाग के पाठकन के सामने प्रस्तुत कइल केवनो साधारण काम नइखे। जेमे 'गइनी खाये भोज' नामक व्यंग्य पुस्तक आपन मूर्तरूप में आइल बा, ओमे डॉ० ओम प्रकाश केसरी 'पवननन्दन' सफल होत नजर आ रहल बानी।

सब आपन मातृभाषा से जुड़ाव चाहेला, साथे अपटुडेट रहल भी जरूरी बा। ओह स्थिति में अपना के निखारे बदे 50-50 जमाना से 20-20 जमाना में ई बात क लेखक समझ गइल बाड़न ?

कहीं गुरू-चेला के मत्स्य न्याय प समझल-समझावल जाता त कहीं नाक खातिर बर्बाद होखे से बचे के सलाह दिहल जाता। खैर, आजकल मुँहछोपनी मास्क के महत्त्व दरसा के लेखक सामाजिकता निभावे के प्रयास जरूर करत नजर आ रहल बाड़न। 'नौकर' रचना में मोबाइल प बढ़त निर्भरता के मजबूरी दरसावल जा रहल बा, ओकर खूबी आ खामी के स्वीकार कइल जा रहल बा। सुविधा शुल्क के चर्चा भी समीचीन बा। बगैर ए शुल्क के केवनो काम हाथी नियन चल सकेला बाकिर धरातल प आवे में दीर्घसूत्री बन जाला। वी आइ पी ... चुप नहीं रहेंगे, इनभेस्टमेंट आदि सब हिंदी व्यंग्य रचना समाज का विसंगतियन प पारखी नजर बा ।

लेखक अपने करोना काल के भरपूर फायदा उठावत पाठकन के थोबड़ा प चार के पहाड़ा वाला हँसी दौड़ा रहल

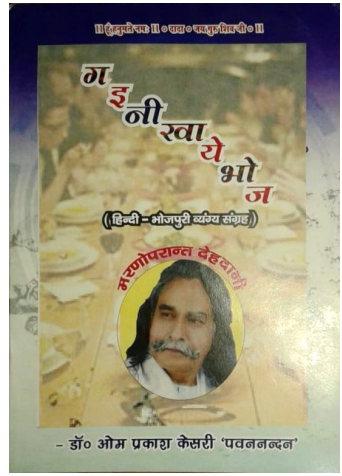

लेखक अपने करोना काल के भरपूर फायदा उठावत पाठकन के थोबड़ा प चार के पहाड़ा वाला हँसी दौड़ा रहल बाड़न, ओहमें सफलता भी हासिल होखल बा।

मिला-जुला के एक बात स्पष्ट होत नजर आ रहल बा कि व्यंग्य की दिशा में ई पुस्तक आपन स्थान बनाई आ पाठकन का दिल में बसके कई प्रकार के अइसन व्यंग्य रचना तैयार करे में लेखक का कलम के प्रेरित करी।

लेखक के असाधारण व्यक्तित्व एह में आपन भरपूर योग दे रहल बा। लेखक लगभग पूरा देश में साहित्यिक क्षेत्र विकसित करत नजर आ रहल बाड़न। उनकर एही तरे कलम में युवापन निखर के सामने आवे।

शिवपुरी, बक्सर, बिहार पिन 802101
मो. 8210665989

बक्सर, आरा, रोहतास (बिहार), गाजीपुर, बलिया (उत्तर प्रदेश) और दूर दराज के लोगों में अपनी चिकित्सा के लिए लोकप्रिय डॉ. सुरेश कुमार शर्मा संगीत क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। आप हिंदी और भोजपुरी के प्रतिष्ठित मधुर गायक हैं।

बक्सर के कृष्णा शर्मा बताते हैं कि आरोग्य चिकित्सालय आयुर्वेद सेवा आश्रम, बड़कागाँव (मिश्रवलिया), बक्सर के निदेशक डॉ. सुरेश कुमार शर्मा से ही उपयुक्त चिकित्सा और निर्देश पाकर मैंने स्वास्थ्य लाभ किया जबकि इससे पहले कई अस्पतालों से वापस आकर निराश था।

राजपुर परसनपाह के पूर्व मुखिया श्री निर्मल यादव का कई दिनों से घुटनों के असहनीय दर्द के कारण कहीं आना-जाना मुश्किल हो गया था, परंतु डॉ. साहब द्वारा उनका ऐसा आयुर्वेदिक इलाज किया गया कि एक चमत्कार की तरह उनका अपने पैरों से चलना-फिरना पुनः शुरू हो गया।

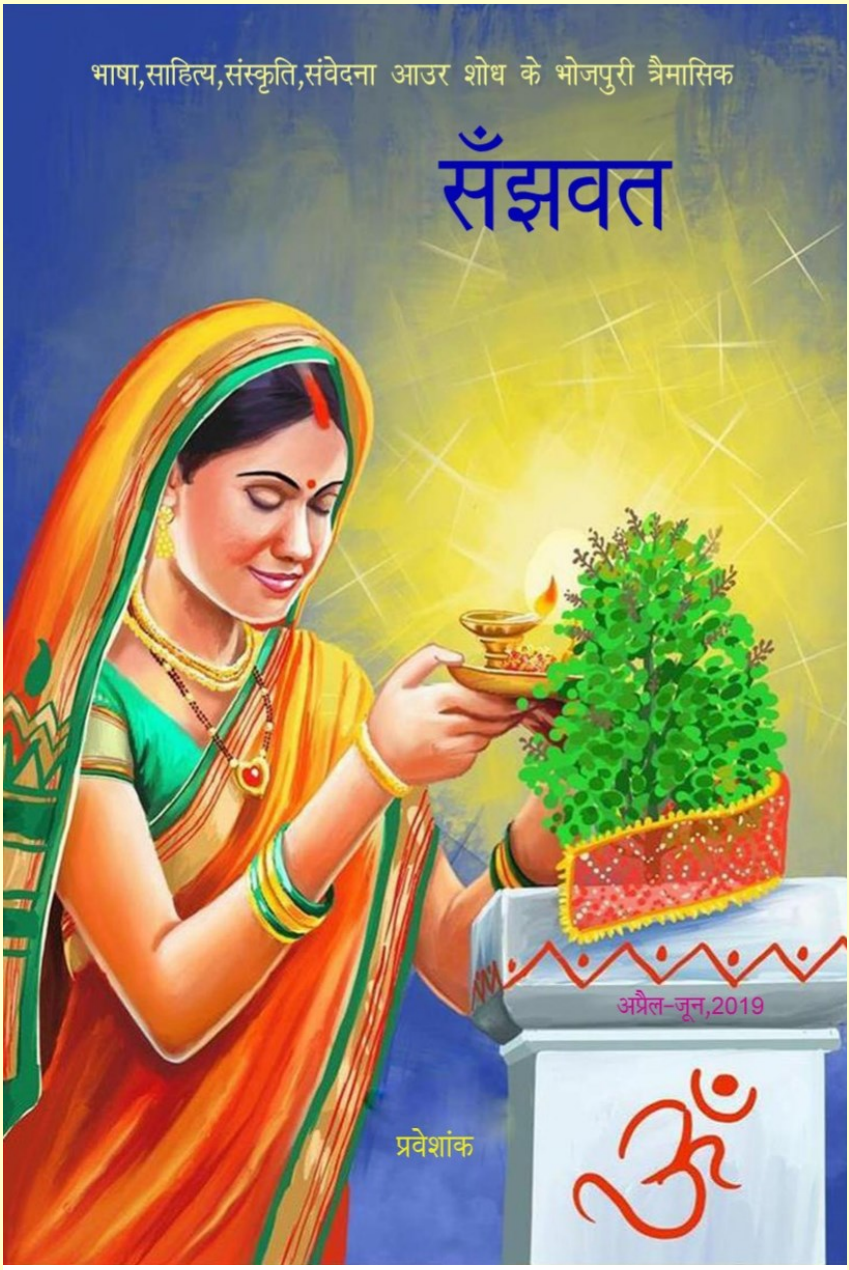

सँझवत का प्रवेशांक के
आवरण सज्जा : ओमप्रकाश अमृतांशु